



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 95]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अप्रैल 4, 2014/चैत्र 14, 1936

No. 95]

NEW DELHI, FRIDAY, APRIL 4, 2014/CHAITRA 14, 1936

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
(वाणिज्य विभाग)
(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 अप्रैल, 2014

अंतिम जांच परिणाम

विषय: यूरोपियन यूनियन (ईयू) और मैक्सिको से पीवीसी सस्पेंसन रेजिन के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच – अंतिम जांच परिणाम

14/1012/2012—डीजीएडी.—यतः, समय-समय पर यथासंशोधित, सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 और समय-समय पर यथासंशोधित, सीमाशुल्क प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) को यूरोपियन यूनियन (ईयू) और मैक्सिको (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) से पीवीसी सस्पेंसन रेजिन (जिसे एतदपश्चात संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए मैसर्स डीसीडब्ल्यू लिमिटेड ("डीसीडब्ल्यू"), कैम्प्लास्ट सन्मार लिमिटेड ("कैम्प्लास्ट"), डीसीएम श्रीराम कंसालिडेटेड लिमिटेड ("डीएससीएल") और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (रिलायंस) (जिन्हें एतदपश्चात याचिकाकर्ता या आवेदनकर्ता भी कहा गया है) से नियमों के अंतर्गत एक लिखित आवेदनपत्र प्राप्त हुआ है।

2. यतः, प्राधिकारी ने, घरेलू उद्योग की ओर से आवेदनकर्ता द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर, कथित पाटन की अवस्थिति, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने तथा पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने पर विचार करने के लिए संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में नियमावली के उप-नियम 6(1) के अनुसार पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 05 अक्टूबर, 2012 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।

प्रक्रिया

3. निम्नलिखित वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है :

- क. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात "प्राधिकारी" कहा गया है) को संबद्ध वस्तु के घरेलू उद्योग के रूप में डीसीडब्ल्यू लिमिटेड ("डीसीडब्ल्यू"), कैम्प्लास्ट सन्मार लिमिटेड ("कैम्प्लास्ट"), डीसीएम श्रीराम कंसालिडेटेड लिमिटेड ("डीएससीएल") और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ("रिलायंस") (जिन्हें एतदपश्चात "आवेदक" कहा गया है) से एक लिखित आवेदनपत्र प्राप्त हुआ है जिसमें यूरोपियन यूनियन और मैक्सिको (जिन्हें एतदपश्चात "संबद्ध देश" कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पालीविनायल क्लोराइड (पीवीसी) सस्पेन्सन ग्रेड रेजिन के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- ख. आवेदन की प्रारंभिक संवीक्षा करने पर कुछ कमियां व्यक्त हुईं जिन्हें आवेदनकर्ताओं द्वारा उत्तरवर्ती रूप से सुधार दिया गया। अतः, इस आवेदनपत्र को समुचित रूप से दस्तावेजों युक्त माना गया।
- ग. प्राधिकारी ने, आवेदनकर्ताओं द्वारा जांच की शुरुआत को औचित्यपूर्ण ठहराने के लिए प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के विरुद्ध जांच प्रारंभ करने का निश्चय किया।
- घ. प्राधिकारी ने जांच शुरुआत करने की प्रक्रिया से पहले पाटनरोधी नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार पाटन होने के आरोप की प्राप्ति के बारे में संबद्ध देशों के भारत स्थित दूतावासों को सूचना प्रेषित की।
- ङ. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच प्रारंभ करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में दिनांक 05 अक्टूबर, 2012 को प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना जारी की।
- च. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके विवरण आवेदनकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) और उद्योग एसोसिएशनों को प्रेषित की और उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।
- छ. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों को भी प्रेषित की और उन्हें इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया।
- ज. प्राधिकारी ने आवेदनपत्र के अगोपनीय पाठ की एक प्रति पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार संबद्ध देशों के सभी ज्ञात निर्यातकों तथा उनके भारत स्थित दूतावासों को प्रदान की। इस आवेदनपत्र की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी, अनुरोध करने पर, उपलब्ध कराई।
- झ. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संगत जानकारी उपलब्ध कराने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावलियां प्रेषित की :-

1.	पालिसिड एस.ए डि सी. बी एवी. ला. प्रेसो न. 8, कोल. लेजारो कॉडनास, सैन जुआन एक्सहुआटेपेक ट्लानीपैंटला, इंडो. डी. मैक्सिको 54180	2.	मैक्सिकेम रिओ सैन जैवियर नं. 10, फैक विवेरास डेल रिओ ट्लानीपैंटला, एस्टैने डि मैक्सिको
3.	नोविनको अर्पाटो नं. 1011, इक एस. मामेडे डि इन्फेस्य, 4466-951 साओ मामेडे डि इन्फेस्टा मैक्सिको	4.	विनायसेल रिओ सैन जैवियर नं. 10 फ्रैशिओनामीन्टो विवेरास डेल रिओ ट्लानीपैंटला, एस्टाडो डि मैक्सिको मैक्सिको, सी. पी. 54060
5.	इनिआस क्लोर विनायलस रनकार्न साइट. एचक्यू. साउथ पराडे रनकार्न, चिशायर, डब्ल्यू ए-74 जेई जर्मनी	6.	साइरेस एस. ए पी.ओ बॉक्स 20, सैमोक्विरो - एवान्का 3864-752 इस्टारेजा पुर्तगाल
7.	मोन्डो एसपीए पिआज्जाले ई. स्ट्राप्पिआना, 1 12051 अल्बा, फैज, गैल्लो- इटालिया	8.	आर्केमा 420 रुइ इस्टीन डि आर्वेस 92705 कोलोम्बेस सेडेक्स
9.	विन्नोलिट कार्ल - जिइस्स - रिंग 25 85737 इस्मानिंग, जर्मनी	10.	कैमिउरो एस. सी/कोसो 33, 4 ⁰ पीटीए 50003 जारागोजा
11.	साल्वे रूइ डि रान्सबीक 310-बी -1120, ब्रसेल्स -बेल्जियम		

- ज. इस जांच शुरुआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में यूरोपियन यूनियन और मैक्सिको के निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रत्युत्तर दिया :
- क. इनिआस क्लोर विनायलस, बेल्जियम एनवी, बेल्जियम
- ख. इनिआस विनायलस ड्यूशलैंड जीएम बीएच, जर्मनी
- ग. इनिआस विनायलस सेल्स जीएमबीएच, जर्मनी
- घ. इनिआस स्वैरिज ए बी. स्वीडन
- ङ. इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यूनाइटेड किंगडम
- च. मैक्सिकेम रेजिनास विनिलिकास, मैक्सिको
- छ. मैक्सिको सरकार
- ट. भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/उपभोक्ताओं को पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना उपलब्ध कराने के लिए प्रश्नावलियां भेजी गई :-

1.	शालिमार रेक्सीन इंडिया लिमिटेड प्रथम तल गुमाम चैम्बर्स, 67, गनेश पीठ, पुणे-411002 महाराष्ट्र	2.	फिनोलेक्स ग्रुप फिनोलेक्स ग्रुप डी-1/10, एमआईडीसी चिन्चवाड, पुणे
3.	दि सुप्रीम इंडस्ट्रीज	4.	कृष्णा विनायलस ग्रुप

	17/18, शाह इंडस्ट्रियल एस्टेट वीरा देसाई रोड, अंधेरी (पश्चिम) मुंबई-400053		बेलगांव ग्राम, बोइसर (पूर्व) मुंबई
5.	जैन इरिगेशन सिस्टम्स जैन हाउस, पुलिस कोर्ट लेन फोर्ट, मुंबई-400001	6.	प्रिंस ग्रुप प्रिंस आर्केड, सी-10, सेंचुरी रोड मारोल एमडीसी, अंधेरी मुंबई-400093
7.	कल्पना इंडस्ट्रीज 2/बी, प्रिस्टोना स्ट्रीट कोलकाता-700071	8.	कासमास कॉरपोरेशन जय गुरुदेव कॉम्प्लेक्स शाप नं. सी-4, भूतल, भिवांडी
9.	पालीट्रयुजन्स प्राइवेट लिमिटेड 1-बी, ग्लेनेडन प्लेस 813, पूनामल्ली हाई रोड किलपौक, चेन्नई-600010	10.	पालीकैब केबल्स प्राइवेट लिमिटेड हिकको हाउस, नार्थ विंग प्रथम तल, 771, पंडित सत्यालेकर मार्ग, माहिम, मुंबई-400016
11.	चन्द्रभाई ग्रुप नं. 58, भारतीसासन स्ट्रीट मुथ्लापेट, चेन्नई	12.	जे. पी. ग्रुप 4314/5, जय माता मार्ग त्रिनगर, नई दिल्ली-110035
13.	रॉयल कुशन विनायल प्रोडक्ट्स प्लॉट सं. 9, नेशनल एवेन्यू के पीछे आकृति रोड, मांडीवली (पूर्व) मुंबई-400001	14.	किशन ग्रुप टैक्स सेंटर के. विंग, तृतीय तल, 26-ए, चांदीवाल रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई-400059
15.	गोल्डेन ग्रुप ई-5, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110064	16.	प्रीमियर पालीफिल्म लिमिटेड 40/1ए, साइट-IV इंडस्ट्रियल एरिया साहिबाबाद गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
17.	बी. के. गांधी ग्रुप 10/60 इंडस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर, नई दिल्ली	18.	ओमेगा उद्योग 605, कृष्णा अपार्टमेंट, सेक्टर-18, नौएडा (उत्तर प्रदेश)
19.	फाइन फ्लो प्लास्टिक इंडस्ट्रीज 403, स्टील सेंटर अहमदाबाद रोड, कर्नाक बुंडेर, मस्जिद, मुंबई-400009	20.	कीर्ति इंडस्ट्रीज (इंडिया लिमिटेड) चेतक चैम्बर्स, 14, आर एन टी मार्ग, इंदौर, मध्य प्रदेश -45001
21.	सिग्नेट ओवरसीज लिमिटेड 114-116, ट्रेड हाउस, 14/3, साउथ तुकोगंज, इंदौर, मध्य प्रदेश	22.	बीके पालीकोट्स लिमिटेड फ्लैट सं. 70, 7वां तल, हंसालय बिल्डिंग, 15 बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली-110001
23.	एवान प्लास्टिक ग्रुप सं. 7/1, चौथा क्रॉस, पडारायनपुरा, मैसूर रोड क्रॉस, बंगलौर - 560026	24.	के एल जे ग्रुप के एल जे हाउस, राणा मार्ग, निकट कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110001
25.	कैप्रिहंस इंडिया लिमिटेड डी-ब्लॉक, शिवसागर, डा. एनी बेसेंट रोड,	26.	पार पेट्रोकेम लिमिटेड पेट्रो हाउस, 1206, प्रथम तल, बहादुरगढ़ रोड,

	वर्ली, मुंबई- 400018		दिल्ली
27.	सुधारकर ग्रुप बलराम टांडा, निकट इंडस्ट्रियल एस्टेट, सूर्या पेट, जिला नैगोंडा, आन्ध्र प्रदेश- 500001	28.	सुरेन्द्र कामर्शियल 14, रायड स्ट्रीट, कोलकाता
29.	एमएम प्लास्टिक, बिल्डिंग नं. 26/779, पंत नगर, घाटकोपर (पूर्व) मुंबई	30.	के. एस. प्लास्टिक 22ए, सदर बाजार, नई दिल्ली
31.	डीलक्स कारन इम्पोर्ट प्राइवेट लिमिटेड 321, सिद्धिविनायक हाउसिंग सोसायटी, भिवाण्डी	32.	आशु कैम्प्लास्ट शाप नं. 907, नेताजी सुभाष प्लेस, पी. पी. टावर, पीतमपुरा, नई दिल्ली -110034
33.	ड्युट्रान प्लास्टिक ड्युट्रान हाउस, मिठाखली अंडरब्रिज नवरंगपुरा अहमदाबाद, गुजरात – 380006	34.	परफिन्ट क्राफ्ट्स 16-ए/19, डब्ल्यूईए, अजमलखां रोड, करौल बाग, नई दिल्ली
35.	आदित्य इंडस्ट्रीज 5, खोसला क्रास लेन, प्रथम तल, निकट पैधोनी, मस्जिद बुडेर, मुंबई- 400003	36.	ज्वेल पालीमर्स सी-636, डी एस आई डी सी इंडस्ट्रियल एरिया, नरेला, दिल्ली
37.	फैंसी पालीमर्स प्राइवेट लिमिटेड सी-3, लोकल शापिंग सेंटर पश्चिमी मार्ग, वसंत विहार, नई दिल्ली- 110057	38.	वर्षा कॉरपोरेशन लिमिटेड ए/3-जी, मालाड इंडस्ट्रियल एस्टेट, मालाड, मुंबई
39.	मैक्स इम्पेक्स 30/44, गली नं. 7, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली	40.	ओरिप्लास्ट लि0 9/ए, वुड स्ट्रीट कोलकाता- 700016
41.	अमीशा विनायल्स प्राइवेट लिमिटेड ए-21, सीताराम बिल्डिंग, कोलकाता- 700016	42.	नौविले क्रेडिट्स प्राइवेट लिमिटेड 4316/17, तृतीय तल, सैनी मार्केट, नई दिल्ली
43.	डी. आर. पालीमर्स लिमिटेड सी-24, मानसरोवर गार्डन डी. आर. कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली – 110015	44.	सिन्टेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड प्लास्टिक डिवीजन, कालोक (एनजी) कालोल मेहसाणा, गुजरात
45.	सांखला इंडस्ट्रीज प्रथम तल, रेसकोर्स रोड, बंगलौर, कर्नाटक – 560001	46.	शांतिलाल महेन्द्र कुमार 23, गुरुकृपा अपार्टमेंट्स एच. सी. केलकर रोड, दादर, मुंबई

47. सैम पालीमर्स 115/4ए, विद्युत, निकट आर. बी. आई कालोनी, शालीमार बाग, नई दिल्ली	48. प्रकाश इंडस्ट्रीज निकट आईओसीएल डिपो ब्रिजवासन, नई दिल्ली – 110061
49. आर. एस. ओवरसीज प्राइवेट लिमिटेड एफ – 31, प्रथम तल, भगवंत सिंह मार्केट, 3003, बहादुरगढ़ रोड, नई दिल्ली	50. इन्काम केबल्स प्राइवेट लिमिटेड सी-46, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली
51. डायमंड पाइप्स एंड ट्यूब्स 7वां क्रास विल्सन गार्डन बंगलौर, कर्नाटक – 560027	52. चैतन्या इम्पोजेनिक्स चिकाल हाउस 146-बी, प्रिन्सेस स्ट्रीट मुंबई
53. तिरूपति ग्रुप प्लॉट नं. – 81, फंक्शन इंडस्ट्रियल एस्टेट पटपड़ गंज, नई दिल्ली -110092	54. अपोलो पाइप्स ए-90, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली- 110052
55. हैवेल्स इंडिया हैवेल्स इंडिया, ई-1, सेक्टर- 59, नौएडा (उत्तर प्रदेश)	56. ओसवाल केबल प्रोडक्ट्स लिमिटेड ए- 93/1, वजीरपुर ग्रुप इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली – 110052
57. मेघा इंडस्ट्री शाप नं. 9/96, शासिन गली, विश्वास नगर, दिल्ली-110052	58. एसोसिएटेड कैप्सूल्स लिमिटेड कल्पतरू सोसायटी 289-2, महात्मा फुले पेठ, टिम्बर मार्केट रोड, पुणे

- ठ. संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक/प्रयोक्ता ने जांच की कार्रवाई के दौरान प्रश्नावली के उत्तरों के रूप में उत्तर नहीं दिया है और इसलिए उन्हें इस जांच में असहयोगी माना गया है। तथापि, अन्य प्रयोक्ताओं और आयातकों अर्थात् मै. आईपीएमए, सांखला इंडस्ट्रीज, श्री इंटरनेशनल, पोली रेजिन्स और अन्य आयातकों से टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं।
- ड. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ की प्रतियां हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल के रूप में खुला रखा। वर्तमान जांच परिणाम में सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों को ध्यान में रखा है।
- ढ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना की गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां कहीं वांछित हुआ, गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया और उस सूचना को गोपनीय मान लिया तथा उसका अन्य हितबद्ध

पक्षकारों को प्रकटन नहीं किया। जहां कहीं संभव हुआ वहां, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दर्ज कराई गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय पाठ प्रदान कराएं।

- ण. आवेदनकर्ता तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों से आवश्यक समझी गई सीमा तक अन्य जानकारी की मांग भी की गई।
- त. गैर क्षतिकारी कीमत का निरूपण भारत में संबद्ध वस्तु की घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत उत्पादन लागत और उसे बनाने एवं उसकी बिक्री करने की लागत के आधार पर और सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार किया गया जिससे कि यह सुनिश्चयन हो सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- थ. यह जांच 01 अप्रैल, 2011 से प्रारंभ करके 31 मार्च, 2012 (पीओआई) की अवधि के लिए की गई। तथापि, क्षति विश्लेषण के संबंध में प्रवृत्तियों की जांच के लिए वर्ष 2008-09, 2009-10, 2010-11 और जांच की अवधि को शामिल किया गया।
- द. जांच की अवधि में अमरीकी डालर को भारतीय रूपयों में परिवर्तित करने के लिए सीमाशुल्क आंकड़ों के अनुसार 48.14/-रूपए प्रति अमरीकी डालर पर विचार किया गया है।
- ध. सम्बद्ध पाटनरोधी जांच पूरी करने और अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित करने के लिए केन्द्रीय सरकार ने 04 जनवरी, 2014 तक का समय विस्तार करने की अनुमति प्रदान की है।
- न. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने 20 दिसंबर, 2013 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को अवसर भी प्रदान किया। जिन पक्षकारों ने सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत किए थे उनसे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों में दिए गए तर्कों पर जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है।
- प. जांच अवधि और पूर्ववर्ती तीन वर्षों के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के व्यौरों की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से अनुरोध किया गया था जो प्राप्त हो गए थे।
- फ. उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है। निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों से प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं। प्राधिकारी द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम में इन टिप्पणियों की जांच की गई है।
 - क. इनिआस क्लोर विनायल्स, बेल्जियम एनवी, बेल्जियम
 - ख. इनिआस विनायल्स ड्यूशलैंड जीएम बीएच, जर्मनी
 - ग. इनिआस विनायल्स सेल्स जीएम बीएच, जर्मनी
 - घ. इनिआस स्वेरिज ए बी. स्वीडन
 - ङ. इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यूनाइटेड किंगडम
 - च. मैक्सिकेम रेजिनास विनिलिकास, मैक्सिको

- छ. घरेलू उद्योग
- ज. सांखला इंडस्ट्रीज
- झ. श्री इंटरनेशनल
- ञ. यूरोपियन यूनियन

ब. *** यह चिन्ह इस अंतिम जांच परिणाम में आवेदकों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

क. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

4. विचाराधीन उत्पाद विनायल क्लोराइड मोनोमर (सस्पेंशन ग्रेड) का होमोपालीमर है, जहां विभिन्न पालीमर श्रृंखलाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई नहीं होती हैं जो सीमाशुल्क वर्गीकरण संख्या 3904 के अंतर्गत आता है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद में कतिपय विशिष्ट प्रकार के पीवीसी सस्पेंशन रेजिनों जैसे क्रास-लिन्कड पीवीसी, क्लोरोनेटिड पीवीसी (सीपीवीसी), विनायल क्लोराइड - विनायल एसीटेट कोपालीमर (वीटी - वीएसी), पीवीसी पेस्ट रेजिन और पीवीसी ब्लेडिंग रेजिन शामिल नहीं हैं।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

5. आयातकों और प्रयोक्ताओं सहित कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि उच्च के मूल्य के सस्पेंशन रेजिन का विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है और इसलिए उसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा जाना चाहिए।

घरेलू उद्योग के विचार :

6. विचाराधीन उत्पाद के मुद्दे के संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं :-

- क. पीवीसी सस्पेंशन सर्वाधिक वर्सेटाइल थर्मोप्लास्टिक है, जिससे एक ओर अत्यधिक रिजिड (परिदृढ़) उत्पाद जैसे पाइप्स तथा अन्य उत्पाद बनाए जाते हैं, वहीं दूसरी ओर इससे अत्यधिक लोचशील उत्पाद जैसे कोमल चर्म के वस्त्र और लोचशील पदत्राणों का उत्पादन किया जाता है। यह सर्वाधिक उत्पादित एवं खपत किया जाने वाला प्लास्टिक रेजिन है। पीवीसी सस्पेंशन रेजिन का आधारभूत ढांचा (सी₂एच₃सीएल)_n है।
- ख. पालीमराइजेशन प्रक्रिया के जरिए, वीसीएम मोनोमर को विनायल पालीमर एक स्वच्छ दानेदार, सफेद पाउडर अर्थात् पीवीसी रेजिन में परिवर्तित किया जाता है। पालीमराइजेशन प्रक्रियाएं कई प्रकार की हैं अर्थात् 1) सस्पेंशन पालीमराइजेशन, 2) इमल्सन पालीमराइजेशन, 3) बल्कमास पालीमराइजेशन और 4) इमल्सन पालीमराइजेशन प्रक्रिया। विश्व के कुल पीवीसी उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत उत्पादन सस्पेंशन पालीमराइजेशन के जरिए होता है। विभिन्न प्रकार एक ही उत्पाद का उत्पादन करता है।
- ग. विचाराधीन उत्पाद के दायरे में केवल पालीविनायल क्लोराइड (पीवीसी) सस्पेंशन ग्रेड को ही कवर किया गया है। इस उत्पाद को सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 39 के अंतर्गत उपशीर्षक संख्या 3904.2110 के तहत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और यह इस जांच के दायरे में किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को वर्गीकरण 3904 के अंतर्गत आने वाले विचाराधीन उत्पाद के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करनी चाहिए।
- घ. पीवीसी का प्रयोग विभिन्न उत्पादों जैसे पाइप्स एवं जुड़नार, लोचशील होजेज, फिल्मस एवं शीट्स, बाटल्स, प्रोफाइल्स, तार एवं केबल्स, पदत्राण आदि का उत्पादन करने के लिए किया जाता है।

पीवीसी पाइप्स एवं जुड़नार का प्रयोग सिंचाई, पेयजल आपूर्ति, भवन निर्माण और सैनिकेशन, प्लम्बिंग, वर्षाजल ड्रिफ्टिंग, विद्युत वायरिंग को छुपाने के लिए कंड्यूटों के लिए किया जाता है। फिल्म/शीट्स का प्रयोग पैकेजिंग अनुप्रयोगों, वरसातियों, इंसुलेशन टेपों, मेजपोशों, लेखन सामग्री, इन्फ्लैटेबल खिलौनों, फोटो एल्बम, कालर बैंड्स, स्ट्रेच क्लिंग/स्ट्रेच रैप/ट्रिब्लिस्ट रैप फिल्म, बिल बोर्ड फिल्म तथा अन्य कई अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है। पीवीसी प्रोफाइल का प्रयोग मुख्यतः दरवाजों, खिड़कियों, पैनलों, पार्टिशन, फ्रेमों, कियोस्कों आदि में किया जाता है। पीवीसी का प्रयोग उन वायर एवं केबल्स में किया जाता है जिनका उपयोग मुख्यतः घरों में की जाने वाली वायरिंग, इलेक्ट्रिकल काइर्स और कम वोल्टेज के पावर केबल्स में किया जाता है।

- ड. आवेदनकर्ताओं द्वारा उत्पादित पीवीसी सस्पेंशन और संबद्ध देशों से आयातित पीवीसी सस्पेंशन कतिपय गुणधर्मों जैसे भौतिक एवं रसायनिक गुणधर्म, उत्पाद विशिष्टताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन के रूप में तुलनीय हैं और नियमों के आशय के अंतर्गत उसे समान वस्तु के रूप में माना जाना चाहिए।
- च. भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। आवेदनकर्ताओं द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं तकनीकी गुणधर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरणों के रूप में तुलनीय है। दोनों ही तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्तागण इनका प्रयोग अदल-बदलकर कर सकते हैं। अतः, आवेदनकर्ता प्रस्तुत करते हैं कि आवेदक कंपनियों द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों के आयातित संबद्ध वस्तु पाटनरोधी नियमावली के आशय के अंतर्गत समान वस्तुएं हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

7. विचाराधीन उत्पाद विनायल क्लोराइड मोनोमर (सस्पेंशन ग्रेड) का होमोपालीमर है, जहां विभिन्न पालीमर श्रृंखलाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई नहीं होती है जो सीमाशुल्क वर्गीकरण संख्या 3904 के अंतर्गत आता है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद में कतिपय विशिष्ट प्रकार के पीवीसी सस्पेंशन रेजिनों जैसे क्रास-लिन्कड पीवीसी, क्लोरोनेटिड पीवीसी (सीपीवीसी), विनायल क्लोराइड – विनायल एसीटेट कोपालीमर (वीटी – वीएसी), पीवीसी पेस्ट रेजिन और पीवीसी ब्लेडिंग रेजिन शामिल नहीं हैं।
8. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे की जांच विभिन्न स्रोतों से उत्पादों से संबंधित पिछले मामलों में विस्तारपूर्वक की गई है। वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद का दायरा वही है जो विगत जांच में विचाराधीन उत्पाद का दायरा था।
9. रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य दर्शाता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों का स्पष्टीकरण 3904 के अंतर्गत आने वाले विभिन्न वर्गीकरणों के अंतर्गत स्पष्ट किया गया है। चूंकि यह जांच उत्पाद विवरण के संबंध में है और यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है, इसलिए प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के आयातों के संबंध में जांच आयोजित की है और सीमाशुल्क वर्गीकरण को केवल सीमाशुल्क सुविधा के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है।
10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। दोनों ही भौतिक एवं तकनीकी गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोगों उत्पादन विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरणों के रूप में तुलनीय है। दोनों ही तकनीकी रूप में एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्तागण इनका प्रयोग अदल-बदलकर करते हैं। जहां तक कुछ उच्च के मूल्य के सस्पेंशन रेजिनों को बाहर रखने के बारे में कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि इस मुद्दे की विधिवत जांच पीवीसी सस्पेंशन रेजिन की पाटनरोधी जांच के अंतिम जांच परिणाम में की गई थी जिसे 26 दिसंबर, 2007 की अधिसूचना सं0 14/8/2006-डीजीएडी (अंतिम जांच परिणाम के पैरा 21 से 24 में) के तहत जारी किया गया

था। इसके अलावा, इन आयातकों ने ऐसा कोई तथ्यपरक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि उच्च के मूल्य के ये पीवीसी सस्पेंशन रेजिन संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु नहीं हैं। वस्तुतः यह नोट किया जाता है कि प्रयोक्ताओं और आयातकों सहित किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्राधिकारी को आयातक प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया है। जहां तक ऑफ ग्रेड के उत्पाद को समान उत्पाद न होने के कारण उसे बाहर रखे जाने के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि ऑफ ग्रेड की सामग्री में अलग भौतिक एवं तकनीकी विशेषताएं नहीं हैं। विनिर्माण प्रक्रिया, कच्ची सामग्री, कार्य एवं उपयोग, उत्पादन लागत, टैरिफ वर्गीकरण समान हैं। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए इन उत्पादों को समान वस्तु माना गया है और इन्हें पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ शामिल किया गया है।

11. प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आवेदनकर्ताओं द्वारा विनिर्मित उत्पाद संबद्ध देशों से भारत को आयात किए जा रहे विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है।

ख. घरेलू उद्योग का दायरा एवं आधार

12. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभाषित किया गया है :

"घरेलू उद्योग का आशय समान वस्तु के विनिर्माण और उससे संबंधित किसी अन्य क्रियाकलाप में लगे समग्र रूप से उन घरेलू उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का बड़ा हिस्सा बनता है, सिवाय इसके कि जब वे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा उनके स्वयं आयातक हों, ऐसे मामलों में वाक्यांश "घरेलू उद्योग का आशय शेष उत्पादकों के रूप में होगा।"

13. यह नोट किया जाता है कि यह आवेदनपत्र संबद्ध वस्तु के घरेलू उद्योग की ओर से डीसीडब्ल्यू, केम्प्लास्ट, डीएससीएल और रिलायंस द्वारा दायर की गई है। भारत में संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने वाला केवल एक अन्य उत्पादक अर्थात् फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड ("फिनोलेक्स") है जिसने इस याचिका का समर्थन किया है।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ता और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

14. यह अनुरोध किया गया है कि डी एस सी एल "घरेलू उद्योग" की परिभाषा के दायरे में नहीं आता है, इसलिए डीएससीएल को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए क्योंकि उक्त घरेलू उत्पादक ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का आयात किया था। प्रकटन विवरण के पश्चात इन हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग की स्थिति के बारे में अपने पूर्ववर्ती अनुरोधों को दोहराया है।

घरेलू उद्योग के विचार

15. आधार के मुद्दे के संबंध में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं -

- क. किसी भी आवेदनकर्ता को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के दायरे से अपवर्जित नहीं करना चाहिए क्योंकि उनमें से किसी ने भी जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है और न ही वे संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु के आयातक या निर्यातक से संबंधित है।
- ख. आवेदनकर्ताओं ने संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है।
- ग. न तो कैम्प्लास ने और न ही डीसीडब्ल्यू ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः कोई आयात किया है।
- घ. डीएससीएल ने संबद्ध वस्तु का आयात किया है परंतु वह आयात जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से नहीं किया गया है। कंपनी के श्रीराम विनायल एंड कैमिकल इंडस्ट्रीज तथा श्रीराम पालीटेक सहित कई प्रभाग हैं। संबद्ध वस्तु का उत्पादन श्रीराम विनायल एंड कैमिकल इंडस्ट्रीज द्वारा किया जाता है और इसमें से यौगिक का निर्माण करने के लिए इस उत्पाद की खपत श्रीराम पालीटेक द्वारा की जाती है। श्रीराम पालीटेक ने विचाराधीन उत्पाद की अन्य मात्रा का आयात किया है। भारत में विचाराधीन

उत्पाद की संपूर्ण मात्रा, उसकी भारत में खपत और कंपनी द्वारा किए गए उत्पादन को देखते हुए डीएससीएल द्वारा किए गए आयातों की मात्रा बहुत कम है।

- ड. फिनोलेक्स विचाराधीन उत्पाद का नियमित आयातक है। तथापि, यह आयात ग्राही खपत के लिए हैं। फिनोलेक्स संबद्ध देशों से संबद्ध उत्पाद के किसी भी निर्यातक अथवा आयातक से प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः संबंधित नहीं है।
- च. आवेदनकर्ता का सामूहिक उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बहुत बड़ा अनुपात है। अतः, यह याचिका, पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत आधार की अपेक्षा को संतुष्ट करती है और आवेदनकर्ता घरेलू उद्योग है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. यह नोट किया जाता है कि यह आवेदनपत्र घरेलू उद्योग की ओर से डीसीडब्ल्यू, केम्प्लास्ट, डीएससीएल और रिलायंस द्वारा दायर किया गया है। इसके अतिरिक्त, फिनोलेक्स द्वारा इस याचिका का समर्थन किया गया है। आवेदकों का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है और इसलिए वह समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बहुत बड़ा भाग है।

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने आवेदकों को घरेलू उद्योग के रूप में समझे जाने के आधार और उसकी स्थिति के संबंध में कोई मुद्दा नहीं उठाया है। यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता कंपनियों में से कुछ कंपनियों ने क्षति अवधि के दौरान आयातों की अल्प मात्रा का आयात किया है। तथापि, जांच की अवधि के दौरान, केवल डीएससीएल ने विचाराधीन उत्पाद की अल्प मात्रा का आयात किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधीन नियमावली के नियम 2(ख) में प्रावधान है कि घरेलू उद्योग का निर्धारण करते समय प्राधिकारी, उन घरेलू उत्पादकों को, जो आयातकों अथवा निर्यातकों से संबंधित हैं, अथवा जो कथित रूप से पाटित वस्तु के स्वयं आयातक हैं, कतिपय परिस्थितियों में तर्कसंगत एवं साम्यिक आधार पर अपवर्जन अथवा समावेशन करने के लिए अपने विवेक का प्रयोग कर सकते हैं। इसकी माननीय मद्रास उच्च न्यायालय की डिवीजन बेंच द्वारा रिट अपील संख्या 193/2012, 194/2012, 189/2012 और 195/2012 में दिनांक 27.04.2012 को दिए गए अपने निर्णय में पुनः सम्पुष्टि की गई है।

18. इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदनकर्ताओं में से किसी ने भी जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के किसी निर्यातक अथवा आयातक से संबंधित है। डीएससीएल द्वारा किए गए आयातों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि यह आयात संबद्ध देशों के अलावा अन्य देशों से केवल ग्राही खपत के लिए अल्प मात्रा में किए गए थे। इस मामले के उपर्युक्त तथ्यों के मद्देनजर प्राधिकारी सभी आवेदनकर्ता घरेलू उत्पादकों को घरेलू उद्योग बनने के लिए पात्र मानना उपयुक्त समझते हैं।

19. प्राधिकारी पुनः यह धारित करते हैं कि आवेदनकर्ता घरेलू उद्योग बनने की जरूरत और आधार के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) में उल्लिखित अपेक्षाओं को संतुष्ट करते हैं।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों की प्रकटन विवरण के पश्चात अन्य टिप्पणियां

20. यह उल्लेख किया गया है कि इनियोस के प्रतिष्ठानों के किसी भी परिसर पर मौके पर सत्यापन दौरे किए बिना जांच संपन्न करना अन्यायपूर्ण और अनुचित है। सादर निवेदन है कि मौके पर सत्यापन के बिना प्राधिकारी को इनियोस द्वारा प्रस्तुत आंकड़े स्वीकार किए जाने थे।

21. इनियोस समूह की दो कंपनियों ने यह अनुरोध किया है कि जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यातित एस-पीवीसी के विभिन्न ग्रेडों की बिक्री कीमत में भारी अंतर है जिसकी प्राधिकारी ने पूरी तौर पर अनदेखी की है। विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा में ऑफ ग्रेड एस-पीवीसी को शामिल करना अनुचित है।

22. इनियोस स्वीरेज ने प्राधिकारी के अनुरोध के अनुसार परिशिष्ट-8 (उत्पादन लागत संबंधी अनुबंध) के दो रूपांतरण उपलब्ध कराए थे और प्रथम रूपांतरण परिशिष्ट 7 से पूर्णतः मेल खाता था। इसके अलावा, प्राधिकारी

को परिशिष्ट 8 के दूसरे रूपांतरण (रोल श्रू लागत आधार) का मिलान परिशिष्ट 7 से किया जाना चाहिए था यदि उसने मौके पर सत्यापन दौरा किया होता।

23. आईसीसी हैंडलस एजी के जरिए की गई निर्यात बिक्रियों को इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया गया है कि बिक्री कीमत और समायोजनों का प्रकटन नहीं किया गया है।

24. पाटित आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती नहीं हो रही है।

25. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से हुए आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू बाजार में कीमत न्यूनीकरण नहीं हुआ है।

26. प्राधिकारी को इस आशय का साक्ष्य प्रदान किया गया है कि प्रमुख कच्ची सामग्री की खरीद कीमत (वी सी एम) और प्रसंस्करण लागत में वृद्धि होने के कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन संबंधी किफायत कम प्रभावी रही है।

27. पाटित आयातों का कम कीमत पर बिक्री के रूप में कीमत पर कोई खास प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा था।

28. यह अनुरोध किया गया है कि इनियोस न्यूटन अयक्लिफ लि० के नाम का उल्लेख इस पाद टिप्पणी के साथ प्रकटन विवरण के पृष्ठ 46 में दी गई शुल्क तालिका में किया गया है कि व्यापार का हस्तांतरण मै० इनियोस क्लोर विनायल्स लि० (यू.के.) को कर दिया गया है। इनियोस का प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह इसके बावजूद मै० इनियोस क्लोर विनायल्स लि० को इस पाद टिप्पणी के साथ शुल्क तालिका में शामिल करे कि दिनांक 1.5.2013 से पूर्व मै० इनियोस क्लोर विनायल्स लि० के प्रचालन मै० इनियोस न्यूटन अयक्लिफ लि० द्वारा किया जा रहा था। द्वितीयतः प्रकटन विवरण के पृष्ठ 46 पर शुल्क तालिका में इनियोस ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह “इनियोस ड्यूत्सलेंड जीएमबीएच” के स्थान पर “इनियोस विनायल्स ड्यूत्सलेंड जीएमबीएच” का नाम रखें। तृतीयतः प्रकटन विवरण के पृष्ठ 46 पर दी गई शुल्क तालिका में इनियोस ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह “मै० इनियोस क्लोर विनायल्स लि०” के स्थान पर “मै० इनियोस क्लोर विनायल्स बेल्जियम एन वी” का नाम रखें।

29. मैक्सिको के निर्यातक ने यह उल्लेख किया है कि वह यह नोट करते हुए निराश है कि प्राधिकारी ने एमआरवी द्वारा प्रदत्त सामान्य मूल्य से संबंधित आंकड़ों को स्वीकार नहीं किया है। इस बारे में यह अनुरोध किया जाता है कि उसे आंकड़ों में कथित असंगतियों को स्पष्ट करने/उनमें सुधार करने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया गया है क्योंकि प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम जारी करने और यहां तक कि वर्तमान मामले में सत्यापन भी न करने का विकल्प चुना है। अनुरोध है कि प्रारंभिक जांच परिणाम जारी न करने और सत्यापन दौरान रद्द करने के प्राधिकारी के निर्णय का एमआरवी पर दंडात्मक प्रभाव पड़ा है और यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है।

30. यह भी अनुरोध किया गया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों और घरेलू उद्योग को हुई आरोपित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि नहीं होती है। पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत एसएसआर देशों और संबद्ध देशों से घरेलू उद्योग को हुई किसी क्षति को पृथक करना अपेक्षित है।

31. यह भी अनुरोध किया गया है कि उच्च के मूल्य के उत्पाद का विनिर्माण स्थानीय 3 विनिर्माता कंपनी द्वारा नहीं किया जाता है और इसके परिणामस्वरूप एकाधिकार की स्थिति उत्पन्न होती है तथा कीमत निर्धारण किया जाता है और उत्पाद की कमी उत्पन्न की जाती है। यह भी अनुरोध किया गया है कि 80 के के.मूल्य का विनिर्माण किसी भी स्थानीय उत्पादक द्वारा नहीं किया जाता है परंतु वर्तमान पाटनरोधी शुल्क लागू है जो समझ से परे है। यह भी अनुरोध किया गया है कि चूंकि प्रसंस्करण उद्योग भारतीय रूप से अमरीका डॉलर में उतार-चढ़ाव और स्थानीय विनिर्माता कंपनियों के कीमत निर्धारण की दृष्टि से संवेदनशील है। यदि स्थानीय कंपनियां बाजारों के आधार पर न कि भारत के सभी क्षेत्रों के लिए समान कारखाना कीमत पर कीमत निर्धारित कर रही हैं और क्षेत्रीय सब्सिडी प्रदान कर रही हैं तो इसका तात्पर्य कीमत निर्धारण से है। यह भी अनुरोध किया गया है कि ई यू से हुए कुल आयात वार्षिक 5.4 प्रतिशत बनते हैं और घरेलू उद्योग को इससे क्षति पहुंचने पर विचार करना किसी आधार से रहित है।

32. इनियोस क्लोर विनायल विश्व भर में 25 से अधिक देशों को एस पी वी सी रेजिन की आपूर्ति करने वाली विश्व में सबसे प्रतिष्ठित कंपनियों में से एक है, भारत का हिस्सा उसके बाजार हिस्से का 10 प्रतिशत भी नहीं है और यह कहना निराधार है कि उसके द्वारा भारत में कम कीमतों पर सामग्री का पाटन किया जा रहा है।

33. ई यू ने यह तर्क दिया है कि यद्यपि सत्यापन दौरा डब्ल्यू टी ओ नियमों के अंतर्गत यह विधिक दायित्व नहीं है तथापि, इस मामले में ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे किसी दौरे की अनुमति कुछ प्रमुख मुद्दों को स्पष्ट करने के लिए प्रदान की गई होगी। उन्होंने भारतीय प्राधिकारियों से यह सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है कि कंपनी, इनियोस के तर्कों पर विधिवत ध्यान दिया गया है। उन्होंने क्षति मार्जिन की गणना से संबंधित मुद्दे भी उठाए हैं। आयोग ने यह पाया है कि क्षतिरहित कीमत निकालने के लिए 22 प्रतिशत के लाभ मार्जिन का प्रयोग किया गया है। प्रथमतः इस मार्जिन का स्तर काफी अधिक है और उससे सामान्य स्थिति प्रदर्शित होने की संभावना नहीं है। द्वितीयतः ऐसा प्रतीत होता है कि यह मार्जिन लगाई गई पूंजी पर आय के तदनुरूपी है (लाभ स्थायी परिसंपत्तियों/कार्यशील पूंजी के प्रतिशत के रूप में व्यक्त) परंतु इसका प्रयोग क्षतिरहित कीमत की पुष्टि हेतु उत्पादन लागत पर किया गया प्रतीत होता है। इससे यह अपेक्षा की जाएगी कि गणनाएं लाभ की उस उचित राशि पर आधारित (कारोबार पर आधारित) रही होंगी जिसे घरेलू उद्योग पाटित आयातों के अभाव प्राप्त कर सकता है। लाभ का ऐसा कोई स्तर बमुश्किल 10 प्रतिशत से अधिक होगा। अंततः आयोग का विचार है कि सहयोगी निर्यातक उत्पादकों के लिए निर्धारित अलग-अलग शुल्क का प्रयोग इस बात से स्वतंत्र रहते हुए कि क्या उत्पादों का निर्यात सीधे या किसी तीसरे पक्षकार के जरिए किया जाता है, प्रत्येक निर्यात सौदे के लिए किया जाना चाहिए। यह वस्तुतः अतार्किक होगा कि यदि इनियोस अपने उत्पाद का निर्यात किसी तीसरी कंपनी के जरिए करेगी तो उसके उत्पादों पर इस निर्यातक उत्पादक के लिए निर्धारित शुल्क से भिन्न शुल्क लगाया जाएगा।

प्रकटन विवरण के पश्चात घरेलू उद्योग की टिप्पणियां

34. यह अनुरोध किया गया है कि प्राधिकारी को यह निर्दिष्ट करना चाहिए कि प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क का दायरा 2904 है। आगे यह अनुरोध किया गया है कि प्रतिवादी निर्यातकों के उत्तर को इस आधार पर अस्वीकृत करना अपेक्षित है क्योंकि वह उन्हें प्रदत्त पर्याप्त अवसरों के बाद भी नितांत अधूरा बना हुआ है। निर्यातकों को खासकर तब अनिश्चितकालीन अवसर प्रदान नहीं किया जा सकता जब उन्होंने निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान की है और प्राधिकारी द्वारा उल्लिखित कमियों को पूरा नहीं किया है।

35. प्रतिवादी निर्यातकों ने ग्रेड दर ग्रेड तुलना की जरूरत की पुष्टि नहीं की है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने इस बात की पुष्टि की है कि ग्रेड दर ग्रेड तुलना अपेक्षित नहीं है।

36. माह दर माह आधार पर वी सी एम और सस्पेंसन रेजिन की कीमत में भारी अंतर को देखते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण माह दर माह तुलना करते हुए किया जाना अपेक्षित है।

37. याचिकाकर्ताओं ने निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध किया था कि वह ऑर्डर की तारीख को बिक्री की तारीख मानें। किसी भी निर्यातक ने इस बात को न्यायोचित ठहराने के लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है कि इस बारे में याचिकाकर्ताओं का दावा अस्वीकार्य है। निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु ऑर्डर की तारीख को बिक्री की तारीख माने।

38. घरेलू उद्योग से वर्तमान संबद्ध देशों और निर्णायक समीक्षा जांच के संबद्ध देशों से भी क्षति हो रही है।

39. क्षति मार्जिन की कार्य प्रणाली में इस दृष्टि से उचित तुलना नहीं हो सकती क्योंकि (i) जहां घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और कीमत पर कारखाना स्तर पर विचार किया गया है वहीं आयात कीमत में निर्यातक द्वारा व्यय की गई भाड़ा लागत शामिल है। (ii) जहां आयात कीमत में व्यापक ऋण अवधि शामिल है, वहीं घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत नकद स्तर पर निर्धारित की गई है। (iii) जहां घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर छूट और कमीशन को अलग रखते हुए विचार किया गया है वहीं आयातों

की पहुंच कीमत में छूट और कमीशन को शामिल किया गया है, (iv) जहां घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और बिक्री कीमत कारखाना स्तर पर है वहीं आयात कीमत सुपुर्दगी स्तर पर है।

40. लगाई गई पूंजी का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ कार्यशील पूंजी का निर्धारण चालू देयताओं से लेनदारों को देय ब्याज को छोड़कर किया जाना चाहिए।

41. क्षतिरहित कीमत के निर्धारण हेतु प्राधिकारी से वास्तविक कच्ची सामग्री, उपयोगिताओं की खपत, उत्पादन और उत्पादन लागत पर विचार करने की अपेक्षा की जाती है। लगाई गई पूंजी का निर्धारण स्थायी परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य अथवा स्थायी परिसंपत्तियों के न्यूनतम सकल मूल्य पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए। किसी भी हालत में निवल स्थायी परिसंपत्तियों को लेना सर्वथा अनुचित है और वस्तुतः घरेलू उद्योग के लिए अनुचित है। इसके अलावा, आबद्ध वीसीएम का मूल्यांकन उसके बाजार मूल्य पर किया जाना चाहिए।

42. इस उत्पाद पर पूर्व में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क और इस तथ्य पर विचार करते हुए कि उत्पाद की लागत और कीमत में भारी उतार-चढ़ाव आया है, पाटनरोधी शुल्क अम.डा. के रूप में व्यक्त पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित मात्रा के रूप में ही लागू किया जाए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

43. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच इस अंतिम जांच परिणाम के संबंधित शीर्षकों में की है। जहां तक पूर्ववर्ती पैराग्राफों में नाम में किए गए परिवर्तन से संबंधित अनुरोधों का प्रश्न है, इसे पाटनरोधी नियमावली और पाटनरोधी करार (एडीए) के अनुसार कर दिया गया है।

ग. पाटन मार्जिन

घ.1 सामान्य मूल्य

44. धारा 9क (1) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का आशय :

- (i) समान वस्तु के लिए, जब वह उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातकर्ता देश या भूभाग में खपत के आशय से हो, व्यापार के सामान्य अनुक्रम में तुलनीय कीमत से है; अथवा
- (ii) जब निर्यातकर्ता देश अथवा भूभाग की घरेलू बाजार में व्यापार के सामान्य अनुक्रम में उस वस्तु की बिक्री न होती हो अथवा विशिष्ट बाजार पद्धति या निर्यातकर्ता देश के घरेलू बाजार अथवा भूभाग में बिक्री की मात्रा न्यून हो, जिसके कारण ये बिक्रियां समुचित तुलना की अनुमति न प्रदान करती हों तो सामान्य मूल्य या तो -
 - (क) समान उत्पाद की वह प्रतिनिधिक कीमत होती है जब उसका उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित किसी निर्यातक देश या भूभाग अथवा किसी उपयुक्त तृतीय देश से किया गया हो; अथवा
 - (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित उक्त वस्तु की उसके उदगम के देश में प्रशासनिक, बिक्री या सामान्य लागत और लाभ के लिए तर्कसंगत संवर्धन सहित उत्पादन लागत होती है;

बशर्ते कि उदगम के देश के अलावा किसी अन्य देश से उक्त वस्तु के आयात के मामले में और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर पोत द्वारा भेजा गया हो अथवा उक्त वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में न किया जाता हो अथवा वहां निर्यात के देश में तुलनीय कीमत न हो वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उदगम के देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

ग. यह अनुरोध किया गया है कि प्राधिकारी को अपग्रेड के उत्पादों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखना चाहिए।

घरेलू उद्योग के विचार

45. सामान्य मूल्य के बारे में आवेदनकर्ताओं के अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

- क. आवेदनकर्ताओं ने ईयू और मैक्सिको में विचाराधीन उत्पाद के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आईएचएस रसायन बाजार परामर्शी सेवा : वैश्विक विनायल रिपोर्ट (भूतपूर्व हरिमैन कैमसल्ट विनायल क्लोराइड रिपोर्ट)। हरिमैन कैमसल्ट विनायल क्लोराइड रिपोर्ट का आईएचएस रसायन बाजार परामर्शी सेवा : ग्लोबल विनायल के रूप में जनवरी, 2012 से विपणन किया जाना प्रारंभ कर दिया।
- ख. आवेदनकर्ताओं ने दावा किया है कि हरिमैन कैमसल्ट उन विवर्तन क्षेत्रों से सूचना एवं अंतर्दृष्टि का अग्रणी स्रोत है जो आज के व्यवसाय परिदृश्य को आकृति प्रदान करते हैं। हरिमैन कैमसल्ट कैमिकल मार्केट एडवायजरी सर्विस : ग्लोबल विनायल (जिसे पहले हरिमैन कैमसल्ट विनायल क्लोराइड रिपोर्ट, सीएमएआई यूरोप पीवीसी स्ट्रीम रिपोर्ट और सीएमएआई यूरोप पीवीसी कीमत रिपोर्ट के रूप में जाना जाता था) विश्व की विनायल क्लोराइड बाजार को कवर करता है और संपूर्ण अमेरिका, एशिया और यूरोप के विनायल मूल्य श्रृंखला को संपूर्ण कवरेज प्रदान करता है।
- ग. आवेदनकर्ताओं ने दावा किया कि हरिमैन कैमसल्ट नियमित रूप से विचाराधीन उत्पाद की नियमित रूप से रिपोर्ट प्रदान करता है और यह कीमतें सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए तर्कसंगत ठीक-ठीक और समुचित जानकारी होती है। अतः आवेदनकर्ता यह प्रस्तुत करते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए हरिमैन कैमसल्ट में रिपोर्ट की गई कीमतों पर विचार किया जाना चाहिए।
- घ. आवेदनकर्ताओं ने सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी के समक्ष हरिमैन कैमसल्ट विनायल क्लोराइड की दिसम्बर, 2011 तक की रिपोर्ट और आईएच कैमिकल मार्केट एडवायजरी सर्विस : ग्लोबल विनायल की जनवरी, 2012 से बाद की रिपोर्ट प्रस्तुत की है।
- ङ. ईयू और मैक्सिको के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आवेदनकर्ताओं ने हरिमैन कैमसल्ट रिपोर्ट में उद्धृत की गई कीमतों का उल्लेख किया है। आवेदनकर्ताओं ने समग्र रूप से ईयू में प्रचलित कीमतें उपलब्ध न होने के कारण बेनेलक्स (बेल्जियम, नीदरलैंड्स और लक्जमबर्ग) फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन और यू.के. के लिए उद्धृत कीमतों पर विचार किया है। आवेदनकर्ताओं ने रिपोर्ट में उल्लिखित उच्चतम और न्यूनतम कीमतों की औसत कीमत पर विचार करके माहवार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।
- च. आवेदनकर्ताओं ने विदेशी उत्पादकों की उत्पादन लागत का आकलन वीसीएम की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और परिवर्तन लागत तथा उपरिशीर्ष लागत के सर्वोत्तम आकलनों पर विचार करके किया है। संगत माह के दौरान इस उत्पाद की बिक्री कीमत की तुलना उस माह के लिए उत्पादन लागत से की गई। आवेदनकर्ताओं ने दावा किया कि जांच की अवधि के कई महीनों में बिक्री कीमत उत्पादन लागत से कम थी। अन्य शब्दों में, संगत अवधि के दौरान बिक्री कीमत व्यापार के सामान्य अनुक्रम के अनुरूप नहीं थी। अतः, आवेदनकर्ताओं ने दावा किया है कि उन्होंने, उन मामलों में जहां बिक्री कीमत उत्पादन लागत से कम थी, वहां उत्पादन लागत को (लाभ के लिए तर्कसंगत संयोजन शामिल करने के पश्चात) अपनाया है। जहां कहीं बिक्री कीमत उत्पादन लागत से अधिक थी वहां आवेदनकर्ताओं ने बिक्री कीमत को अपनाया है।

- छ. घरेलू उद्योग ने, पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ निर्यातकों द्वारा ग्रेड से ग्रेड के लिए तुलना किए जाने पर अपनी आपत्ति जताई है। इस संबंध में, उन्होंने पूछा है कि क्यों निर्यातकों ने घरेलू बाजार में बेचे गए सभी ग्रेडों की उत्पादन लागत के ब्यौरे प्रदान कराए हैं अथवा उसे भारत को निर्यातित ग्रेडों तक ही सीमित कर दिया गया है और क्या निर्यातकों ने तृतीय देशों को किए गए सभी निर्यातों का बीजक/सौदावार विवरण प्रदान कराया है और क्या निर्यातकों ने तृतीय देशों को किए गए सभी निर्यातों की उत्पादन लागत का ग्रेडवार ब्यौरा उपलब्ध कराया है और प्रत्येक निर्यातक द्वारा उत्पादित एवं बिक्रीकृत सभी ग्रेडों की विस्तृत सूची उपलब्ध कराई है और प्रत्येक निर्यातक द्वारा अपनी (i) घरेलू बाजार में, (ii) भारत को निर्यातों और (iii) तृतीय देशों को निर्यातों में बेचे गए सभी ग्रेडों की विस्तृत सूची उपलब्ध कराई है।
- ज. निर्दिष्ट प्राधिकारी को ग्रेड-दर-ग्रेड आधार पर तुलना करना केवल तभी अपेक्षित होता है जब उसकी आवश्यकता निर्यातकों द्वारा सिद्ध की गई हो। तथापि, वर्तमान मामले में किसी भी निर्यातक ने इस तरह की ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना की जरूरत को सिद्ध नहीं किया है। इस आधार पर भी उनके दावे को अस्वीकार किया जा सकता है।
- झ. भारी संख्या में निर्यातकों ने उनके द्वारा घरेलू बाजार में बेचे गए तथा भारत को निर्यात किए गए ग्रेडों का खुलासा भी नहीं किया है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि सभी निर्यातक उनके द्वारा उत्पादित और बिक्रीकृत ग्रेडों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाता है। इस सूचना का निग्रहण करने का कारण सूचना की व्यवसाय संवेदनशीलता नहीं हो सकता है। इस सूचना का निग्रहण करने का कारण है घरेलू उद्योग के इस तर्क को सिद्ध होने से वंचित करना कि ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना करने का दावा बिना किसी विधिक और तथ्यपरक आधार पर है और यह वास्तव में पाटन मार्जिन को जोड़ तोड़ कर प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।
- ञ. उत्पाद की गुणवत्ता के संबंध में यह उल्लेख किया गया है कि पीवीसी सस्पेंशन रेजिन की उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादक एक ग्रेड के उत्पादन से दूसरे ग्रेड के उत्पादन में परिवर्तन ऑनलाइन तथा उत्पादन को पूर्णतया रोके बिना करते हैं। परिवर्ती स्तर के दौरान उत्पादित वस्तु किसी भी ग्रेड विनिर्देशन की कड़ाई से सम्पुष्टि नहीं करती है। इन वस्तुओं को सेकेंड्स/उप-स्टैंडर्ड की वस्तु के रूप में बेचा जाता है। कुछ उत्पादक इसे भिन्न ग्रेड के रूप में बताते हैं। तथापि, यह अलग-अलग ग्रेड नहीं होते हैं। यह केवल किसी विशिष्ट ग्रेड के विखंडित भाग अथवा उप-स्टैंडर्ड होते हैं। इन्हें पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ विभिन्न ग्रेडों के रूप में नहीं माना जा सकता है।
- ट. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना नहीं की जानी चाहिए – ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना के लिए अर्ह बनने हेतु निर्यातक को यह स्थापित करना चाहिए कि विभिन्न ग्रेडों की अनुषंगी लागत एवं कीमतों में भारी अंतर है। इस संबंध में उन्होंने उल्लेख किया है कि प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों ने उत्पाद के लिए कोई कीमत सूची अनुरक्षित नहीं की है जो पुनः यह सिद्ध करती है कि निर्यातकों ने विभिन्न ग्रेडों के लिए कीमत भिन्नता की किसी संगत प्रणाली की घोषणा नहीं की है।
- ठ. इसके अतिरिक्त, उन्होंने उल्लेख किया है कि घरेलू बाजार के लिए विभिन्न ग्रेडों के बीच कीमत अंतर 2-4 प्रतिशत के क्षेत्र में है। अतः यह देखा जा सकता है कि विभिन्न ग्रेडों की कीमतों में अंतर बिल्कुल महत्वहीन है। इसके अतिरिक्त, यद्यपि यह घरेलू उद्योग की कीमत सूची में कीमत अंतर की सीमा है, तथापि, जहां तक आयातों का संबंध है वास्तविक कीमत अंतर या तो है ही नहीं अथवा है तो नकारात्मक है।
- ड. घरेलू उद्योग द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि वह उत्पाद जिसके लिए उच्चतर कीमत प्राप्त होनी चाहिए वास्तव में उसकी बिक्री न्यूनतर कीमतों पर और इसके विपरीत की गई। उदाहरण के लिए, एस-70 की कीमत एस-65 की कीमत से कुछ अधिक होनी चाहिए परंतु उसी माह में कई ऐसे लेनदेनों की सूचना दी गई है जिनमें एस-65 ग्रेड की आयात कीमत वास्तव में एस-70 ग्रेड की आयात कीमत

से कहीं अधिक है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि विभिन्न लेनदेनों के बीच कीमत अंतर की कोई संगत प्रणाली नहीं है।

- ढ. लागत अंतर के संबंध में यह उल्लेख किया गया है कि विभिन्न ग्रेडों के बीच लागत अंतर 1 प्रतिशत भी नहीं है। अतः, घरेलू उद्योग ने पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ ग्रेड-दर-ग्रेड किसी भी तुलना का विरोध किया है।
- ण. यह उल्लेख किया गया है कि वीसीएम और सस्पेंशन रेजिन की कीमतों के बीच अल्प अवधि के अंदर ही भारी कीमत भिन्नता आ जाती है। पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(1) के अनुसार विधिक स्थिति के संबंध में यह उल्लेख किया गया है कि यद्यपि नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह बिक्रियों के बारे में यथासंभव उसी समय की निकटतम अवधि के लिए की गई बिक्रियों की तुलना करें; तथापि निर्दिष्ट प्राधिकारी पर ऐसी कोई विशिष्ट विधिक बाध्यता नहीं है कि वह ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना करें। नियमों में निर्दिष्ट प्राधिकारी से केवल यह अपेक्षा की जाती है कि वे कीमत तुलनात्मकता को प्रभावित करने वाले कारकों में भिन्नता के लिए अलाउन्स प्रदान करें। इस प्रकार, यदि निर्यातक भौतिक गुणधर्मों में भिन्नता के आधार पर कीमत में अंतर का परिमाणन करने में सक्षम होते हैं तो निर्दिष्ट प्राधिकारी एक अलाउन्स देने पर विचार कर सकते हैं। तथापि, निर्दिष्ट प्राधिकारी पर ऐसी कोई विशिष्ट बाध्यता नहीं है कि वे पाटन मार्जिन का ग्रेड-दर-ग्रेड निर्धारण करें। साथ ही, यह भी देखा जा सकता है कि नियमों में निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह यथासंभव एक ही समयावधि के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों पर विचार करें। अतः, नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उसी समयावधि के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करें जिससे माह-वार-माह तुलना करके प्रयोजन हासिल किया जा सकता है। उन्होंने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि विदेशी उत्पादों द्वारा दायर सूचना का मौके पर सत्यापन किए बिना अंतिम जांच परिणाम जारी किया जाए।

पाटन मार्जिन के संबंध में उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा जांच

46. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के मुद्दे के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित जांच की गई है :

47. याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका में दावा किया है कि समयावधि के साथ-साथ कीमतों में भारी अंतर पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण पहले प्रस्तावित जांच अवधि के प्रत्येक माह के लिए किया जाना अपेक्षित है और फिर जांच अवधि के लिए उसका भारित औसत निकाला जाए। प्रत्युत्तरदाता उत्पादकों और निर्यातकों से यह अनुरोध किया गया कि वे पर्याप्त सूचना प्रदान कराएं जिससे कि निर्दिष्ट प्राधिकारी यथासंभव उसी अवधि के लिए की गई बिक्रियों पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना सुनिश्चित करने में सक्षम हो सकें। इस संबंध में, प्रत्युत्तरदाता उत्पादकों और निर्यातकों से अनुरोध किया गया कि वे प्रमुख कच्चे माल की खपत की मात्रा और मूल्य के संबंध में माह-दर-माह आधार पर पर्याप्त जानकारी प्रदान कराएं और इसके साथ ही वे वह जानकारी भी प्रदान कराएं जिसे वे बिक्री के समय विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत के संबंध में प्रदान कराना चाहते हैं।

48. त्रुटिपत्रों के उत्तर में उत्पादक और निर्यातक के जवाब की जांच के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्युत्तरदाता उत्पादकों और निर्यातकों के प्रत्युत्तर के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के संबंध में आयात आंकड़े भारत में आयात किए गए इस उत्पाद के विभिन्न प्रकारों अथवा ग्रेडों के लिए कीमत में अंतर की कोई संगत प्रणाली प्रदर्शित नहीं होती है। इसके अतिरिक्त, सभी प्रत्युत्तरदाता उत्पादकों और निर्यातकों ने उनके द्वारा उत्पादित तथा घरेलू बाजार में बिक्रीकृत विभिन्न ग्रेडों के लिए परिशिष्ट-8क और 8ख के अंतर्गत अलग-अलग उत्पादन लागत का दावा नहीं किया है। वास्तव में, कुछ उत्पादकों और निर्यातकों ने उनके द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न ग्रेडों की उत्पादन लागत के संबंध में सूचना यह उल्लेख करते हुए प्रस्तुत नहीं की है कि वह वांछित नहीं है। जहां तक ऑफ ग्रेड के उत्पाद को समान उत्पाद न होने के कारण उसे बाहर रखे जाने के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि ऑफ ग्रेड की सामग्री में

अलग भौतिक एवं तकनीकी विशेषताएं नहीं होती हैं। विनिर्माण प्रक्रिया, कच्ची सामग्री, कार्य एवं उपयोग, उत्पादन लागत, टैरिफ वर्गीकरण समान हैं। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए इन उत्पादों को समान वस्तु माना गया है और पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इन्हें शामिल किया गया है।

49. इसके अतिरिक्त, प्रश्नावली का प्रत्युत्तर तथा रिकार्ड में उपलब्ध सूचना यह दर्शाती है कि समयावधि के साथ इस विचाराधीन उत्पाद की कीमत में काफी अंतर है। इसके अतिरिक्त, समयावधि के साथ-साथ उत्पादन लागत और बिक्री कीमत में, अंतरनिविष्टियों की कीमत में अंतर होने के कारण, भारी अंतर है। अनुबंध-I के पैरा 6(i) में यह अपेक्षा की जाती है कि पाटन मार्जिन पर पहुंचने के लिए प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेंगे और यह तुलना व्यापार के समान स्तर सामान्यतः फैक्टरी स्तर, पर की जाएगी और बिक्रियों के संबंध में यह तुलना लगभग यथासंभव उसी समय के अनुरूप की जाएगी। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना तथा उस पर विचार, माह-दर-माह तुलना करके किया है। भारत और पाटन मार्जिन का निर्धारण अनुषंगी आयात मात्रा पर विचार करते हुए किया गया है। जहां तक प्रकटन विवरण के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस तथ्य के बारे में किए गए अनुरोधों का संबंध है कि प्राधिकारी को मौके पर सत्यापन करना चाहिए था अथवा प्राधिकारी को निर्यातकों के उत्तर को स्वीकार करना चाहिए था, यह उल्लेख किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा मामले की वास्तविक स्थिति को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार मौके पर सत्यापन किया गया था। जहां तक सत्यापन दौरा किए बिना पाटन मार्जिन के निर्धारण के मुद्दे का संबंध है, यह उल्लेखनीय है कि प्राधिकारी के लिए सत्यापन दौरा करना अनिवार्य नहीं है और प्रत्येक मामले में निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व प्राधिकारी ने इनियोस द्वारा प्रदत्त सभी आंकड़ों/स्पष्टीकरणों पर विचार किया है। जिन निर्यातकों ने तीसरे पक्षकार के जरिए संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है, उन्हें पृथक पाटन मार्जिन प्रदान करने के बारे में यह नोट किया जाता है कि पृथक पाटन मार्जिन उन उत्पादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने भारत को संबद्ध वस्तु का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष निर्यात ऐसे किसी व्यापारी के जरिए किया है जिसने सहयोगी उत्पादक को उसके द्वारा संबद्ध वस्तु के किए गए सभी निर्यातों के बारे में संपूर्ण उत्तर प्रस्तुत किया है और इस प्रकार उत्पादक से लेकर निर्यातक तक और निर्यातक से लेकर भारत में आयातकों तक संबद्ध वस्तु की संपूर्ण श्रृंखला उपलब्ध कराई है।

पाटन मार्जिन का निर्धारण : प्राधिकारी द्वारा जांच

50. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावलियां यह सुझाव देते हुए भेजी कि वे विहित स्वरूप और ढंग में सूचना उपलब्ध कराएं। इसके प्रत्युत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों ने अपनी प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया :

- क) इनिआस क्लोर विनायल्स बेल्जियम एनवी, बेल्जियम
- ख) इनिआस विनायल्स ड्यूशलैंड जीएमबीएच, जर्मनी
- ग) इनिआस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच, जर्मनी
- घ) इनिआस सेवीरज एबी, स्वीडन
- ङ) इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यू.के.
- च) मैसर्स मैक्सिकेम रेजिनास किनिलिकास, एसए. डी सी. वी. मैक्सिको

यूरोपियन यूनियन के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

51. यह नोट किया जाता है कि यूरोपियन यूनियन का प्रत्युत्तर ईयू के 5 उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा दायर किया गया है। ये उत्पादक एवं निर्यातक निम्नलिखित हैं :

- क. मैसर्स इनिआस विनायल्स ड्यूशलैंड जीएमबीएच, जर्मनी (उत्पादक)

- ख. मैसर्स इनिआस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच, जर्मनी (निर्यातक)
- ग. मैसर्स इनिआस स्वेरिज ए.बी., स्वीडन (उत्पादक एवं निर्यातक)
- घ. मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स बेल्जियम एनवी (उत्पादक एवं निर्यातक)
- ड. मैसर्स इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड यूके (उत्पादक एवं निर्यातक)

मैसर्स इनिआस विनायल्स ड्यूसलैंड जीएमबीएच (आईवीडी) और मैसर्स इनिआस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच (आईवीएस) जर्मनी

52. प्रस्तुत किए गए प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि मैसर्स इनिआस विनायल्स ड्यूसलैंड जीएमबीएच (एतदपश्चात "आईवीडी") को जर्मनी की विधि के अंतर्गत निगमित किया गया है। इनिआस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच (एतदपश्चात आईवीएस) एवं इनिआस विनायल्स ड्यूसलैंड जीएमबीएच (एतदपश्चात आईवीडी) ने प्राधिकारी के समक्ष संयुक्त प्रत्युत्तर दायर किया है। प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आईवीएस को जर्मनी की विधियों के अंतर्गत दिनांक 15.06.2005 को निगमित किया गया था और तब से इन दोनों कंपनियों के ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। इनिआस विनायल्स ड्यूसलैंड जीएमबीएच का 90 प्रतिशत स्वामित्व इनिआस नार्वे एसपीवी लिमिटेड का और 10 प्रतिशत स्वामित्व इनिआस विनायल्स जीएमबीएच एंड कंपनी केजी का है। इनिआस विनायल्स जीएमबीएच एंड कंपनी केजी का 100 प्रतिशत हित सहित सीमित भागीदार के रूप में 100 प्रतिशत स्वामित्व इनिआस क्लोर विनायल्स होल्लिंग्स लिमिटेड द्वारा और बिना हित के असीमित भागीदार के रूप में इनिआस विनायल्स ड्यूसलैंड (होल्लिंग्स) जीएमबीएच का है। इनिआस क्लोर विनायल्स होल्लिंग्स लिमिटेड का 100 प्रतिशत स्वामित्व इनिआस नार्वे एसपीवी लिमिटेड द्वारा किया जाता है। इनिआस नार्वे एसपीवी लिमिटेड का 100 प्रतिशत स्वामित्व किरलिंग पीएलसी का है। किरलिंग पीएलसी पर 100 प्रतिशत स्वामित्व इनिआस ग्रुप इन्वेस्टमेंट लिमिटेड का है। इनिआस ग्रुप इन्वेस्टमेंट लिमिटेड पर 100 प्रतिशत स्वामित्व इनिआस एजी का है। दोनों ही कंपनियों अर्थात् आईवीएस एवं आईवीडी का व्यवसाय का प्रमुख स्थान इनहौसेरसियला है।

सामान्य मूल्य

53. प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आईवीडी वस्तु विनिर्माता है और आईवीएस, आईवीडी द्वारा विनिर्मित वस्तुओं का निर्यातक है। यह भी नोट किया जाता है कि मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड जर्मनी में क्लोर विनायल्स के व्यवसाय के लिए "प्रधान" कंपनी के रूप में कार्य कर रही है। यह कच्चे माल की खरीद करती है और उसे टोलिंग शुल्क के बदले में "प्रधान" की ओर से कच्चे माल से परिष्कृत भंडार का टोल विनिर्माण करने के लिए आईवीडी को प्रदान करती है। कच्चे माल प्रगति में कार्य करते हैं और परिष्कृत वस्तु हमेशा प्रधान के स्वामित्व में रहती है। प्रधान तब उस परिष्कृत वस्तु की बिक्री आईवीएस को करती है जो बदले में संबद्ध वस्तु की बिक्री बाह्य ग्राहक को करती है।

54. यह नोट किया जाता है कि कंपनी (आईवीएस) संबद्ध वस्तु की बिक्री घरेलू बाजार में प्रत्यक्ष रूप से अंतिम प्रयोक्ता को और घरेलू बाजार में अन्य निकायों को जो उस वस्तु के वितरक है, करती है। घरेलू बाजार में बिक्रियों के लिए आईवीएस ने अंतरदेशीय भाड़ा, क्रेडिट व्यय और पैकिंग व्यय के लिए समायोजन का दावा किया है। निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में उनके द्वारा दायर प्रत्युत्तर के संबंध में और अधिक जानकारी मांगते हुए कंपनी को एक त्रुटिपत्र जारी किया गया था। कंपनी को बताई गई प्रमुख त्रुटियों में शामिल थीं कि प्रधान कंपनी ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर नहीं किया है और प्रधान कंपनी तथा अन्य संबद्ध कंपनियों के बीच व्यवस्था की जांच करने के उद्देश्य से, प्राधिकारी को प्रधान कंपनी एवं अन्य संबंधित कंपनियों के बीच जांच करने के लिए एक अंग्रेजी पाठ की जरूरत होगी। यह भी सम्प्रेषित किया गया कि प्रश्नावली प्रत्युत्तर के साथ संलग्न विभिन्न परिशिष्टों में ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें प्रधान कंपनी, आईवीडी और आईवीएस के आंकड़ों को मिला दिया गया है। इसके अतिरिक्त, यह भी इंगित किया गया था कि इनिआस विल्हेमशेवेन के आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी उल्लेख किया गया कि कंपनी के संबद्ध वस्तु तथा अन्य उत्पादों के बीच व्यय के आबंटन का आधार भी प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात मध्य पूर्व के एक व्यापारी के जरिए किया गया परंतु उस कंपनी ने प्राधिकारी को अपना प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है।

55. कंपनी द्वारा अपने प्रत्युत्तर में यह प्रस्तुत किया गया है कि संबद्ध वस्तु का विनिर्माण करने के लिए अपेक्षित प्रमुख कच्चा माल क्लोरीन, इथायलीन, इथायलीन डाइक्लोराइड और विनायल क्लोराइड है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि कुछ कच्चे माल की खरीद संबद्ध कंपनियों से अल्पावधि आधार पर की जाती है। कंपनी ने प्रस्तुत किया है कि सभी संबंधित पक्षकारों के लेनदेनों की कीमत एचआईएस कैमिकल्स द्वारा अपनी मासिक बाजार रिपोर्टों में प्रकाशित आंकड़ों से ली जाती है।

56. कंपनी ने संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में, अप्रैल-जून, 2011 की अवधि के दौरान *** ईयूआर का समायोजन किया है। पुनः यह उल्लेख किया गया है कि निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर (ईक्यूआर) के परिशिष्ट-7 में रिपोर्ट किया गया व्यय इनिआस विनायल्स ड्यूसलैंड जीएमबीएच, इनिआस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच और इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड (प्रधान कंपनी) कंपनियों से प्राप्त समेकित व्यय है और इन तीन कंपनियों को कवर करते हुए कोई समेकित लेखापरीक्षित लेखे प्रस्तुत नहीं किए जा रहे हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वीसीएम, ईडीसी, इथायलीन का प्रापण संबंधित पक्षकारों से किया जाता है। कंपनी ने उल्लेख किया है कि कच्चे माल की अंतर यूनिट खरीद/बिक्री निकटतम अवधि आधार पर की जाती है। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर प्राधिकारी अतिरिक्त जांच और स्थल सत्यापन लंबित होने के कारण इस विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन/बिक्री लागत का निर्धारण करने में सक्षम नहीं रहे और इसलिए घरेलू बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी के लिए व्यापार के सामान्य अनुक्रम में जांच करना संभव नहीं था। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदनपत्र में यूरोपियन यूनियन के देशों में की गई बिक्री की कीमत के अनुमान हरिमैन कैमसल्ट में संबद्ध वस्तु की प्रकाशित कीमत के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं और सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उसी पर विचार किया गया है।

निर्यात कीमत

57. यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने केवल *** सौदों को छोड़कर भारत को सीधे ही निर्यात किया है और इन सौदों के बारे में निर्यात मध्यपूर्व के एक व्यापारी के माध्यम से किए गए थे। यह नोट किया जाता है कि उक्त व्यापारी ने कोई प्रत्युत्तर दायर नहीं किया है। इसलिए प्राधिकारी ने प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ भारत को किए गए केवल प्रत्यक्ष निर्यातों (कुल निर्यातों का *** प्रतिशत) पर ही विचार किया है। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा, भार व्यय, समुद्री भाड़ा और सामुद्रिक बीमा के संबंध में सामूहिक रूप से एकल समायोजन किए जाने का दावा किया है। इसके अतिरिक्त इसने कमीशन प्रभारों के आधार पर भी समायोजन का दावा किया है। निर्यातकर्ता ने उल्लेख किया है कि इन व्ययों के लिए समायोजन का दावा वास्तविक के आधार पर किया गया है। कंपनी ने क्रेडिट व्यय तथा बैंकिंग व्यय के आधार पर समायोजन का दावा भी किया है। प्राधिकारी ने उनके प्रत्युत्तरों में दावा किए गए सभी समायोजनों सहित निर्यात कीमत को स्वीकार कर लिया। मासिक आधार पर इस तरह निर्धारित की गई निर्यात कीमत का प्रयोग उक्त माह के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण में किया गया है।

इनिआस स्वैरिज एबी

58. इनिआस स्वैरिज एबी स्वीडन की विधि के अंतर्गत निगमित एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है। इस कंपनी का प्रारंभ में एक्टीबोलागेट इंटरनेशनल केसिन कंपनी के रूप में निगमन किया गया था और उत्तरवर्ती रूप से उसका नाम बदलकर इनिआस स्वैरिज एबी कर दिया गया। यह कंपनी मैसर्स इनिआस नार्वे एसपीवी लिमिटेड की एक 100 प्रतिशत अनुषंगी कंपनी है जो इसके बदले केलिंग पीएलसी की 100 प्रतिशत अनुषंगी कंपनी है। केलिंग पीएलसी पर इनिआस ग्रुप इन्वेस्टमेंट लिमिटेड द्वारा 100 प्रतिशत स्वामित्व है जो इनिआस एजी की एक 100 प्रतिशत अनुषंगी कंपनी है।

सामान्य मूल्य

59. उत्पादक और निर्यातक द्वारा दायर प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु का संपूर्ण उत्पादन स्वयं कंपनी के संयंत्र में ही होता है। उत्पादन प्रक्रिया क्लोरीन के स्तर से प्रारंभ होती है। इथायलीन को छोड़कर अन्य समस्त कच्चे माल की खरीद असंबद्ध आपूर्तिकर्ताओं से की जाती है। इथायलीन की खरीद असंबद्ध निकायों

तथा इनिआस नोर्गे एएस जैसी संबद्ध कंपनी से की जा रही है। कंपनी घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री अंतिम प्रयोक्ताओं तथा संबद्ध वस्तु के वितरकों को करती है। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा, क्रेडिट व्यय और पैकिंग व्यय के कारण समायोजन का दावा किया है।

60. यह नोट किया जाता है कि कंपनी को पहले एक अपूर्णता पत्र जारी किया गया था जिसमें और अधिक आंकड़ों/सूचना की जांच की गई थी। कंपनी को बताई गई कमियों में से एक प्रमुख कमी यह थी कि भारत को निर्यात बिक्रियों की भारी मात्रा की बिक्री एक व्यापारिक कंपनी आईसीसी हैंडेल्स एजी के माध्यम से की गई थी, परंतु इसने प्रत्युत्तर दायर नहीं किया था। प्राधिकारी द्वारा जारी अपूर्णता पत्र के प्रत्युत्तर में आईसीसी हैंडेल्स द्वारा एक समिति सकल रूप से अपूर्ण प्रत्युत्तर दायर किया गया। इस प्रकार, भारत को की गई बिक्रियों के एक महत्वपूर्ण भाग के लिए उन्होंने भारत को बिक्री कीमत प्रदान नहीं कराई है। निर्यातक से अपनी संबद्ध कंपनी से इथायलीन की क्रय कीमत के बारे में पिछला साक्ष्य का स्पष्टीकरण देने को कहा गया जिससे कि यह प्रदर्शित हो सके कि यह संव्यवहार निकटतम अवधि आधार पर किए गए थे। उत्पादक/निर्यातक से पुनः इस तथ्य का विवरण प्रस्तुत करने और अपना प्रस्तुतिकरण स्पष्ट करने का अनुरोध किया गया कि संबद्ध कंपनी से कच्चे माल की खरीद अंतरण कीमत निर्धारण पर आधारित है जो औद्योगिक निकाय बाजार रिपोर्ट द्वारा प्रकाशित मासिक कीमत डिस्काउंट पर आधारित है।

61. प्राधिकारी द्वारा जारी अपूर्णता पत्र के प्रत्युत्तर में कंपनी ने असंबद्ध निकायों से क्रम की गई इथायलीन की कीमत की तुलना इनिआस नोर्गे एएस से की गई क्रय कीमत से यह दर्शाने के लिए की कि संबद्ध निकाय से कच्चे माल की खरीद कभी-कभार ही की जाती है। इसके अतिरिक्त कंपनी ने प्राधिकारी को यह सूचित किया कि इथायलीन की आंतरिक अंतरण कीमत का परिकलन औद्योगिक निकाय आईएचएस कैमिकल्स द्वारा इथायलीन के लिए अपनी मासिक बाजार रिपोर्ट में प्रकाशित मासिक संविदा कीमत को डिस्काउंट देते हुए की गई है। प्रत्युत्तरदाता उत्पादक/निर्यातक ने अपूर्णताओं के लिए प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया है। कंपनी ने उल्लेख किया है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए प्रति यूनिट व्यय और अन्य उत्पादों (पेस्ट – पीवीसी एवं कास्टिक) के लिए प्रति यूनिट व्यय समान है और इसलिए कुल व्यय बिक्री मात्रा के समान दर पर आबंटित किया गया है क्योंकि विचाराधीन उत्पाद तथा गैर-विचाराधीन उत्पाद दोनों से संबंधित व्यय में कोई अंतर नहीं है। इसके आगे यह उल्लेख किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-8 के दो पाठ प्रदान कराए गए थे और प्रथम पाठ में संबंधित उत्पाद के विनिर्माण की लागत के सत्य भूमिका प्रतिबिम्बित की गई है वहीं दूसरा पाठ इनिआस स्वैरिज खातों में रिपोर्ट की गई लागत के अनुरूप तैयार किया गया था। पुनः यह उल्लेख किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-7 के साथ समायोजन करने के प्रयोजनार्थ द्वितीय पाठ का प्रयोग करना चाहिए और प्रथम रूपांतर का प्रयोग व्यापार विश्लेषण के सामान्य अनुक्रम के लिए करना चाहिए। विनिर्माण लागत के जरिए सत्य भूमिका इस तथ्य को प्रतिबिम्बित करती है कि हमारे समूह के अंतर्गत अन्य स्थल इनपुटों का विनिर्माण इनिआस स्वैरिज की उत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत करते हैं और रोल श्रू लागत समान समूह के अंदर कंपनियों के बीच बिक्री के लिए प्रयोग की गई अंतरण कीमत द्वारा सृजित आंतरिक रूप से उत्पन्न हुए किसी लाभ और उसी स्थल पर उत्पादों के बीच अंतरण कीमत निर्धारण को हटा देती है और इसलिए निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-7 में प्रस्तुत आंकड़ों का निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-8 में प्रस्तुत आंकड़ों के साथ समामेलन करना संभव नहीं है। कंपनी ने पुनः यह उल्लेख किया है कि कच्चे माल की आंतरिक यूनिट क्रय/बिक्री यथासंभव कम की जाती है। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद की खरीद/बिक्री की लागत का निर्धारण करने में सक्षम नहीं हो सके और इसलिए प्राधिकारी के लिए व्यापार के सामान्य अनुक्रम का परीक्षण करना और घरेलू बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं था।

62. इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन में यूरोपियन यूनियन के देशों में बिक्री/कीमत का आकलन हरिमैन कैमसल्ट में संबद्ध वस्तुओं की प्रकाशित कीमत के आधार पर किया गया है और सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उस पर विचार किया गया है।

निर्यात कीमत

63. यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने भारत को अपनी बिक्री करने के लिए दो व्यापार सरणियों का अनुकरण किया अर्थात् भारत में आयातकों को प्रत्यक्ष बिक्री और आईसीसी हैंडेल्स एजी, स्विटजरलैंड आधारित संबद्ध वस्तु का एक स्वतंत्र असंबद्ध व्यापारी के जरिये बिक्रियां। कंपनी ने आईसीसी हैंडेल्स एजी द्वारा की गई वस्तु की बिक्रियों का विवरण प्रदान किया है। यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आईसीसी हैंडेल्स एजी ने भारत में आयातकों को संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़े, भार व्यय, समुद्री भाड़ा और समुद्री बीमा के कारण एकल समायोजन का दावा किया है। इसके अतिरिक्त, इसने कमीशन एवं प्रलेखन प्रभावों के आधार पर भी समायोजन का दावा किया है। यह उल्लेख किया गया है कि उपर्युक्त का दावा वास्तविक के आधार पर किया गया है। कंपनी ने क्रेडिट व्यय और पैकिंग व्यय के कारण भी समायोजन का दावा किया है। इस तथ्य के आलोक में कि मैसर्स आईसीसी हैंडेल्स एजी द्वारा दायर किया गया प्रत्युत्तर अपूर्ण है और यह भारतीय ग्राहकों को बेची गई संबद्ध वस्तु के संबंध में निर्यात कीमत की सूचना प्रदान नहीं करता है जिसे प्रत्युत्तरदाता उत्पादकों द्वारा समायोजन के साथ प्रस्तुत किया गया है, इसीलिए निर्यात कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आईसीसी हैंडेल्स एजी के जरिए भारत को किये गये निर्यातों पर विचार नहीं किया गया है। प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत का निर्धारण उनके द्वारा भारत को किये गये प्रत्यक्ष निर्यातों (कुल निर्यातों का *** प्रतिशत) पर विचार करते हुए किया गया है। प्राधिकारी ने उनके प्रत्युत्तर में उनके द्वारा किये सभी समायोजन दावों सहित निर्यात कीमत को स्वीकार किया है। मासिक आधार पर इस तरह निर्धारित की गई निर्यात कीमत का प्रयोग उक्त माह के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण में किया गया है।

मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स बेल्जियम एनवी

64. मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स बेल्जियम एनवी बेल्जियम के कानून के अंतर्गत निगमित की गई एक कंपनी है। यह कंपनी मैसर्स इनिआस नार्वे एसपीवी लिमिटेड के 100 प्रतिशत स्वामित्व वाली एक अनुषंगी कंपनी है जो मैसर्स इनिआस ए गैड की अनुषंगी कंपनी है, यह कंपनी इनिआस कंपनी समूह का एक भाग है।

सामान्य मूल्य

65. यह प्रस्तुत किया गया है कि कंपनी संबद्ध वस्तु की बिक्री घरेलू बाजार में अंतिम उपयोगकर्ताओं तथा संबद्ध वस्तु के वितरकों को करती है। प्रत्युत्तरदाता उत्पादक ने संबद्ध वस्तु की बिक्री असंबद्ध ग्राहकों तथा उससे संबद्ध निकायों को की है। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा (वास्तविक आधार पर), भार व्यय, क्रेडिट, व्यय और पैकिंग व्यय के कारण समायोजन का दावा किया है।

66. कंपनी को पहले एक अपूर्णता पत्र जारी किया गया है जिसमें कुछ सूचना मांगी गई। कंपनी को इंगित की गई प्रमुख अपूर्णताओं में से एक अपूर्णता उनके द्वारा दावा किये गये समायोजन और उस दावे के समर्थन में प्रस्तुत किये गये दस्तावेजों के संबंध में थी। उन्हें यह भी सूचित किया गया कि उनकी लगभग समस्त बिक्रियां व्यापारिक कंपनी आईआईसी हैंडेल्स द्वारा की गई थी जिसने प्रत्युत्तर दायर नहीं किया है। इसके अतिरिक्त, निर्यातक से प्रमुख कच्चे माल की खपत की मात्रा एवं मूल्य तथा बिक्री के समय विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत के संबंध में कोई अन्य सूचना जिसे वे देना चाहते हैं, प्रदान करके माहवार आधार पर पर्याप्त सूचना प्रदान कराने का अनुरोध किया गया है। यह भी नोट किया गया है कि पीवीसी का विनिर्माण करने के लिए अपेक्षित अधिकांश वीसीएम का ग्राही उत्पादन होता है और उनसे पीवीसी की लागत का निर्धारण करने के लिए ग्राही रूप से उत्पादित वीसीएम की कीमत निर्धारण का आधार का उल्लेख करने को कहा गया। उनके प्रत्युत्तर में यह प्रस्तुत किया गया कि कंपनी अपने सभी बड़े कच्चे माल का प्रापण अपने से असंबद्ध बाह्य आपूर्तिकर्ता से करती है। यह भी प्रस्तुत किया गया कि कंपनी की एक पूर्णतया एकीकृत उत्पादन श्रृंखला है। प्रमुख कच्चे माल इथाइलीन, सोडियम क्लोराइड, पोटेशियम क्लोराइड, विद्युत और वीसीएम होता है। कंपनी अपनी स्थल पर ही वीसीएम का उत्पादन करती है और तत्पश्चात वह उसे रेल द्वारा इनिआस क्लोर विनायल्स फ्रांस एसएस को भेजती है तथा इनिआस क्लोर विनायल्स लिम्बर्ग बीबी को पाइप लाइन द्वारा भेजती है। उपर्युक्त सभी उत्पादन स्थलों पर विनिर्मित वीसीएम को पीवीसी में परिवर्तित कर दिया जाता है। दोनों उत्पादन स्थल टोलिंग शुल्क के बदले में कंपनी की ओर से विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करते हैं और कंपनी ऊपर उल्लिखित टोलिंग विनिर्माताओं जरूरी कच्चे

माल की आपूर्ति करती है। अपूर्णता पत्र के प्रत्युत्तर में आईसीवी बेल्जियम ने अन्य बातों के साथ-साथ यह उल्लेख किया है कि निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-7 में दिये गये आंकड़ों का संपूर्ण मेल-मिलाप निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-8 में दिये गये आंकड़ों से नहीं किया जा सकता है। पुनः यह उल्लेख किया गया है कि परिशिष्ट-7 में उल्लेखित आंकड़े बिक्री प्रमात्रा पर आधारित है जबकि परिशिष्ट-8 में दिये गये आंकड़े उत्पादन मात्राओं पर आधारित है और इस कारण निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-7 और 8 में उल्लिखित आंकड़ों में भंडार समामेलन में कमियां संभव हैं। पुनः यह उल्लेख किया गया है कि निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-7 को क्लोरीन की एकीकृत कीमत और एसजीएंडए व्ययों के आधार पर तैयार किया गया जबकि निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-8 में प्रस्तुत किये गये आंकड़े क्लोरीन की निर्धारित दर पर आधारित थे इनमें एसजीएंडए व्यय को शामिल नहीं किया गया था। पुनः यह उल्लेख किया गया था कि सदैव पूर्ण सम्मेलन प्रदान करना संभव नहीं है क्योंकि परिशिष्ट-8 में अनुरोध की गई लागत विखंडन उस तरीके को प्रतिबिम्बित नहीं करता है जो आईसीवी बेल्जियम ने अपनी लागत में रिपोर्ट किया है। उपर्युक्त स्थिति के आलोक में प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन/बिक्री लागत का निर्धारण नहीं कर सके और इसीलिए प्राधिकारी के लिए व्यापार के सामान्य अनुक्रम में जांच करना और घरेलू बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं था।

67. इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन में यूरोपियन यूनियन के देशों में बिक्री कीमत का आकलन संबंध वस्तु की हेरिमेन कैमसल्ट रिपोर्ट में प्रकाशित कीमत के आधार पर किया गया है और सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उसी पर विचार किया गया है।

भारत को निर्यात कीमत

68. यह नोट किया जाता है कि कंपनी भारत में अपनी बिक्रियां करने के लिए तीन सरणियों का अनुकरण करती है अर्थात् भारत में आयातकों को प्रत्यक्ष बिक्री, स्विटजरलैंड आधारित संबद्ध वस्तु के एक स्वतंत्र, असंबद्ध व्यापारी आईसीसी हैंडेल्स एजी के जरिए और आईसीसी हैंडेल्स एजी के जरिए जो भारत में स्थित व्यापारियों को संबद्ध वस्तु की बिक्री करता है। कंपनी ने समुद्री भाड़ा, अंतरदेशीय भाड़ा और समुद्री बीमा के कारण सामूहिक रूप से एकल समायोजन का दावा किया है। इसके अतिरिक्त इसने भार व्यय और कमीशन के कारण भी समायोजन का दावा किया है ऐसा उल्लेख किया गया है कि इन समायोजनों का दावा वास्तविक आधार पर किया गया है। कंपनी ने क्रेडिट व्यय और पैकिंग व्यय के कारण भी समायोजन का दावा किया है। इस तथ्य के मद्देनजर की मैसर्स आईसीसी हैंडेल्स एजी द्वारा दायर किया गया प्रत्युत्तर सकल रूप से अपूर्ण है और यह संबद्ध वस्तु की भारतीय ग्राहकों को की गई बिक्री की उस निर्यात कीमत की सूचना प्रदान नहीं करता है जिसे प्रत्युत्तर दाता उत्पादक द्वारा अपने समायोजन के साथ प्रस्तुत किया गया है। निर्यात कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आईसीसी हैंडेल्स एजी के जरिए भारत को किये गये निर्यातों पर विचार किया गया है। प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत का निर्धारण उनके द्वारा भारत को किये गये प्रत्यक्ष निर्यातों (कुल निर्यातों का *** प्रतिशत) के आधार पर किया है। प्राधिकारी ने उनके द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रत्युत्तर में दावा किये गये सभी समायोजनों तथा निर्यात कीमत को स्वीकार कर लिया है। मासिक आधार पर इस तरह निर्धारित की गई निर्यात कीमत का प्रयोग उक्त माह के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण में किया गया है।

मैसर्स इनिआस न्यूटन एक्लिफ लिमिटेड यू.के.

69. इनिआस न्यूटन एक्लिफ लिमिटेड यू.के. इंग्लैंड और वेल्स की विधि के अंतर्गत निगमित एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है। प्रारंभ में इस कंपनी का नाम एनओआरएसके हाइड्रो पोलिमर्स लिमिटेड था। बाद में इस कंपनी का नाम बदल कर इनिआस न्यूटन एक्लिफ लिमिटेड कर दिया गया। इसके पश्चात दिनांक 1.5.2013 को यह प्रस्तुत किया गया कि इनिआस न्यूटन एक्लिफ लिमिटेड ने अपनी एस-पीवीसी बिजनेस इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड को अंतरित कर दी है। इनिआस न्यूटन एक्लिफ लिमिटेड द्वारा विगत में की जा रही सभी एस-पीवीसी गतिविधियां इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड के नाम से जारी रहेंगी। कंपनी ने अपने दिनांक 10.6.2013 के पत्र में अपने पुनःगठन के तरीके की एक प्रति प्रस्तुत की। यह कंपनी मैसर्स इनिआस नॉर्वे एसपीवी की एक 100 प्रतिशत अनुषंगी है जो केरलिंग पीएलसी की 100 प्रतिशत स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी है। केरलिंग पीएलसी

इनिआस ग्रुप इनवेस्टमेंट कंपनी लिमिटेड के 100 प्रतिशत के स्वामित्व में है जो इनिआस एजी की एक 100 प्रतिशत अनुषंगी कंपनी है।

सामान्य मूल्य

70. यह कंपनी संबद्ध वस्तु के अंतिम प्रयोक्ताओं और वितरकों को संबद्ध वस्तु की बिक्री करती है कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा (वास्तविक आधार पर) क्रेडिट व्यय और पैकिंग व्यय के कारण समायोजन का दावा किया है कंपनी को सूचना प्रदान कराने के लिए एक अपूर्णता पत्र जारी किया गया। कंपनी को इंगित की गई प्रमुख अपूर्णताओं में यह विशेष रूप से पूछा गया कि वह उनके द्वारा दावा किये गये समायोजन, इसके आधार सहित, के लिए साक्ष्य प्रस्तुत करें। यह भी पूछा गया कि उनकी लगभग सभी बिक्रियां आईआईसी हैंडैल्स, एक व्यापारिक कंपनी, के जरिए की गई है जिसके लिए व्यापारी द्वारा कोई प्रत्युत्तर दायर नहीं किया गया है। अपूर्णता पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि सहबद्ध कंपनियों से कच्चे माल की खरीद अंतरण कीमत निर्धारण पर आधारित है जो औद्योगिक निकाय बाजार रिपोर्ट द्वारा प्रकाशित मासिक कीमत के डिस्काउंट पर आधारित है। उनसे डिस्काउंट प्रदान कराने के आधार और इस संबंध में किये गये परिकलनों का विवरण स्पष्ट करने के लिए कहा गया। उनसे संबंधित पक्षकार द्वारा किये गये संव्यवहारों का विवरण तथा निर्यातक प्रश्नावलियों के विभिन्न परिशिष्टों में उनके द्वारा प्रदान कराई गई सूचना का समामेलन करने के लिए भी कहा गया।

71. अपूर्णता पत्र के प्रत्युत्तर में यह उल्लेख किया गया कि कंपनी इस उत्पाद का उत्पादन अपने निजी स्थल पर करती है और इसका उत्पादन वीसीएम स्तर से शुरू होता है। पुनः यह उल्लेख किया गया है कि कंपनी वीसीएम को छोड़कर अन्य समस्त कच्चे माल का प्रापण तृतीय पक्षकारों से करती है। वीसीएम की खरीद नार्वे और रणकार्न में स्थित इसकी सहायक कंपनी से की जाती है। कंपनी ने दावा किया है कि इसकी सहायक कंपनी के साथ वीसीएम की खरीद फरोख्त यथासंभव दूरी के आधार पर करती है और यह औद्योगिक निकाय आईएचएस केमिकल्स द्वारा अपनी मासिक बाजार रिपोर्टों में प्रकाशित एसपीवीसी और कास्टिक सोडा द्रव की बिक्री कीमतों के डिस्काउंट के संदर्भ में एफओवी आधार पर परिकलित लागत जमा तंत्र पर आधारित है। इसके अतिरिक्त कंपनी द्वारा यह दावा किया गया है कि इस फार्मूला में प्रयोग किया गया डिस्काउंट इनीआस द्वारा यूरोप में कास्टिक सोडा और एसपीवीसी की बिक्री से प्राप्त एचआईएस प्रकाशित कीमतों के औसत डिस्काउंट को प्रतिबिम्बित करता है।

72. इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड द्वारा यह उल्लेख किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-8 के दो पाठ प्रदान कराये गये थे। प्रथम पाठ संबंधित उत्पाद के विनिर्माण की लागत के जरिए सत्य भूमिका को प्रतिबिम्बित करता है और द्वितीय पाठ इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ के खातों में रिपोर्ट की गई लागत के अनुरूप तैयार किया गया है। द्वितीय पाठ वह पाठ है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-7 का संराधन के प्रयोजनार्थ प्रयोग करना चाहिए। प्रथम पाठ का प्रयोग व्यापार विश्लेषण के सामान्य अनुक्रम के प्रयोजनार्थ किया जाना चाहिए। विनिर्माण लागत के जरिए सत्य भूमिका इस तथ्य को प्रतिबिम्बित करती है कि हमारे समूह के अंतर्गत अन्य स्थल इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग किये जाने वाले इनपुटों का उत्पादन किया जाता है। रोल श्रू लागत समान ग्रुप के अंदर कंपनियों के बीच बिक्री के लिए प्रयोग की गई अंतरण कीमत द्वारा सृजित उत्पन्न लाभ तथा उसी स्थल पर उत्पादित उत्पादों के बीच अंतरण कीमत निर्धारण को हटा देता है।

73. उपर्युक्त के आलोक में प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन/बिक्री लागत का निर्धारण नहीं कर सके और इसीलिए प्राधिकारी के लिए व्यापार के सामान्य अनुक्रम में जांच करना और घरेलू बिक्रियों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं था।

74. इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन में यूरोपियन यूनियन के देशों में बिक्री कीमत का आकलन संबंध वस्तु की हेरिमेन कैमसल्ट रिपोर्ट में प्रकाशित कीमत के आधार पर किया गया है और सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उसी पर विचार किया गया है।

भारत में निर्यात कीमत

75. कंपनी भारत को अपनी बिक्री करने के लिए दो व्यापार सरणियों का अनुकरण करती है अर्थात् भारत में आयातकों को प्रत्यक्ष बिक्री और आईसीसी हैंडेल्स एजी, स्विटजरलैंड आधारित संबद्ध वस्तु का एक स्वतंत्र असंबद्ध व्यापारी के जरिये बिक्रियां। कंपनी ने आईसीसी हैंडेल्स एजी द्वारा की गई वस्तु की बिक्रियों का विवरण प्रदान किया है। आईसीसी हैंडेल्स एजी ने भारत में आयातकों को संबद्ध वस्तु की बिक्री दो बीजकों के जरिए की है, जिसकी प्रतियां इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड को प्रदान करा दी गई थी। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा, भार व्यय, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा और कमीशन तथा बैंक प्रभारों के कारण समायोजन का दावा किया है। उपर्युक्त दावा वास्तविक आधार पर किया गया है। कंपनी ने क्रेडिट व्यय और पैकिंग व्यय के कारण भी समायोजन का दावा किया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि मैसर्स आईसीसी हैंडेल्स एजी द्वारा दायर किया गया प्रत्युत्तर सकल रूप से अपूर्ण है यह भारतीय ग्राहकों को संबद्ध वस्तु की बिक्री की निर्यात कीमत से संबंधित सूचना प्रदान नहीं करती है जो कि प्रत्युत्तर दाता उत्पादक द्वारा अपने समायोजनों के साथ प्रस्तुत की गई है, इसलिए निर्यात कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ मैसर्स आईसीसी हैंडेल्स एजी के जरिए भारत को किये गये निर्यातों पर विचार नहीं किया गया है। प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत का निर्धारण उनके द्वारा भारत को किये गये प्रत्यक्ष निर्यातों (कुल निर्यातों का *** प्रतिशत) को ध्यान में रखकर किया है। प्राधिकारी ने उनके प्रत्युत्तर में उनके द्वारा किये सभी समायोजन दावों सहित निर्यात कीमत को स्वीकार किया है। मासिक आधार पर इस तरह निर्धारित की गई निर्यात कीमत का प्रयोग उक्त माह के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण में किया गया है।

इनिआस ग्रुप ऑफ कंपनीज के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण

76. ऊपर उल्लिखित विश्लेषण के आधार पर संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य का निर्धारण जांच की अवधि के लिए प्रत्येक कंपनी हेतु प्रत्येक माह के लिए किया गया है। तत्पश्चात प्रत्येक कंपनी के लिए जांच की अवधि के दौरान पाटन मार्जिन और प्रतिशत के रूप में पाटन मार्जिन का निर्धारण समग्र रूप से किया गया और उसके पश्चात भारित औसत पाटन मार्जिन और प्रतिशत के रूप में पाटन मार्जिन का निर्धारण इनिआस ग्रुप ऑफ कंपनीज के लिए किया गया।

मैक्सिको के लिए सामान्य मूल्य

77. प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि मैसर्स मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास, एसए, डि सी.वी एक कंपनी है जिसका निगमन वाणिज्यिक कंपनियों के सामान्य कानून (ले जनरल डि सोसाइडाडेस मर्केन्टाइल्स) के अनुसरण में किया गया और यह मैक्सिको में सस्पेंशन ग्रेड पीवीसी का उत्पादन करने वाली एक मात्र कंपनी होने का दावा करती है। यह प्रस्तुत किया गया है कि यह कंपनी मैक्सिकैम एसएबी डि सी.वी के पूर्ण स्वामित्व वाली एक अनुषंगी कंपनी है जो लैटिन अमेरिका में रसायन उत्पादों का उत्पादन करने वाली सबसे बड़ी कंपनी है। इसके अतिरिक्त मैक्सिकैम एसएबी डि सी.वी की मैक्सिकैम अमेरिका इंक नामक एक 100 प्रतिशत स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी है जो एक यूएस व्यापारिक कंपनी है जो संबद्ध उत्पाद की खरीद/ बिक्री मुख्यतः उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका की बाजारों में करती है। मैक्सिकैम एसएबी डि सी.वी का 100 प्रतिशत स्वामित्व मैक्सिकैम रेजिनास कोलम्बिया एसएएस पर है जो कोलम्बिया स्थित सस्पेंशन पीवीसी का उत्पादन करती है। यह प्रस्तुत किया गया है कि मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास एसए डि सी.वी के अलावा इन कंपनियों में से कोई अन्य कंपनी भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात अथवा उसकी बिक्री नहीं करती। प्रत्युत्तर से यह नोट किया जाता है कि यह कंपनी संबद्ध वस्तु का उत्पादन मैक्सिको स्थित अपनी निम्नलिखित फैक्ट्रियों में करती है:

(क) तमौलिपास मैक्सिको स्थित प्लान्टा अल्टामीरा ।

(ख) तमौलिपास मैक्सिको स्थित प्लान्टा अल्टामीरा ॥

(ग) त्लैक्सकाला मैक्सिको स्थित प्लान्टा त्लैक्सकाला

(घ) इस्टैडो डि मैक्सिको स्थित प्लान्टा ला प्रेसा

78. प्राधिकारी को दिये गये उत्तर में यह प्रस्तुत किया गया है कि किसी भी सामग्री की खरीद संबंधित आपूर्तिकर्ताओं से अथवा ग्राही रूप से उत्पादित वस्तुओं से नहीं की जाती है। मैक्सिकेम रेजिनास विनिलिकास कोई अनुदान, आर्थिक सहायता या उस वस्तु के विनिर्माण, निर्यात या परिवहन के लिए कोई अन्य विचार प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नहीं प्राप्त करता है। संबंधित उत्पाद के बारे में किसी अनुसंधान एवं विकास, उत्पादन, बिक्रियों, लाइसेंसिंग, तकनीकी एवं पेटेंट करार के संबंध में किसी कंपनी के साथ वित्तीय या संविदात्मक संबंध या संयुक्त उद्यम नहीं है। इस जांच में अंतर्ग्रस्त उत्पाद मैक्सिकेम रेजिनास विनिलिकास द्वारा अपनी गृह बाजार (मेक्सिको) में बेचा गया और भारत को निर्यात किया गया पोलिविनायल क्लोराइड (सस्पेंसन टाइप) है, जिसे समान्यतः पीवीसी (एस-पीवीसी) के रूप में जाना जाता है, एक क्लोरो-इथाइलिन पोलिमर (सी2एच3सीएल)_{एन} होता है, इसका मोलिक्यूलर मास 60,000-1,50,000 के बीच होता है, जिसके मूल्यों को के-मूल्य से जोड़ा जाता है और जो रेजिन तथा इसके प्रयोग को परिभाषित करता है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि विश्व में पीवीसी का उत्पादन करने वाली सभी सुविधाएं ऑफ ग्रेड रेजिन की अल्प मात्रा का उत्पादन करती हैं जिसका निर्यात किया जाता है और जिसका अनुप्रयोग उन कार्यों में किया जाता है कि इसके पूर्ण विनिर्देशनों का करार से अनुपालन नहीं करते हैं, इसके साथ ही इस रेजिन की कीमत प्रधान सामग्री की तुलना में बहुत कम है परंतु इसकी प्रमात्रा इतनी कम होती है कि इसका बाजार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह प्रस्तुत किया गया है कि इस ऑफ ग्रेड रेजिन पर पाटन मार्जिन का परिकलन करने के प्रयोजनार्थ विचार नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह वह उत्पाद है जो प्रमुख उत्पाद गुणवत्ता और विनिर्देशनों को पूरा नहीं करता है और प्रमुख सामग्री के साथ बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं करता है।

79. यह प्रस्तुत किया गया है कि संबद्ध वस्तु का उत्पादन उपर्युक्त संयंत्रों में किया जाता है और इसका भंडारण सामान्य भंडारागारों में किया जाता है। प्रत्युत्तरदाता उत्पादक के लिए एक अपूर्णता पत्र, यह अनुरोध करते हुए जारी किया गया था कि वे पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कराएं जिससे निर्दिष्ट प्राधिकारी लगभग यथासंभव उसी समय की गई बिक्रियों पर विचार करके सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित कर सके। इस संबंध में, निर्यातक से यह अनुरोध किया गया कि वह प्रमुख कच्चे माल की खपत की मात्रा और मूल्य प्रदान करके माह वार आधार पर पर्याप्त सूचना और ऐसी कोई अन्य सूचना प्रदान करें जिसे वे बिक्री के समय विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत के संबंध में प्रदान कराना आवश्यक समझते हैं। उत्पादक सह निर्यातक से भी निर्यातक प्रश्नावली के स्वरूप और ढंग में कराई से निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। यद्यपि अपूर्णता पत्र का प्रत्युत्तर प्राप्त हो गया है फिर भी यह नोट किया जाता है कि कुछ परिशिष्टों के बारे में दिया गया उत्तर अभी अधूरा है। विशेष रूप से यह नोट किया गया है कि निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-5 से 8 में दी गई सूचना/आंकड़ों का संराधन नहीं किया गया है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ उत्पादक/निर्यातक द्वारा प्रस्तुत की गई उत्पादन लागत के बारे में सूचना/आंकड़ों पर विचार नहीं किया गया है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की मैक्सिको में सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर किये गये आवेदन पत्र में मैक्सिको में बिक्री कीमत के आकलन का उल्लेख मैक्सिको में हेरिमन केमसल्ट ने संबद्ध वस्तु की प्रकाशित कीमत के आधार पर किया गया है और उस पर विचार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ किया गया है।

निर्यात कीमत

80. यह नोट किया जाता है कि प्रत्युत्तर दाता उत्पादक एवं निर्यातक ने संबद्ध वस्तु का भारत को सीधे निर्यात किया है। कंपनी ने भाड़ा, बीमा और क्रेडिट व्यय के कारण समायोजन का दावा किया है। अपूर्णता पत्र के प्रत्युत्तर में यह प्रस्तुत किया गया है कि कंपनी के भाड़ा और संभारतंत्र विभाग में एक दर है जिसपर परिवहन कंपनियों के साथ विचार-विमर्श किया जाता है। उस दर से, एक कारक प्राप्त किया जाता है जिसे किसी भी बिक्री, जिसके लिए भाड़ा अपेक्षित होता है, पर लागू किया जाता है। बीमा के लिए यह कंपनी जनरल इंसोरेंस से बीमा कराती है जिसे कारकों के आधार पर प्रतिटन उत्पाद के रूप में आबंटित किया जाता है। प्राधिकारी ने उनके प्रत्युत्तर में उनके द्वारा किये सभी समायोजन दावों सहित निर्यात कीमत को स्वीकार किया है। मासिक आधार पर

इस तरह निर्धारित की गई निर्यात कीमत का प्रयोग उक्त माह के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण में किया गया है।

संबद्ध देशों के प्रत्युत्तरदाता उत्पादक एवं निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन

81. यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने प्रत्युत्तर दाता उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की जांच की और यह नोट किया कि विभिन्न ग्रेडों के रूप में संबद्ध वस्तु की कीमत में, जो प्राथमिकतः विभिन्न के-मूल्य के रूप में होते हैं, कोई संगत अंतर नहीं है। तथापि, माह दर माह तुलना के आधार पर संबद्ध वस्तु की कीमतों में चिन्हित अंतर होता है। इसलिए विस्तृत जांच लंबित होने तथा ऊपर उल्लिखित कारणों और पाटन निर्धारण से संगत शीर्षकों में उल्लिखित कारणों से प्राधिकारी ने सभी संबद्ध वस्तु की तुलना माह वार आधार पर करना उपयुक्त माना है।

82. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए भारत को निर्यात बिक्रियों (निर्यातक द्वारा दावा किये गये और प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किये गये सभी समायोजनों) की तुलना सामान्य मूल्य से की गई। इनियास ग्रुप के निर्यातों के मामले में प्राधिकारी ने उनके द्वारा भारतीय ग्राहकों को किए गए केवल प्रत्यक्ष निर्यातों पर विचार किया है जो उनके द्वारा किए गए कुल निर्यातों का *** प्रतिशत बनता है। प्राधिकारी ने इनियास ग्रुप द्वारा असम्बद्ध व्यापारियों के जरिए किए गए शेष निर्यातों पर विचार नहीं किया है क्योंकि उनसे प्राप्त प्रत्युत्तर पूर्णतया त्रुटिपूर्ण थे। संबद्ध देशों से प्रत्युत्तर दाता उत्पादकों और निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण ऊपर उल्लिखित माह वार आधार पर निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों के बीच तुलना करके की गई है। प्रत्युत्तर दाता उत्पादकों और निर्यातकों के लिए यथा निर्धारित पाटन मार्जिन का उल्लेख पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

83. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध जांच में यूरोपियन यूनियन के कई सहयोगकर्ता उत्पादक और निर्यातक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और उनका संबंधित कंपनियों का एक समूह है। प्राधिकारी की यह संगत परम्परा रही है कि वे संबद्ध निर्यातकर्ता उत्पादकों अथवा एक ही समूह से जुड़े निर्यातकर्ता उत्पादकों को पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए एक एकल निकाय के रूप में मानते हैं और इस प्रकार उनके लिए एक एकल पाटन मार्जिन का निर्धारण करते हैं चूंकि व्यक्तिगत पाटन मार्जिन प्रदान करने से संबंधित निर्यातकर्ता उत्पादकों को भारत को अपने निर्यात न्यूनतम व्यक्तिगत पाटन मार्जिन वाली कंपनी के जरिए करने में सफलता मिलती है और वे पाटन रोधी उपायों को परिवृत्त करने में सक्षम हो जाते हैं और इस प्रकार उन्हें प्रभावहीन बना देता है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए ईयू के सामान्य रूप से संबंधित सभी निर्यातकर्ता उत्पादकों को एक एकल निकाय के रूप में माना गया है और तदनुसार उन्हें एकल पाटन मार्जिन प्रदान किया गया है। इस मार्जिन का परिकलन संबंधित समूहों के सहयोगकर्ता उत्पादकों/निर्यातकों के पाटन मार्जिन के भारित औसत के आधार पर किया गया है।

84. इस तरह संबद्ध देशों के सभी सहयोगकर्ता निर्यातकों/उत्पादकों के लिए जांच की अवधि के दौरान निर्धारित पाटन मार्जिन को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

संबद्ध देशों से अन्य उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन

85. संबद्ध देशों के अन्य निर्यातकों एवं उत्पादकों के बारे में भारत को निर्यात कीमत का निर्धारण सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के आधार पर किया गया है। प्रत्युत्तर दाता निर्यातकों, आवेदनकर्ताओं और डीजीसीआई एंड एस द्वारा प्रदान कराई गई सूचना पर इस प्रयोजन के लिए विचार किया गया है। भाड़ा, बीमा आदि जैसे समायोजन के आधार पर कीमत समायोजन किया गया है। पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए भारत को की गई निर्यात बिक्रियों की तुलना समनुरूपी विनिर्मित सामान्य मूल्य से की गई। निर्यातकों के आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात् पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये के अनुसार किया गया। यह देखा गया कि पाटन मार्जिन बहुत अधिक है।

इनिआस ग्रुप ऑफ कंपनीज (ईयू) और मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास, एसए, डि सी.वी (मैक्सिको) और ईयू और मैक्सिको के शेष बचे उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण							
देश/भू-भाग	उत्पादक	निर्यातक	पाटन मार्जिन अम.डा./मी.टन	पाटन मार्जिन %	समूह पाटन मार्जिन अम.डा./मी.टन	समूह पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज (%)
ईयू	मैसर्स आईएनईओएस विनायल्स ड्यूशलैंड जीएमबीएच, जर्मनी	मैसर्स आईएनईओएस विनायल्स जीएमबीएच, जर्मनी	***	***	***	***	65-75
	मैसर्स आईएनईओएस स्वेरिज एबी, स्वीडेन	मैसर्स आईएनईओएस स्वेरिज एबी, स्वीडेन	***	***			
	मैसर्स आईएनईओएस क्लोर विनायल्स लिमिटेड, बेल्जियम एन वी	मैसर्स आईएनईओएस क्लोर विनायल्स लिमिटेड, बेल्जियम एन वी	***	***			
	*मैसर्स आईएनईओएस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यू.के.	*मैसर्स आईएनईओएस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यू.के.	***	***			
	अन्य	अन्य	***	***	लागू नहीं	लागू नहीं	75-85
मैक्सिको	मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास एस.ए. डि सी.वी	मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास एस.ए. डि सी.वी	***	***	लागू नहीं	लागू नहीं	15-25
	अन्य	अन्य	***	***	लागू नहीं	लागू नहीं	35-45

* दिनांक 01.05.2013 से पूर्व मै0 इनिआस क्लोर विनायल्स लि0 के प्रचालन मै0 इनिआस न्यूटन एक्लीलिक लि0 द्वारा किए जा रहे थे जिसने अपना व्यवसाय दिनांक 01.05.2013 से मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड (यूके) को अंतरित कर दिया है।

क्षति

आयातकों, निर्यातकों, प्रयोक्ताओं और प्रयोक्ता एसोसिएशनों द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

संबद्ध जांच में निर्यातकों ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया है:

- क. भारतीय उत्पादकों की वार्षिक रिपोर्ट क्षति नहीं दर्शाती है। इसके विपरीत, यह कीमत और राजस्व में वृद्धि दर्शाती है। रिलायंस की रिपोर्ट में वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में बिक्री राजस्व और निबल आय में वृद्धि दर्शायी गयी है। फिनोलेक्स की वार्षिक रिपोर्ट में वर्ष 2011-12 में उत्पादन और बिक्री राजस्व में वृद्धि दर्शायी गयी है।
- ख. संबद्ध देशों से आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर कोई ऋणात्मक प्रभाव नहीं हुआ। प्रकाशित रिपोर्टें दर्शाती हैं कि घरेलू उद्योग अपनी कीमतें बढ़ाने में सक्षम रहा है रिलायंस एचआईएस कैमिकल्स मार्केट सर्विसेस और आईसीआईएस के संबंध में प्रकाशित सूचना का संदर्भ दिया गया है, जिसने कीमतों में वृद्धि रिपोर्ट की है।
- ग. देश में पर्याप्त मांग-आपूर्ति अंतराल है। इस उत्पाद की लगभग 44 प्रतिशत मांग आयातों के जरिए पूरी की जा रही है। इसलिए देश में इस उत्पाद की घरेलू मांग को पूरा करने हेतु आयात आवश्यक है।
- घ. फिनोलेक्स द्वारा माह जुलाई, 2011 में उत्पादन अनियोजित रूप से बंद कर दिये जाने के कारण संबंधित आयात आवश्यक हो गये थे।

- ड. यूरोपियन यूनियन देश में इस उत्पाद का प्रमुख आपूर्तिकर्ता नहीं है यूरोपियन यूनियन से किये जाने वाले आयात कुल आयातों का केवल 5.4 प्रतिशत है और वे घरेलू उद्योग को क्षति कारित नहीं कर सकते हैं।
- च. घरेलू उद्योग पहले से ही उच्च क्षमता के साथ प्रचालन कर रही है और फिर भी अभी भारी मांग आपूर्ति अंतराल है। देश में इस उत्पाद की मांग को पूरा करने के लिए आयात आवश्यक है।
- छ. देश में इस उत्पाद की बढ़ती मांग के अनुरूप घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमताओं में विस्तार नहीं किया है।
- ज. घरेलू उद्योग की क्षति प्राथमिकतः अन्य देशों से आयातों के कारण हुई है जिनके बारे में इस समय निर्णायक समीक्षा जांच की जा रही है।
- झ. भारतीय बाजार में कीमतें निर्णायक समीक्षा के अंतर्गत आयातों द्वारा प्रस्तुत कीमतों से संचालित होती है। इनिआस तथा भारतीय ग्राहकों के बीच बिक्री वार्ताएं यह स्थापित करती है कि कीमतों को निर्णायक समीक्षा जांच वाले देशों के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत कीमतों से शासित किया जाता है।
- ञ. उद्योग को होने वाली क्षति स्वतः स्फूर्त है क्योंकि उद्योग ने बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए अपने क्षमताओं में विस्तार नहीं किया है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग को लागत घाटा हुआ है क्योंकि वे वर्टिकल रूप से एकीकृत उत्पादकों, जिनका वीसीएम का ग्राही उत्पादन है, की तुलना में वीएसएम पर होने वाली उच्च लागत वहन करते हैं। इसके अतिरिक्त फिनोलेक्स आयातों ने उद्योग को क्षति कारित की हैं।
- ट. भारतीय उत्पादकों की उत्पादन लागत में बढ़ोतरी हुई है जो क्षति का एक कारण है। फिनोलेक्स ने वर्ष 2011-12 के दौरान विद्युत, फरनेस ऑयल, एलपीजी और एचएसडी/ एसकेओ, नेफथालाइड के संबंध में भारी बढ़ोतरी रिपोर्ट की है जबकि एचआईएस ने रिपोर्ट किया है कि घरेलू बाजार कच्चे माल की बढ़ती हुई कीमतों से संचालित होती है जिसकी घरेलू उत्पादक अपनी बिक्री कीमत बढ़ाकर भरपाई करना चाहते हैं।
- ठ. एचआईएस ने रिपोर्ट किया है कि विनायल फीडस्टाक की सीमित उपलब्धता के कारण कीमतें अधिक हैं जो नये विनायल संयंत्र में निवेश को प्रतिबंधित करना जारी रखेगा।
- ड. घरेलू उद्योग पर स्थानिक ढांचागत समस्या का प्रभाव पड़ता है।
- ढ. पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करना उपभोक्ताओं के हितों के हित में नहीं होगा क्योंकि इससे उसके नीचे के उपभोक्ताओं पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ेगा। देश मांग आपूर्ति अंतराल का सामना कर रहा है। घरेलू उद्योग अपनी क्षमताएं बढ़ाने के प्रति बचनबद्ध नहीं है। भारत में खपत की तुलना में क्षमता बहुत कम है। यूरोपियन यूनियन से होने वाले आयात भारतीय ग्राहकों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिससे यह सुनिश्चित होता है कि भारतीय ग्राहकों को प्रमुख रसायन बिल्डिंग ब्लॉक तक अप्रतिबंधित पहुंच प्राप्त है। शुल्क का अधिरोपण पीवीसी कनवर्टर्स की लागत को बढ़ाएगा। शुल्क का अधिरोपण से निर्णायक समीक्षा जांच देशों को यूरोपिय आपूर्तिकर्ताओं के समान संवर्धित बाजार पहुंच प्राप्त होगी।
- ण. फिनोलैक्स और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड दोनों ने मांग में वृद्धि की सूचना दी है। इसके अलावा, फिनोलैक्स ने वर्ष 2011-12 में उत्पादन, बिक्री राजस्व के रूप में वृद्धि सूचित की है, रिलायंस ने वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में निवल आय में वर्षानुवर्ष 24 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है।
- त. संबद्ध देशों से हुए आयातों में किसी वृद्धि का घरेलू बिक्री कीमत पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है। रिलायंस, एचआईएस कैमिकल मार्किट सर्विस और आई सी आई एस ने भारत में आपूर्तिकर्ताओं द्वारा पीवीसी सस्पेंशन की कीमतों में वृद्धि की सूचना दी है।
- थ. तीसरे देश के निर्यातकों द्वारा पाटन। कीमतें एस एस आर संबद्ध देशों के मूल के उत्पाद की उपलब्धता द्वारा नियंत्रित होती हैं। इसका समर्थन इनिओस और भारतीय ग्राहकों के बीच जांच अवधि के दौरान हुई बिक्री वार्ताओं के साक्ष्य से होता है।

- द. यह मामला स्वोद्भूत क्षति का मामला है क्योंकि घरेलू उद्योग पूंजीकरण हेतु आवश्यक निवेश करने में विफल रहा है और घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत में हानि हुई है क्योंकि वे वीसीएम का आयात करते हैं जबकि संबद्ध देशों के उत्पादक लंबवत् रूप से समेकित आपूर्ति श्रृंखला से लाभान्वित होते हैं जिससे उत्पादन लागत में कमी आती है। यह भी उल्लेख किया गया है कि जहां फिनोलैक्स ई यू, ताइवान और अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद का आयात करती है और इस प्रकार पीवीसी के आयात और उसकी कीमतें प्रभावित होती हैं।
- ध. फिनोलैक्स ने वर्ष 2011-12 के दौरान विद्युत, भट्टी तेल, एल पी जी और एच एस डी/एसकेओ, नेफ्थालाइड के बारे में भारी वृद्धि की सूचना दी है, एचआईएस ने यह सूचना दी है कि घरेलू बाजार कच्ची सामग्री की लागत में वृद्धि द्वारा नियंत्रित है जिसके लिए घरेलू उत्पादक बिक्री कीमत पर वृद्धि के जरिए भरपाई करना चाहते हैं।
- न. इसका भारत में प्रमुख अनुषंगी उद्योग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और इससे भारत वैश्विक मांग-आपूर्ति के अंतर की दृष्टि से अलग-थलग पड़ जाएगा।
- प. पाटनरोधी शुल्क से पीवीसी कन्वर्टर्स की लागत में वृद्धि होगी।
- फ. मैक्सिको की सरकार द्वारा यह उल्लेख किया गया है कि वर्तमान वैश्विक आर्थिक मंदी में दोनों देशों के बीच व्यापार का मुक्त प्रवाह अनिवार्य है। इसके अलावा, यह उल्लेख किया गया है कि सामान्य मूल्य का साक्ष्य मैक्सिको में कीमत पर आधारित नहीं है। 17 अलग-अलग टैरिफ मदों में मैक्सिको से विचाराधीन उत्पाद के आयातों का कोई साक्ष्य नहीं है। मैक्सिको से आयातित पीवीसी रेजिन के ग्रेडों का कोई विश्लेषण नहीं किया गया है और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त ग्रेडों के साथ उनकी तुलना नहीं की गई है। उच्चतम स्तर पर किए गए आयात भी देश में उत्पाद की मांग के केवल 2.7 प्रतिशत बनते हैं। अन्य एस एस आर देशों से हुए आयात अपेक्षाकृत अधिक हैं और इनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है। वर्तमान देशों से आयात काफी कम होने के कारण इनका घरेलू उद्योग कीमतों पर प्रभाव नहीं पड़ सकता है। मैक्सिको से आयात कीमत में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। बिक्री कीमत और उत्पादन लागत दोनों में वृद्धि हो रही है और उत्पादन लागत में हुई वृद्धि बिक्री कीमत में हुई वृद्धि से अधिक है। यह भी उल्लेख किया गया है कि मैक्सिको की सरकार को जांच की शुरुआत से पूर्व सूचित नहीं किया गया था।

घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

86. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित तर्क दिया है:—

- (क) संबद्ध देशों से आयातों के प्रभावों का संचयी आकलन करना उपर्युक्त होगा क्योंकि प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन विहित न्यूनतम से अधिक है, प्रत्येक संबद्ध देश से निर्यात की मात्रा न्यूनतम निर्धारित से अधिक है संबद्ध देशों से निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई समान वस्तु से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं।
- (ख) घरेलू उद्योग को वर्तमान संबद्ध देशों तथा उन अन्य देशों, जिनके लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा की है, से पाटित आयातों के कारण क्षति हो रही है।
- (ग) संपूर्ण क्षति अवधि में देश में मांग/स्पष्ट खपत में निरंतर वृद्धि हुई है।
- (घ) आधार वर्ष और विगत वर्ष से तुलना करने पर जांच की अवधि में संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है।
- (ङ.) घरेलू उद्योग तथा अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में जांच की अवधि में गिरावट आयी है जबकि संबद्ध देशों से होने वाले आयातों में वृद्धि हुई है।
- (च) क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में कमी आई है जबकि इसमें वर्ष 2009-10 से जांच की अवधि तक वृद्धि हुई है।

- (छ) क्षति अवधि के दौरान बिक्री की मात्रा में वृद्धि हुई है।
- (ज) मात्रा क्षति पैरा मीटर जैसे उत्पादन और बिक्री अलग से क्षति प्रदर्शित नहीं करते हैं। यह इस कारण है कि इस उत्पाद और उत्पादन प्रक्रिया की प्रकृति ऐसी है कि घरेलू उत्पादक न्यून उपयोगिता दरों पर अपना संयंत्र चलाना सहन नहीं कर सकते हैं। संयंत्रों को नियंत्रण रूप से और उच्च उपयोगिता दर से चलते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त घरेलू उत्पादक इस उत्पाद की उच्च माल सूची नहीं रख सकते हैं। इस उत्पाद की बिक्री घरेलू उत्पादकों द्वारा किसी भी कीमत पर की जा सकती है।
- (झ) प्रति इकाई लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ में क्षति अवधि के दौरान इतनी अधिक सीमा तक गिरावट आई की क्षति अवधि में यह सभी पैरामीटर ऋणात्मक हैं।
- (ञ) वेतन में वृद्धि हुई है। परंतु यह तथ्यों और परिस्थितियों पर विचार करते हुए प्रत्याशित है। आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में रोजगार में वृद्धि हुई है परंतु विगत वर्ष की तुलना में इसमें गिरावट आयी है।
- (ट) घरेलू उत्पादक मुख्यतः घरेलू बाजार में वस्तु की बिक्री कर रहे हैं जो "सुपुर्दगी पर भुगतान" के रूप में भुगतान की पेशकश कर रहे हैं। वस्तुतः कई मामलों में भुगतान पहले प्राप्त किया जाता है और सामग्री की सुपुर्दगी उसके बाद की जाती है। इसके विपरीत विदेशी उत्पादक 90 दिन तक ब्याजमुक्त ऋण की पेशकश कर रहे हैं। इसका सत्यापन प्रश्नावली के उत्तरों से किया जा सकता है जिन्हें प्रतिवादी निर्यातकों ने दायर किया है। चूंकि घरेलू उद्योग और विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत ऋण अलग-अलग हैं, इसलिए क्षति रहित कीमत की तुलना ऋण अवधि में अंतर हेतु दोनों में से किसी एक का समुचित समायोजन करने के बाद आयातों की पहुंच कीमत के साथ करनी अपेक्षित है।
- (ठ) घरेलू उत्पादकों द्वारा देश के भीतर अपनी फैक्ट्री के भांडागारों से डिपो भांडागारों तक उत्पाद की दुलाई में पर्याप्त भाड़ा लागत खर्च की जा रही है। ग्राहकों को इन डिपो भांडागारों से वस्तु की बिक्री की जाती है।
- (ड) जहां तक कार्यशील पूंजी का संबंध है, यह उल्लेख किया गया है कि विगत में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने लगाई गई पूंजी के निर्धारण के प्रयोजनार्थ नकारात्मक कार्यशील पूंजी को शून्य माना है। बहरहाल निवल निर्धारित परिसंपत्तियों से नकारात्मक कार्यशील पूंजी को घटाना अनुचित और लेखा सिद्धांतों के विपरीत होगा।
- (ढ) याचिकाकर्ताओं का अनुरोध है कि चूंकि प्रश्नावली के उत्तर अधूरे हैं, इसलिए पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु उन्हें अस्वीकृत करना अपेक्षित है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

87. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये प्रस्तुतिकरणों पर ध्यान दिया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षति की जांच पाटनरोधी नियमावली के अनुरूप की है।

88. प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद से संबंधित घरेलू उद्योग के आंकड़ों पर विचार किया है। अतः, रिलायंस और फिनोलेक्स की लाभ प्रदायकता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिये गये तर्क का प्राधिकारी द्वारा किये गये विश्लेषण से कोई प्रासंगिकता नहीं है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादकों में से एक ने विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण करने के लिए वर्ष 2009-10 में कुड्डालोर स्थित अपने ग्रीन फील्ड संयंत्र में वाणिज्यिक उत्पादन प्रारंभ कर दिया था। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस घरेलू उत्पादक को उचित ढंग से तर्क संगत क्षमता से प्रचालन करने के बावजूद अपने प्रारंभ से ही इसे क्षति हुई है क्योंकि उसपर पाटित आयातों द्वारा कीमत दबाव अधिरोपित किया गया है। एक हितबद्ध पक्षकार ने यह प्रस्तुत किया है कि विचाराधीन उत्पाद की घरेलू आपूर्ति में कमी आई है और इसलिए आयात जरूरी हो गये हैं। प्राधिकारी धारित करते हैं कि घरेलू आपूर्ति में गिरावट की भरपाई करने के लिए होने वाले आयातों में कोई खराबी नहीं है परंतु यह आयात गैर पाटित और उचित कीमतों पर होने चाहिए जिससे घरेलू उद्योग को कोई

नुकसान न हो। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है परंतु यह वृद्धि इतनी पर्याप्त नहीं थी जो बढ़ी हुई उत्पादन लागत खासकर प्रमुख कच्चे माल की लागत को पूरा कर सकने में सक्षम होती। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयातों द्वारा कारित कीमत निग्रहण ने घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन पर विपरीत प्रभाव डाला है। जहां तक ई यू के इस अनुरोध का संबंध है कि घरेलू उद्योग को अनुमत 22 प्रतिशत का लाभ मार्जिन काफी अधिक है और इसका प्रयोग लगाई गई पूंजी के बजाए उत्पादन लागत पर प्रयोग किया गया प्रतीत होता है, यह नोट किया जाता है कि पाटनरोधी नियमों के अनुसार और उसकी सुसंगत पद्धति के अनुसार लगाई गई पूंजी पर 22 प्रतिशत की दर से लाभ की अनुमति केवल लगाई गई पूंजी पर प्रदान की गई है न कि उत्पादन लागत पर।

89. नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कीमत और मात्रा प्रभाव दोनों की जांच करेंगे। क्षति निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार ने सामान्य वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और (ख) और घरेलू उद्योग पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव दोनों की उद्देश्य परक जांच करना अंतरग्रस्त होती है। पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी से यह विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में भारत में उत्पादन अथवा खपत के संगत रूप में या समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों का कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा पर्याप्त कीमत अधोरदन किया जा रहा है या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण करने अथवा कीमतों की वृद्धि को कम करने पर होगा जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुई होती।

90. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-2 के पैरा (II) में निम्नलिखित उल्लेख किया गया है:

“संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक कारकों और देशनाकों का मूल्यांकन शामिल होता है जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव होता है जिनमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर अर्जन अथवा क्षमता उपयोग में प्राकृतिक और संभावित गिरावट घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित ऋणात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता शामिल होते हैं।”

91. यह स्पष्ट रूप से माना जाता है कि क्षति के सभी पैरामीटरों में गिरावट प्रदर्शित होना आवश्यक है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को सभी क्षति पैरामीटरों पर विचार करना चाहिए और उसके पश्चात् यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

92. प्राधिकारी ने प्रस्तुतिकरणों में किये गये तर्कों और दिये गये तथ्यों को ध्यान में रखते हुए क्षति के सभी पैरा मीटरों की उद्देश्यपरक जांच की है।

93. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-2 के पैरा (II) में प्रावधान है कि यदि एक से अधिक देशों से उत्पाद के आयात के मामले में पाटनरोधी जांच समान रूप से चल रही है तो प्राधिकारी इन आयातों के प्रभाव का आकलन संचयी रूप से केवल तभी करेंगे जब प्राधिकारी यह निर्धारित करते हों कि:-

क. आयात के संबंध में प्रत्येक देश से स्थापित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त दो प्रतिशत से अधिक हो और प्रत्येक देश से आयात की मात्रा उस समान वस्तु के आयात का तीन प्रतिशत हो या जहां किसी एक देश का निर्यात तीन प्रतिशत से कम हो वहां आयात सामूहिक रूप से उस समान वस्तु के आयातों का सात प्रतिशत से अधिक हो और

ख. आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्त के आलोक में आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उपर्युक्त होगा।

94. इस संबंध में प्राधिकारी यह प्रेक्षा करते हैं कि:

क. प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमा से अधिक हो;

ख. चूंकि संबद्ध देशों से निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तु के साथ प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा करते हैं इसलिए आयातों के प्रभावों का संचयी आकलन करना उपयुक्त होता है। यह निम्नलिखित से स्पष्ट है:-

- i. संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा परस्पर विनिर्मित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद के बीच तुलना में तुलनीय गुणधर्म होते हैं। दूसरे शब्दों में, विभिन्न संबद्ध देशों से आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की संबद्ध वस्तु परस्पर समान वस्तु होती है।
- ii. प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत जानकारी एक तर्कसंगत संकेत देती है कि घरेलू और आयातित सामग्री का प्रयोग अदल-बदलकर किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद और परस्पर आयातित उत्पाद के बीच सीधी प्रतिस्पर्धा है।
- iii. प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा बहुत अधिक है।
- iv. उपभोक्तागण विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत कीमतों के आधार पर क्रय करने का निर्णय लेते हैं।

95. उपर्युक्त के आलोक में प्राधिकारी विचार करते हैं कि ईयू और मैक्सिको से संबद्ध वस्तु के आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु के साथ आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्त के आलोक में करना उपयुक्त होगा।

96. हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता कंपनियों अथवा फिनोलेक्स की वार्षिक रिपोर्ट कोई क्षति प्रदर्शित नहीं करती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस संबंध में उल्लेख या तो वार्षिक रिपोर्टों में रिपोर्ट की गई मात्रा में वृद्धि का किया गया है या बिक्री राजस्व में वृद्धि या वार्षिक रिपोर्टों में उल्लिखित बिक्री कीमत में वृद्धि का उल्लेख किया गया है। इस तर्क के संबंध में कि याचिकाकर्ताओं की वार्षिक रिपोर्टें आय में वृद्धि प्रदर्शित करती हैं यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित और बेची गई संबद्ध वस्तु की लागत और कीमत की जांच की है और उनके द्वारा उत्पादित एवं बेची गई संबद्ध वस्तु के बारे में घरेलू उद्योग की लाभ प्रदायकता का आकलन किया गया है जिसका उल्लेख उपर्युक्त शीर्षकों में किया गया है।

97. इस तर्क के संबंध में कि यूरोपियन यूनियन बाजार में इस उत्पाद का प्रमुख आपूर्तिकर्ता नहीं है, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध जांच पाटन रोधी नियमावली में उल्लिखित शर्तों के अनुरूप की गई है और पाटनरोधी नियमावली में प्राधिकारी से विभिन्न पाटित स्रोतों से आयातों के बीच विभेद करने की अपेक्षा नहीं की जाती है। प्राधिकारी से उन विभिन्न स्रोतों से पाटित आयातों द्वारा कारित की जा रही क्षति को पृथक् करने की अपेक्षा नहीं की जाती है जो पृथक् जांच की विषय-वस्तु होते हैं। इसके अतिरिक्त नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वे यह जांच करेंगे कि क्या पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग को क्षतिकारित की है या नहीं।

98. इस तर्क के संबंध में कि पर्याप्त मांग आपूर्ति अंतराल के बावजूद घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमताओं में विस्तार नहीं किया है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद के संबंध में निरंतर विपरीत बाजार परिस्थितियों ने घरेलू उद्योग को अपनी क्षमताओं में और अधिक वृद्धि करने से वंचित कर दिया है।

99. इस तर्क के संबंध में कि बाजार में कीमतों का निर्धारण निर्णायक समीक्षा के जरिए पृथक् जांच के अधीन देशों द्वारा किया जाता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोप से माह दर माह कीमत और निर्णायक देशों से आयातों की तुलना यह दर्शाती है कि यूरोपियन यूनियन से आयात कीमत भी पाटित कीमत है और वर्तमान मामले में ईयू और मैक्सिको के संबंध में पाटन मार्जिन बहुत अधिक पाया गया है।

100. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह प्रावधान है कि इसमें (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; और (ख) इस समान वस्तु के घरेलू

उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच करना अंतर्ग्रस्त होगा। पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या पाटित आयातों में भारी मात्रा में भारत में खपत या उत्पादन के संबंध में अथवा समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन किया जा रहा है अथवा इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण करने पर पड़ रहा है अथवा यह उन कीमतों को बढ़ाने से रोक रहा है जिनमें अन्यथा भारी मात्रा में वृद्धि हुई होती।

पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

संबद्ध देशों की आयात मात्रा एवं हिस्सा

101. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों में जांच की अवधि सहित क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप में भारी वृद्धि हुई है अर्थात् यह वर्ष 2008-09 में 38415 मी.टन से बढ़कर वर्ष 2011-12 (जांच अवधि) में 137638 मी.टन हो गई।

आयातों की मात्रा	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
संबद्ध देश	मी.टन	38,415	71,650	50,386	1,37,638
ईयू	मी.टन	34,294	59,697	39,454	1,02,970
मैक्सिको	मी.टन	4,121	11,953	10,933	34,667
वे देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	मी.टन	1,84,282	4,10,357	4,47,600	5,63,008
प्रवृत्ति		100	223	243	306
अन्य देश	मी.टन	12,615	63,729	52,482	50,382
प्रवृत्ति		100	505	416	399
कुल आयात	मी.टन	2,35,312	5,45,736	5,50,468	7,51,027
प्रवृत्ति		100	232	234	319
घरेलू उत्पादन	मी.टन	1,025,900	1,075,652	1,237,987	1,240,352
घरेलू उत्पादन की तुलना में संबंध संबद्ध देशों से आयात	%	4	7	4	11
मांग	मी.टन	12,08,513	15,30,783	17,30,485	18,80,092
खपत की तुलना में देशों से आयात	%	3	5	3	7
कुल आयातों में संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा	%	16	13	9	18

102. प्राधिकारी इस समय चीन जन.गण., ताईवान, इंडोनेशिया, जापान, मलेशिया, थाईलैंड, कोरिया आरपी और यूएसए से आयातों के बारे में निर्णायक समीक्षा कर रहे हैं। यह नोट किया जाता है कि इन देशों से आयातों में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान भी वृद्धि हुई है, यद्यपि पिछले वर्ष की तुलना में उनमें गिरावट आयी है। अन्य देशों से आयातों में भी वर्ष 2009-10 से जांच की अवधि तक समग्र रूप से गिरावट आयी है।

103. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उत्पादन के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि जो वर्ष 2008-09 में 4 प्रतिशत थी, जांच की अवधि में इसमें वृद्धि होकर 11 प्रतिशत हो गई। भारत में कुल मांग अथवा स्पष्ट खपत की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि जो वर्ष 2008-09 में 3 प्रतिशत थी जांच की अवधि में बढ़कर 7 प्रतिशत हो गई। इसी तरह कुल आयातों के संबंध में संबद्ध देशों से आयात जो वर्ष 2008-09 में 16 प्रतिशत थे जांच की अवधि में बढ़कर 18 प्रतिशत हो गये। अतः प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप से और तुलनात्मक रूप से दोनों रूपों में वृद्धि हुई है।

मांग एवं बाजार हिस्से का आकलन

104. संबद्ध वस्तु की मांग निर्धारण घरेलू समान उत्पाद की घरेलू बिक्रियों को सभी देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के साथ जोड़कर किया जाता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में बढ़ोतरी हुई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
कुल घरेलू बिक्री	मी. टन	7,87,181	8,17,655	9,77,281	9,78,779
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	124	124
कुल आयात	मी. टन	2,35,312	5,45,736	5,50,468	7,51,027
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	232	234	319
मांग	मी. टन	12,08,513	15,30,783	17,30,485	18,80,092
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	143	156
संबद्ध देशों से आयात	मी. टन	38,415	71,650	50,386	1,37,638
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	187	131	358
मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	65	53	56	52
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	82	87	80
मांग में संबद्ध देशों से आयात का हिस्सा	%	3	5	3	7
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	147	92	230
मांग में ऐसे देशों से हुए आयात का हिस्सा जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	%	15	27	26	30
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	176	170	196
मांग में अन्य देशों से आयात का हिस्सा	%	1	4	3	3
प्रवृत्ति	अनुक्रमणिका	100	399	291	257

105. यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष और विगत वर्ष से तुलना करने पर जांच की अवधि में संबद्ध देशों से आयातों की मांग में बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। इसी बीच आधार वर्ष और विगत वर्ष से तुलना करने में जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आयी है।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

कीमत कटौती

106. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में यह जांच की गई कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों का पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत में भारी कटौती हुई है, अथवा क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण करने अथवा कीमतों में वृद्धि होने से रोकने पर रहेगा जो अन्यथा भारी मात्रा में हुई होती। इस संबंध में संबंधित उत्पाद के उतराई मूल्य और घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के बीच व्यापार के समान स्तर पर सभी निवल छूटों और करों की तुलना की गई। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण फैक्ट्री वाह्य स्तर पर किया गया। यह तुलना दर्शाती है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में आयात उन कीमतों पर किया गया जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से न्यूनतर थी। अतः यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयात घरेलू कीमतों में कटौती कर रहे थे और कटौती का यह मार्जिन बहुत अधिक माना गया है।

107. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर पड़े प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कीमत अधोबिक्रयण, और कीमत अवमंदन अथवा कीमत निग्रहण, यदि कोई, के संदर्भ में की गई। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और गैर क्षतिकारी कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की उतराई लागत से की गई।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
घरेलू निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	110	118
आयातों की उतराई कीमत					
संबद्ध देश	रु./मी.टन	35,518	45,153	45,906	51,893
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	129	146
ईयू	रु./मी.टन	35,565	46,049	45,583	51,980
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	129	128	146
मैक्सिको	रु./मी.टन	35,127	40,679	47,071	51,635
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	134	147
कीमत कटौती					
संबद्ध देश	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	36	54	34
ईयू	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	29	57	34
मैक्सिको	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	72	42	35

कीमत कटौती					
संबद्ध देश	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	28	41	24
ईयू	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	22	44	23
मैक्सिको	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	62	32	24
कीमत कटौती रेंज					
संबद्ध देश	%	30-40	5-15	10-20	5-15
ईयू	%	30-40	5-15	10-20	5-15
मैक्सिको	%	30-40	20-30	10-20	5-15

108. उपयुक्त से नोट किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश व्यक्तिगत रूप से भी घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं।

कम कीमत पर बिक्री

109. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा की जा रही कम कीमत पर बिक्री की जांच भी की है। विधिवत जांच के पश्चात यह देखा गया कि संबद्ध देशों से भारत में संबद्ध वस्तु की उतराई कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित गैर क्षतिकारी कीमत से कम रही है जिसके कारण कम कीमत पर बिक्री हुई है। कम कीमत पर बिक्री मार्जिन का निर्धारण गैर क्षतिकारी कीमत और मासिक आधार पर उतराई मूल्य पर विचार करते हुए किया गया है।

विवरण	जांच की अवधि
कम कीमत पर बिक्री अम.डा./मी.टन	
ईयू	***
मैक्सिको	***
कम कीमत पर बिक्री %	
ईयू	***
मैक्सिको	***
कम कीमत पर बिक्री (% रेंज)	
ईयू	0-10
मैक्सिको	0-10

कीमत अवमंदन एवं निग्रहण

110. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग कीमत निग्रहण के कारणों से विपरीत रूप से प्रभावित नहीं हुआ है क्योंकि क्षति अवधि के दौरान घरेलू बिक्री कीमत में वृद्धि हुई है।

111. तथापि, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग पर कीमत निग्रहण के कारण विपरीत प्रभाव पड़ा है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू समान उत्पादों की उत्पादन और बिक्री लागत में वर्ष 2009-

10 में गिरावट आने के पश्चात वर्ष 2010-11 और जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में भी संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री कीमत में हुई यह वृद्धि संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और बिक्री लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में नहीं हुई है। यह कीमत निग्रहण बहुत अधिक माना जाता है।

(रुपये प्रति मी.टन)

विवरण	2008-	2009-10	2010-11	पीओआई
बनाने और बेचने की लागत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	91	103	126
आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि (गिरावट) (%)	-	(9)	3	26
घरेलू बिक्री कीमत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	105	109	116
आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि (गिरावट) (%)	-	5	9	16

घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर

112. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह अपेक्षा की जाती है कि क्षति के निर्धारण में इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभावी की उद्देश्यपरक जांच करना अंतर्ग्रस्त होगा। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभावी के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में पुनः यह प्रावधान किया जाता है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयतों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारको और उन देशनाकों की उद्देश्यपरक और पक्षपातरहित जांच अंतर्ग्रस्त होगी जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव होता है। इसमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर अर्जन अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा; नकदी प्रवाह, मालसूची, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल है। घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच यह व्यक्त करती है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति पैरामीटरों पर निम्नानुसार चर्चा की गई है।

उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री

113. घरेलू उद्योग द्वारा यह प्रस्तुत किया गया कि उन्होंने अपनी क्षमता में वृद्धि की जिसने वर्ष 2009-10 में वाणिज्यिक उत्पादन करना प्रारंभ कर दिया और यह वर्ष 2010-11 में पूरी तरह से प्रचलनात्मक हो गया जिससे उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हुई है। यह नोट किया जाता है कि उत्पादन की मात्रा और घरेलू बिक्रियों में वृद्धि हुई। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आयी है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
क्षमता	मी.टन	808,320	897,745	1,029,320	1,029,320
उत्पादन	मी.टन	784,884	833,651	977,797	985,559
क्षमता उपयोग	%	97.10	92.86	94.99	95.75
घरेलू बिक्रियां	मी.टन	769,326	800,227	951,324	951,941

114. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग के घरेलू उत्पादन और घरेलू बिक्री की मात्रा में उक्त अवधि में सुधार हुआ है। तथापि, समूची क्षति अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।

115. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मांग और आपूर्ति में पर्याप्त अंतर होने के बावजूद घरेलू उद्योग ने क्षमताओं का विस्तार नहीं किया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि यह सच है कि घरेलू उद्योग मांग को पूरा करने में समर्थ नहीं हो सकता है। तथापि, इससे पाटन की मौजूदगी और घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल कीमत प्रभाव न्यायोचित नहीं ठहरता है। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद के बारे में सतत प्रतिकूल बाजारी स्थितियों की वजह से घरेलू उत्पादक क्षमताओं में आगे विस्तार करने से वंचित हुए हैं।

लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ

116. घरेलू उद्योग की लाभप्रतद और निवेश पर आय के बारे में आंकड़े निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं :-

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच की अवधि
कर पूर्व लाभ/हानि	रुपये/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	238	169	17
कर पूर्व लाभ/हानि	रुपये /लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	248	208	21
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ/हानि	रुपये/ लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	210	177	28
नकद लाभ	रुपये /लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	231	196	27
आरओसीई	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	156	167	26

117. घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता का निर्धारण उत्पादन और बिक्री की लागत तथा बिक्री कीमत पर विचार करते हुए किया गया है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में वर्ष 2009-10 में वृद्धि हुई और इसके पश्चात इसमें गिरावट आ गई। जांच की अवधि के दौरान लाभप्रदायकता में तीव्र गिरावट आयी है। इसके अतिरिक्त, लाभप्रदायकता में इस तीव्र गिरावट के परिणामस्वरूप जांच की अवधि में कर पूर्व लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में भी तीव्र गिरावट आयी है।

बाजार हिस्सा

118. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में जांच की अवधि में गिरावट आयी है जबकि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है।

बाजार हिस्सा	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	जांच अवधि
मांग	मी.टन	12 08 513	15 30 783	17 30 485	18 80 092
घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	65	53	56	52
संबद्ध देशों का हिस्सा	%	3	5	3	7

119. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि यूरोपीय यूनियन बाजार में उत्पाद का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी से अलग-अलग पाटित स्रोतों के बीच भेद करने की

अपेक्षा नहीं की जाती है। प्राधिकारी से यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वह ऐसे अलग-अलग स्रोतों, जो पृथक जांच के विषय हैं, से पाटित आयातों के कारण हुई क्षति हो अलग-अलग करें। इसके अलावा, नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की गई है कि वह इस बात की जांच करें कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। ऐसी स्थिति में जहां विभिन्न स्रोतों से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है और जहां विभिन्न जांचों के जरिए ऐसे विभिन्न स्रोत जांचाधीन हैं वहां नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी से विभिन्न स्रोतों से कारणात्मक संबंध की सीमा निर्धारित करने की अपेक्षा की गई है।

रोजगार, उत्पादकता एवं वेतन

120. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के रोजगार में वर्ष 2008-09 से वर्ष 2009-10 तक वृद्धि हुई है जबकि इसमें इसके पश्चात गिरावट आयी है। क्षति अवधि के दौरान भुगतान किये गये वेतन में वृद्धि हुई है। प्रतिदिन उत्पादकता और प्रतिकर्मचारी उत्पादकता में भी वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	पीओआई
रोजगार	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	115	115
उत्पादकता प्रतिदिन	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	125	126
उत्पादकता प्रतिकर्मचारी	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	91	108	109
वेतन	लाख रुपये	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	144	161

मालसूची

121. नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत आंकड़ों से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की औसत मालसूची स्तर में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई परंतु जहां की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आ गयी। तथापि क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में तीव्र वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2008-09	2009-10	2010-11	पीओआई
औसत स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमणिका	100	299	395	283

कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

122. यह नोट किया जाता है कि बाजार स्थितियां घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद का प्रयोग करने के लिए अनुकूल हैं और फिर भी बाजार घरेलू उद्योग को अपना उत्पाद क्षतिकारी कीमतों पर बेचने के लिए मजबूर कर रही है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के प्रचालनात्मक कार्यनिष्पादन में गिरावट देश में आ रहे पाटित आयातों के कारण आई है। विचाराधीन उत्पाद की क्षमता देश में इस उत्पाद की मांग की तुलना में न्यूनतर है और इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि घरेलू उद्योग अपने उत्पाद की बिक्री मजबूर होकर कम कीमतों पर कर रही है। बाजार में आयातों की भारी उपस्थिति और घरेलू उद्योग द्वारा दिये गये तर्क पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें आयात कीमतों के अनुरूप निर्धारित करने के लिए ऐसी स्थिति में मजबूर किया गया जब घरेलू उद्योग वीसीएम में उतार चढ़ाव पर विचार करते हुए अपनी कीमतें स्वयं निर्धारित करना चाहता था। घरेलू उद्योग ने विशेष रूप से यह तर्क दिया है कि उसे वीसीएम परिवर्तन के कारण उसकी लागत में हुई वृद्धि अथवा कमी के आधार पर अपनी कीमतें घटाने अथवा बढ़ाने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए था। तथापि, चूंकि आयातित

वस्तुओं का बाजार पर कब्जा है इसलिए घरेलू उद्योग को विदेशी उत्पादन कर्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई कीमतों पर विचार करते हुए अपनी कीमतें निर्धारित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। अतः यह नोट किया जाता है कि घरेलू कीमत के स्तर को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक वह कीमत है जिस पर आयातित वस्तुएं देश में प्रवेश कर रही थी।

वृद्धि

123. यद्यपि घरेलू उद्योग ने मात्रा के रूप में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है तथापि इसने वित्तीय रूप से भारी ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है। यह भी नोट किया गया कि जांच की अवधि के दौरान मात्रा रूप में वृद्धि बहुत कम थी और जांच की अवधि के दौरान वित्तीय पैरामीटरों में वृद्धि भारी ऋणात्मक थी।

		2008-09	2009-10	2010-11	पीओआई
वृद्धि					
उत्पादन	%	-	6.21	17.29	0.79
घरेलू बिक्री	%	-	4.02	18.88	0.06
लाभ	%	-	***	(***)	(***)
नकद लाभ	%	-	***	(***)	(***)
आरओसीई	%	-	***	***	(***)

पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता

124. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि देश में विचाराधीन उत्पाद की मांग में बढ़ोतरी के बावजूद केवल एक घरेलू उत्पादक ने वर्ष 2009-10 के दौरान अपनी क्षमता में वृद्धि की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता को ध्यान में रखते हुए यह असंभव है कि घरेलू उद्योग विचारधीन उत्पाद के लिए अपनी क्षमताओं में वृद्धि करने हेतु निवेश के लिए निधियां उगाहने की स्थिति में होगा।

पाटन एवं पाटन मार्जिन का स्तर

125. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से भारत को आने वाला आयात पाटन मार्जिन के स्तर के न्यूनतम स्तर से अधिक है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

126. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है। भारत में संबद्ध वस्तु की खपत के संबंध में भी पाटित आयातों के हिस्से में भारी वृद्धि हुई है। इस प्रकार आयातों में यह वृद्धि समग्र रूप से और भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में दोनों रूपों में हुई है। पाटित आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे हैं। यह भी निर्धारित किया जाता है कि पाटित आयातों का कीमत निग्रहण और कीमत अधोबिक्रयण के रूप में भारी विपरीत कीमत प्रभाव हुआ है। आयातों ने घरेलू उद्योग को लागत में वृद्धि में हुई बढ़ोतरी के अनुपात में अपनी कीमतों में वृद्धि करने से वंचित किया है। इसके अतिरिक्त संबद्ध देशों से प्रत्युत्तरदाता उत्पादकों और निर्यातकों के पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है और यह बहुत अधिक मात्रा में माना गया है। परिणामी प्रभाव के संबंध में यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग के लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर अर्जन के रूप में कार्यनिष्पादन को विपरीत रूप से प्रभावित किया है। अतः, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के मात्रा एवं कीमत प्रभाव द्वारा कारित की गई है।

127. यह नोट किया जाता है कि देश में उत्पाद की मांग/खपत भारतीय उत्पादकों की क्षमताओं से काफी अधिक है। अतः उत्पाद का आयात अनिवार्य था। तथापि, घरेलू उद्योग का तर्क यह भी नहीं है कि आयातों का घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। घरेलू उद्योग ने यही तर्क दिया है कि देश में मांग-आपूर्ति में भारी अंतर होने के बावजूद और इस तथ्य के बावजूद कि देश में मांग के एक बड़े हिस्से की पूर्ति आयातों द्वारा की जाती है, घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में वास्तविक गिरावट आई है। आयातों के कारण घरेलू कीमतों में कटौती हो रही है। कीमत में कटौती के कारण बाजार में उत्पाद की कीमत पर अत्यधिक हासकारी प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा, आयातों के कारण अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हो रही है।

घ. कारणात्मक संबंध

128. प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य कारकों ने घरेलू उद्योग की क्षति में अपना योगदान दिया है। कारणात्मक संबंधों की जांच निम्नवत की गई है:

तृतीय देशों से आयात

129. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सौदावार आयात आकड़ों की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि, संबद्ध देशों और समवर्ती निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी द्वारा जांच किये जा रहे देशों से आयात के अलावा कोई अन्य आयात हुए हैं। जहां तक उन देशों से आयात का संबंध है जिनके विरुद्ध निर्णायक समीक्षा जांच आयोजित की जा रही है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह आयात आंशिक रूप से उच्चतर कीमतों पर है यद्यपि उनके लिए ऐसा आरोप लगाया गया है कि वे आयात पाटित कीमतों पर किये गये हैं।

मांग में कमी

130. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में क्षति अवधि के दौरान भारी सुधार प्रदर्शित हुआ है। इसलिए मांग में संभावित कमी घरेलू उद्योग को क्षतिकारित करने वाला एक संभावित कारण नहीं हो सकता है।

खपत की प्रणाली में परिवर्तन

131. यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की प्रणाली में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ है। जांच में किसी वैकल्पिक प्रतिस्पर्धी उत्पाद की मौजूदगी और इस वैकल्पिक उत्पाद द्वारा कारित की जा रही संभावित क्षति की मौजूदगी नहीं प्रदर्शित हुई है।

विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं तथा उनके बीच प्रतिस्पर्धा

132. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं नहीं हैं। देश में पक्षपात रहित व्यापार पर कोई प्रतिबंध नहीं है और संबद्ध वस्तु के आयात कई देशों से किये जा रहे हैं तथा वे घरेलू उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। संबद्ध वस्तु के घरेलू बाजार में कई उत्पादक हैं और इसकी मांग में भारी वृद्धि हुई है जो आपूर्ति से कहीं अधिक है। इसलिए मांग अवरोध नहीं रही है और घरेलू बाजार में अस्वास्थ्यकर प्रतिस्पर्धा अथवा कोई अन्य व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया ने घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति में अपना योगदान नहीं दिया है।

प्रौद्योगिकी में विकास

133. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्रौद्योगिकी में भारी विकास के संबंध में कोई तर्क नहीं दिया गया है। अतः प्रौद्योगिकी में विकास घरेलू उद्योग को क्षति कारित करने वाला एक संभावित कारण नहीं है।

निर्यात निष्पादन

134. घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालनों के संबंध में क्षति का विश्लेषण अलग से उपलब्ध सूचना के अनुरूप किया गया है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वास्तविक गिरावट नहीं आई है। ना ही मात्रा पैरामीटरों के संबंध में घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की क्षति पाई गई है। कीमत पैरामीटर (लाभ, निवेश पर

अर्जन और नकद लाभ) केवल घरेलू प्रचालनों पर आधारित है और इसलिए घरेलू उद्योग को निर्यात निष्पादन के कारण हुई किसी क्षति को घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

135. उक्त अवधि में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है और इसलिए उत्पादकता में गिरावट को घरेलू उद्योग की क्षति के लिए एक उत्तरदायी कारण नहीं माना जा सकता है।

अन्य कारक तथा कारणात्मक संबंध स्थापित करने वाले कारक

136. यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति स्व-प्रोदभूत क्षति है। तथापि प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सूचीबद्ध किये गए कारक यह स्थापित नहीं करते हैं कि घरेलू उद्योग को दावाकृत क्षति स्व-प्रोदभूत क्षति है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, निवेश पर अर्जन और नकदी प्रवाह के रूप में भारी गिरावट आयी है। आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती हो रही है तथा पाटन का मार्जिन एवं क्षति मार्जिन बहुत अधिक है।

137. इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में बढ़ोतरी घरेलू उद्योग को क्षति कारित कर रही है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि उत्पादन लागत में यह वृद्धि इनपुट की कीमतों में वैश्विक रूप से हुई वृद्धि के कारण हुई है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह सिद्ध नहीं किया है कि लागत यह वृद्धि केवल घरेलू उत्पादकों के लिए ही विशिष्ट है और यह सार्वभौमिक नहीं है। यदि लागत में सार्वभौमिक रूप से वृद्धि हुई होती तो इसकी विधिक प्रत्याशा यह होती कि घरेलू उद्योग भी लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमतों में वृद्धि कर लेता।

138. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन का विश्लेषण यह प्रदर्शित नहीं करता है कि घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण वास्तविक रूप से गिरावट आयी है। अतः घरेलू उद्योग को क्षति और पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध निम्नलिखित आधार पर सिद्ध होता है।

- (क) संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप संबद्ध वस्तु के कुल आयातों में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है।
- (ख) संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे हैं। चूंकि घरेलू उद्योग अपनी कीमतें आयात कीमतों पर विचार करते हुए निर्धारित करता है इसलिए इसकी बिक्री कीमत आयातों द्वारा किये जा रहे कीमत अधोरदन को देखते हुए कम बनी रही।
- (ग) घरेलू उद्योग ने कीमत निग्रहण सहन किया है। चूंकि घरेलू उद्योग अपनी कीमतें आयात कीमतों के अनुरूप निर्धारित करता है इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा सहन किया जा रहा कीमत निग्रहण बाजार में मौजूद पाटित आयातों के कारण ही है।
- (घ) घरेलू उद्योग को कीमत निग्रहण सहन करना पड़ा है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में लाभप्रदायकता, नकद लाभ और आरओसीई के रूप में गिरावट बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण आई है।

139. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि बाजार में कीमतों का निर्धारण देशों द्वारा निर्णायक समीक्षा के जरिए अलग-अलग जांचों में किया गया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोप और निर्णायक समीक्षाधीन देशों से हुए आयातों की माह दर माह कीमत की तुलना से यह पता चलता है कि यूरोपियन यूनियन से आयात कीमत भी पाटित कीमत थी और उससे बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही थी। ई यू और मैक्सिको के संबंध में पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन वर्तमान मामले में काफी अधिक पाए गए हैं।

140. यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति स्वोदभूत है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सूचीबद्ध कारकों से यह सिद्ध नहीं होता है कि घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति स्वोदभूत है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में

घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है। आयातों के कारण घरेलू कीमतों में कटौती हो रही है, पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन काफी अधिक है।

141. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि उत्पादन लागत में वृद्धि निविष्टि की कीमतों में वैश्विक वृद्धि के कारण हुई है। हितबद्ध पक्षकारों ने इस बात की पुष्टि नहीं की है कि लागत में ऐसी वृद्धि केवल घरेलू उत्पादकों के लिए हुई थी और यह वैश्विक स्तर पर नहीं थी।

142. जहां तक विनायल फीडस्टॉक की सीमित उपलब्धता का संबंध है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इससे घरेलू उद्योग की क्षति और पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध भंग नहीं होता है। विनायल फीडस्टॉक की यह सीमित उपलब्धता केवल भारतीय उत्पादकों के लिए ही प्रतिबंधित नहीं थी।

143. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में यथाउल्लिखित सिद्धांतों के अनुरूप घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए किया है। घरेलू उद्योग की इस गैरक्षतिकारी कीमत की तुलना क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबद्ध आयातों के उतराई मूल्य से की गई। पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के अनुरूप ही संबंधित कंपनियों के लिए क्षति मार्जिन का निर्धारण उन्हें एक निकाय के रूप में मानते हुए की गई। इसके अतिरिक्त जांच की अवधि के प्रत्येक माह के लिए पृथक गैर क्षतिकारी कीमत निर्धारित की गई। जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा क्षति मार्जिन, पहुंच कीमत और क्षति रहित कीमत के बारे में किए गए अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पहुंच मूल्य का निर्धारण उसकी सुसंगत पद्धति के अनुसार किया गया है अर्थात् पहुंच कीमत का निर्धारण सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य के रूप में निर्धारित किया गया है और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल हैं। अतः इस संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोध पर सहमति नहीं है।

144. इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि यद्यपि, निर्यातक 2 से लेकर 6 माह तक की अवधि के लिए ऋण प्रदान करते हैं तथापि, घरेलू उद्योग मुख्यतः नकद और सुपुर्दगी आधार पर वस्तु की बिक्री कर रहा है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए उचित तुलना के प्रयोजनार्थ क्षति रहित कीमत में निर्यातकों और घरेलू उद्योग द्वारा ग्राहकों को प्रदत्त ऋण अवधि में अंतर हेतु सैद्धांतिक आधार पर ऋण लागत शामिल होनी चाहिए। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुसार किया गया है जिसमें प्राधिकारी के लिए यह अधिदेश है कि वह लगाई गई पूंजी पर उचित आय का प्रावधान करे। कार्यशील पूंजी, जो लगाई गई पूंजी के संघटकों में से एक है, का निर्धारण घरेलू उत्पादकों के लेखा परीक्षित खातों के आधार पर किया गया है और इससे घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त वास्तविक ऋण का प्रतिफल सुनिश्चित हुआ है। घरेलू उद्योग ने आगे यह उल्लेख किया है कि कार्यशील पूंजी का निर्धारण कच्ची सामग्री की खरीद हेतु उसके द्वारा लिए गए आपूर्तिकर्ता ऋण पर विचार किए बिना किया जाना चाहिए क्योंकि यह ऋण के सिवाय कुछ नहीं है। इस संबंध में प्राधिकारी यह मानते हैं कि चूंकि घरेलू उत्पादकों द्वारा लिया गया आपूर्तिकर्ता ऋण उसके लेखापरीक्षित खातों में "चालू देयता" के रूप में दर्शाया गया है, इसलिए उसे चालू देयता माना गया है और कार्यशील पूंजी का तदनुसार निर्धारण किया गया है। अतः प्राधिकारी ने क्षति मार्जिन की पुनः गणना करने के बारे में घरेलू उद्योग के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया है।

145. जहां तक निर्यातकों द्वारा व्यय की गई ऋण लागत को हिसाब में लेते हुए पहुंच कीमत के निर्धारण के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों का संबंध है, यह उल्लेख किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई सुसंगत पद्धति के अनुसार पहुंच मूल्य का निर्धारण सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य के रूप में किया गया है और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल हैं।

146. क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :

क्षति मार्जिन दर्शाने वाली तालिका

इनिआस ग्रुप ऑफ कंपनीज (ईयू) और मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास, एसए, डि सी.वी (मैक्सिको) और ईयू और मैक्सिको के शेष बचे उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए क्षति मार्जिन का निर्धारण							
देश/भू-भाग	उत्पादक	निर्यातक	क्षति मार्जिन अम.डा./मी. टन	क्षति मार्जिन %	समूह क्षति मार्जिन अम.डा./मी. टन	समूह क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज (%)
ईयू	मैसर्स आईएनईओएस विनायल्स ड्यूशलैंड जीएमबीएच, जर्मनी	मैसर्स आईएनईओएस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच, जर्मनी	***	***	***	***	0-10
	मैसर्स आईएनईओएस स्वेरिज एबी, स्वीडेन	मैसर्स आईएनईओएस स्वेरिज एबी, स्वीडेन	***	***			
	मैसर्स आईएनईओएस क्लोरे विनायल्स लिमिटेड, बेल्जियम	मैसर्स आईएनईओएस क्लोरे विनायल्स लिमिटेड, बेल्जियम	***	***			
	*मैसर्स आईएनईओएस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यू.के.	*मैसर्स आईएनईओएस न्यूटन ऐक्लिफ लिमिटेड, यू.के.	***	***			
	अन्य	अन्य	***	***	लागू नहीं	लागू नहीं	15-25
मैक्सिको	मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास एस.ए डि सी.वी	मैक्सिकैम रेजिनास विनिलिकास एस.ए डि सी.वी	***	***	लागू नहीं	लागू नहीं	5-15
	अन्य	अन्य	***	***	लागू नहीं	लागू नहीं	10-20

* दिनांक 01.05.2013 से पूर्व मै0 इनिआस क्लोर विनायल्स लि0 के प्रचालन मै0 इनिआस न्यूटन ऐक्लिफ लि0 द्वारा किए जा रहे थे। इसने अपना व्यवसाय दिनांक 01.05.2013 से मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड (यूके) को अंतरित कर दिया है।

147. इस तरह निर्धारित किये गये क्षति मार्जिन के स्तर को बहुत अधिक माना गया है।

ड. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

148. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटन के परिणाम स्वरूप वास्तविक क्षति सहन करनी पड़ी है। संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से तथा भारत में खपत के संबंध में भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे हैं। यह भी निर्धारित किया जाता है कि पाटित आयातों का कीमत निग्रहण के रूप में भारी विपरीत कीमत प्रभाव हुआ है। इसके अतिरिक्त, संबद्ध देशों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है और उसे बहुत अधिक माना गया है।

149. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों का लाभ प्रदायकता, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन पर भारी विपरीत प्रभाव पड़ा है। इसलिए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के परिणाम स्वरूप ही हुई है।

150. अतः, प्राधिकारी, यह धारित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण ही हुई है।

च. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

151. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का प्रशमन करना है ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपातरहित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित हो सके। पाटन रोधी शुल्क का अधिरोपन करने का उद्देश्य देशों से आयातों को किसी भी रूप में प्रतिबंधित करना नहीं है, और, अतः, इससे उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

152. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से उन उत्पादों की कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है जिनका विनिर्माण संबद्ध वस्तु का प्रयोग करके किया जाता है और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की संगत प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपाय खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण घरेलू उद्योग को कारित क्षति का समाधान करने के लिए जरूरी राशि तक प्रतिबंधित कर दिया जाए तो इससे भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में किसी तरह की कमी नहीं आयेगी। इसके विपरीत, पाटन रोधी शुल्क का अधिरोपण पाटन प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ को दूर कर देगा, घरेलू उद्योग को पतन से बचायेगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु के व्यापक विकल्प की उपलब्धलता बनाये रखने में सहायता करेगा।

छ. निष्कर्ष एवं सिफारिशें

153. किये गये प्रस्तुतिकरणों, उठाये गये मुद्दों की जांच करने और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- (क) विचाराधीन उत्पाद का संबद्ध देशों से भारत को निर्यात सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है।
- (ख) संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति सहन करनी पड़ी है।
- (ग) यह वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है।

154. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच शुरु की गई तथा सभी हितबद्ध पक्षकारों को इसकी सूचना दी गई। निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के सभी पहलुओं पर सूचना प्रदान कराने के लिए उन्हें पर्याप्त अवसर दिया गया। पाटनरोधी नियमावली में दी गई शर्तों के अनुरूप पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंधों की जांच प्रारंभ करके एवं उसे संपन्न करके तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन इन पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई एवं वास्तविक क्षति की पुष्टि करके, प्राधिकारी का विचार है कि पाटन क्षति को दूर करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क का अधिरोपण करना अपेक्षित है। प्राधिकारी द्वारा अपनाये गये न्यूनतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के न्यूनतर के बराबर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपण करने की सिफारिश करते हैं जिससे कि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके।

क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए विचाराधीन उत्पाद के आयातों के उतराई मूल्य की तुलना जांच की अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद की गैर क्षतिकारित कीमत से की गई है।

155. तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर, निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क इस संबंध में केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से, अधिरोपित करने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	उप-शीर्ष या प्रशुल्क मद	वस्तु विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मुद्रा	इकाई
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स आईएनईओएस विनायल्स ड्यूशलैंड जीएमबीएच, जर्मनी	मैसर्स आईएनईओएस विनायल्स सेल्स जीएमबीएच, जर्मनी	39.65	अम. डालर	मी.टन
2	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स आईएनईओएस स्वेरिज एबी, स्वीडेन	मैसर्स आईएनईओएस स्वेरिज एबी, स्वीडेन	39.65	अम. डालर	मी.टन
3	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स आईएनईओएस क्लोर विनायल्स लिमिटेड, बेल्जियम एन वी	मैसर्स आईएनईओएस क्लोर विनायल्स लिमिटेड, बेल्जियम एन वी	39.65	अम. डालर	मी.टन
4	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	मैसर्स आईएनईओएस क्लोर विनायल्स लिमिटेड,, यू.के.	मैसर्स आईएनईओएस क्लोर विनायल्स लिमिटेड, यू.के.	39.65	अम. डालर	मी.टन
5	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन	क्र.सं. 1 से 4 के अलावा कोई अन्य संयोजन	क्र.सं. 1 से 4 के अलावा कोई अन्य संयोजन	189.99	अम. डालर	मी.टन

6	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	यूरोपियन यूनियन	यूरोपियन यूनियन के अलावा कोई अन्य देश	कोई	कोई	189.99	अम. डालर	मी.टन
7	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	मैक्सिको और यूरोपियन यूनियन के अलावा कोई अन्य देश	यूरोपियन यूनियन	कोई	कोई	189.99	अम. डालर	मी.टन
8	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	मैक्सिको	मैक्सिको	मैक्सिकेम रेजिनास विनिलिकास एस.ए डि सी.वी	मैक्सिकेम रेजिनास विनिलिकास एस.ए डि सी.वी	88.10	अम. डालर	मी.टन
9	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	मैक्सिको	मैक्सिको	क्र.सं.8 के अलावा कोई अन्य संयोजन	क्र.सं.8 के अलावा कोई अन्य संयोजन	163.05	अम. डालर	मी.टन
10	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	मैक्सिको	मैक्सिको के अलावा कोई अन्य देश	कोई	कोई	163.05	अम. डालर	मी.टन
11	3904	**पीवीसी सस्पेंसन रेजिन	मैक्सिको और यूरोपियन यूनियन के अलावा कोई अन्य देश	मैक्सिको	कोई	कोई	163.05	अम. डालर	मी.टन

*दिनांक 01.05.2013 से पूर्व मै0 इनिआस क्लोर विनायल्स लि0 के प्रचालन मै0 इनिआस न्यूटन एकीलिक लि0 द्वारा किए जा रहे थे। इसने अपना व्यवसाय दिनांक 01.05.2013 से मैसर्स इनिआस क्लोर विनायल्स लिमिटेड (यूके) को अंतरित कर दिया है।

** विचाराधीन उत्पाद विनायल क्लोराइड मोनोमर (सस्पेंशन ग्रेड) का होमोपॉलीमर है जहां विभिन्न पॉलीमर श्रृंखलाएं एक-दूसरे से जुड़ी हुई नहीं हैं। तथापि, इसमें विशेष पीवीसी सस्पेंशन रेजिनों जैसे क्रास लिंकड पीवीसी, क्लोरिनेटेड पीवीसी (सीपीवीसी), विनायल क्लोराइड- विनायल एसिटेट कोपोलिमर (वीसी-वीएसी), पीवीसी पेस्ट रेजिन और पीवीसी ब्लेंडिंग रेजिन, का अपवर्जन किया गया है।

156. केन्द्र सरकार के आदेश के खिलाफ कोई अपील उक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 4th April, 2014

Final Findings

Sub: Anti-dumping investigation on import of PVC Suspension Resin from European Union (EU) and Mexico – Final findings

No. 14/1012/2012-DGAD.—WHEREAS, having regard to under the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the Act) and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof, as amended from time to time, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority) received a written application from M/s DCW Limited (“DCW”), Chemplast Sanmar Limited (“Chemplast”), DCM Shriram Consolidated Ltd. (“DSCL”) and Reliance Industries Limited (Reliance), (hereinafter also referred to petitioners or applicants) alleging dumping of PVC Suspension Resin (hereinafter referred to as subject goods) from European Union (EU) and Mexico (hereinafter referred to as subject countries).

2. Whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the -Do-mestic industry, issued a public notice dated 5th October, 2012 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to consider recommendation of the anti-dumping duty.

PROCEDURE

3. The procedure described below has been followed.
 - a. The Designated Authority (hereinafter referred to as the “Authority”), under the above Rules, received a written application from DCW Limited (“DCW”), Chemplast Sanmar Limited (“Chemplast”), DCM Shriram Consolidated Ltd. (“DSCL”) and Reliance Industries Limited (“Reliance”) (hereinafter referred to as the “applicants”) as -Do-mestic industry of the subject goods, alleging dumping of Polyvinyl Chloride (PVC) Suspension Grade Resin originating in or exported from the European Union and Mexico (hereinafter referred to as the “subject countries”).
 - b. Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the Applicants. The application was, therefore, considered as properly -Do-cumented.
 - c. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the Applicants to justify initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject countries.
 - d. The Authority notified the embassies of the subject countries in India about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5 (5) of the AD Rules.
 - e. The Authority issued a public notice dated 5th October, 2012 published in the Gazette of India, Extraordinary initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods from the subject countries.
 - f. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the Applicants) and industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
 - g. The Authority also forwarded a copy of the public notice to all the known importers of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the letter.
 - h. The Authority provided copy of the on-confidential version of application of the known exporters and the embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6 (3) of the AD Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.

- i. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in the subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

1. Polycyd S.A De C.V Av. La Presa No.8. Col. Lázaro Cárdenas, San Juan Ixhuatepec Tlanepantla, E-Do- De México, 54180.	2. Mexichem Río San Javier No. 10, Fracc. Viveros del Río Tlanepantla, Esta-Do- de México.
3. Novinco Aparta-Do- nº 1011, Ec S. Mamede De Infesta, 4466-951 São Mamede De Infesta Mexico	4. Vinycel Río San Javier No. 10, Fraccionamiento Viveros del Río, Tlanepantla Esta-Do- de México. México C.P.54060
5. Ineos Chlor Vinyls Runcorn Site HQ, South Parade Runcorn, Cheshire WA7 4JE Germany	6. Cires SA P.O. Box 20, Samouqueiro – Avanca 3864-752 ESTARREJA Portugal
7. Mon-Do- SPA Piazzale E.Stroppiana, 1 12051 Alba, Fraz. Gallo - Italia	8. Arkema 420 rue Estienne d'Orves 92705 Colombes Cedex
9. Vinnolit Carl-Zeiss-Ring 25 85737 Ismaning, Germany	10. Chemieuro S. c/Coso 33, 4º Pta 50003 Zaragoza Spain
11. Solvay rue de Ransbeek, 310 - B-1120 Brussels - Belgium	

- j. In response to the initiation notification, the following exporters/producers from European Union and Mexico have responded:

- INEOS ChlorVinyls Belgium NV, Belgium
- INEOS Vinyls Deutschland GmbH, Germany
- INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany
- INEOS Sverige AB, Sweden
- INEOS Newton Aycliffe Ltd, United King-Do-m
- Mexichem Resinas Vinilicas, Mexico
- Government of Mexico.

- k. Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

1. SHALIMAR REXINE INDIA LTD. 1st Floor, Gumam Chambers 67, Ganesh Peth, Pune - 411 002 Maharashtra	2. FINOLEX GROUP Finolex Group, D-1/10, MIDC, Chinchwad, Pune
3. THE SUPREME INDUSTRIES 17/18, Shah Industrial Estate, Veera Desai Road, Andheri (W), Mumbai - 400 053	4. KRISHNA VINYL GROUP Belagaon Village, Boisar (East), Mumbai
5. JAIN IRRIGATION SYSTEMS Jain House, Police Court Lane, Fort, Mumbai - 400 001	6. PRINCE GROUP Prince Arcade, C-10, Century Road, Marol MDC, Andheri Mumbai - 400 093
7. KALPANA INDUSTRIES 2/B, Prictona St. Kolkata - 700 071	8. COSMOS CORPORATION Jai Gurudeo Complex, Shop No.C-4, Ground Floor, Bhiwandi
9. POLYTRUSIONS PRIVATE LTD.	10. POLYCAB CABLES PVT. LTD.

	1-B, Gleneden Place, 813, Poonamallee High Road, Killpauk, Chennai - 600010		Hicco House, North Wing, 1ST Floor, 771, Pandit Satawalekar Marg, Mahim, Mumbai - 400 016
11.	CHANDUBAI GROUP No.58, Bharathisasan Street, Muthlalpet, Chennai	12.	J P GROUP 4314/5, Jai Mata Marg, Tri Nagar, New Delhi - 110 035
13.	Royal Cushion Vinyl Product Plot No.9, Behind National Avenue, Akruti Road, Mandivali (East), Mumbai -400 001	14.	KISAN GROUP TEX Centre, K Wing, 3rd Floor, 26-A Chandiwal Road, Andheri (East), Mumbai -400 059
15.	GOLDEN GROUP E-5, Mayapuri Indl. Area, Phase II, New Delhi - 110 064	16.	PREMIER POLYFILM LTD. 40/1A, Site IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)
17.	V.K. GANDHI GROUP 10/60, Industrial Area, Kirti Nagar, New Delhi	18.	OMEGA UDYOG 605, Krishna Apartment, Sector 18, Noida, UP
19.	FINE FLOW PLASTIC INDUSTRIES 403 Steel Centre, Ahmedabad Road, Karnak Bunder, Masjid, Mumbai - 400 009	20.	KRITI INDUSTRIES (INDIA) LTD. Chetak Chambers, 14, R.N.T. Marg, In-Do-re M.P. - 452 001
21.	SIGNET OVERSEAS LTD. 114-116, Trade House 14/3, South Tukoganj, In-Do-re, M.P.	22.	VEEKAY POLYCOATS LTD. Flat No.70, 7th Floor, Hansalaya Building, 15, Barakhamba Road, New Delhi - 110 001
23.	AVON PLASTICS GROUP No.7/1, 4th Cross, Padarayanpura, Mysore Road Cross, Bangalore - 560 026	24.	KLJ GROUP KLJ House, Rana Marg, Near Kirti Nagar, New Delhi - 110 015
25.	CAPRIHANS INDIA LTD. D Block, Shiovsagar, Dr.Annie Besant Rd, Worli, Mumbai - 400 018	26.	PAR PETROCHEM LTD. Petro House, 1206, 1st Floor, Bahadur Garh Road, Delhi
27.	SUDHARKAR GROUP Balaram Thanda, Near Industrial Estate, Surya Pet, Dist. Naigonda, Andhra Pradesh - 500 001	28.	SURENDER COMMERCIAL 14, Royd Street, Kolkata
29.	MM Plastics Building No.26/779, Pant Nagar, Ghatpokar (East), Mumbai	30.	K S PLASTICS 22A, Sardar Bazar, New Delhi
31.	DELUXE KAARAN IMORT PVT. LTD. 321, Siddhivinayak Housing Society, Bhiwandi	32.	AASU CHEMPOPLAST Shop No.907, Netaji Subhash Place, P.P.Tower, Pitampura, New Delhi - 110 034
33.	DUTRON PLASTICS	34.	PRFINTCRAFTS

	Dutron House, Mithakhali Underbridge, Navrangpura, Ahmedabad, Gujarat - 380 006		16-A/19, WEA, Ajmal Khan Road, Karol Bagh, New Delhi
35.	ADITYA INDUSTRIES 5, Khosla Corss Lane, 1st Floor, Near Paydhoni, Masjid Buder, Mumbai - 400 003	36.	JEWEL POLYMERS C-636, DSIDC Industrial Area, Narela, Delhi
37.	FANCY POLYMERS PVT LTD C-3, Local Shopping Centre, Paschimi Marg, Vasant Vihar, New Delhi - 110 057	38.	VARSHA CORPORATION LTD. A/3-G, Malad Industrial Estate, Malad, Mumbai
39.	MAXX IMPEX 30/44, Gali No.7, Vishwas Nagar, Shahadara, Delhi	40.	ORIPLAST LTD. 9/A, Wood Street, Kolkata - 700 016
41.	AMISHA VINYLs PVT LTD A-21, Sitaram Building, Kolkata - 700 016	42.	NOUVELLE CREDITS PVT.LTD. 4316/17, 3rd Floor, Saini Market, New Delhi
43.	D.R.POLYMERS LTD C-24, Mansarovar Garden, DR Complex, New Delhi - 110 015	44.	SINTEX INDUSTRIES LTD. Plastic Division, Kalok (NG), Kalol, Mehsana, Gujarat
45.	SANKHLA INDUSTRIES 1st Floor, Race Course Road, Banalore, Karnataka - 560 001	46.	SHANTILAL MAHENDRAKUMAR 23, Gurukrupa Apartments, H.C. Kelkar Road, Dadar, Mumbai
47.	SAM POLYMERS 115/4A, Vidyut, Near RBI Colony, Shalimar Baug, New Delhi	48.	PRAKASH INDUSTRIES Near IOCL Depot, Brijwasan, New Delhi - 110 061
49.	R.S. OVERSEAS PVT.LTD. F-31, 1st Floor, Bhagwant Singh Market, 3003, Bahadurgarh Road, New Delhi	50.	INCOM CABLES PVT LTD C-46, Mayapuri Industrial Area, Phase II, New Delhi
51.	DIAMOND PIPES & TUBES 7th Cross Wilson Garden, Bangalore, Karnataka - 560 027	52.	CHAITANYA IMPOGENEX Chikal House, 146-B, Princes Street, Mumbai
53.	TIRUPATI GROUP Plot No.81, Function Industrial Estate, Patparganj, New Delhi - 110 092	54.	APOLLO PIPES A-90, Naraina Industrial Area, Delhi - 110 052
55.	HAVELLS INDIA Havells India, E-1, Sector 59, Noida (U.P.)	56.	OSWAI CABIE PRODUCTS LTD A-93/1, Wazirpur Group Industrial Area, Delhi - 110 052
57.	MEGHA INDUSTRY Shop No.9/96, Shaasin Gali, Vishwas Nagar, Delhi - 110 052	58.	ASSOCIATED CAPSULES LTD Kalpatru Society, 289-2, Mahatma Phule Peth, Timber Market Road, Pune

1. None of the importers/users of the subject goods has responded in the form of questionnaire responses during the investigation proceedings and are therefore treated as non cooperative in this investigation. However,

comments have been received from other users and importers namely M/s AIPMA, Sankhla Industries, Sree International, Polyresins and other importers.

- m. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties. Submissions made by all interested parties have been taken into account in present findings.
- n. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- o. Further information was sought from the applicant and other interested parties to the extent deemed necessary.
- p. The Non-injurious Price has been worked out on the basis of information on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India furnished by the -Do-mestic industry and on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and in accordance with Annexure III of the anti-dumping rules, so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the -Do-mestic Industry;
- q. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2011 to 31st March 2012 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis covered the period from 2008-09, 2009-10, 2010-11 and POI.
- r. Exchange rate for conversion of US\$ to INR in the POI has been considered at Rs.48.14 as per customs data.
- s. The Central Government has accorded permission for extension of time up to 4th April 2014 for completing the subject antidumping investigation and notifying the final findings.
- t. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 20th December, 2013. The parties which presented their views in the public hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The arguments made in the written submissions/rejoinders received from the interested parties have been considered, wherever found relevant.
- u. Request was made to the Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S), Kolkata to arrange details of imports of subject goods in India for the period of investigation and preceding three years and the same was received.
- v. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have been considered in Final Findings. The comments to the disclosure statement have been received from the following interested parties. These comments have been examined by the Authority in this final finding.
 - a. INEOS ChlorVinyls Belgium NV, Belgium
 - b. INEOS Vinyls Deutschland GmbH, Germany
 - c. INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany
 - d. INEOS Sverige AB, Sweden
 - e. INEOS Newton Aycliffe Ltd, United Kingdom
 - f. Mexichem Resinas Vinilicas, Mexico
 - g. The -Do-mestic industry
 - h. Sankhla Industries
 - i. Sree International
 - j. European Union
- w. *** in this final findings represents information furnished by the applicants on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.

A. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

4. The Product under consideration in the present investigation is homopolymer of vinyl chloride monomer (suspension grade), where various polymer chains are not linked to each other, falling under customs

classification no. 3904, known as PVC suspension resin. The product under consideration however, excludes the specialty PVC suspension resins such as cross-linked PVC, chlorinated PVC (CPVC), vinyl chloride – vinyl acetate copolymer (VC-VAc), PVC paste resin and PVC blending resin.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

5. Some of the interested parties comprising importers and users have submitted that higher K value suspension resins are not manufactured by the -Do-mestic industry and therefore they should be excluded from the purview of the product under consideration.

Views of the -Do-mestic Industry

6. The -Do-mestic industry has made the following submissions with regard to the issue of the product under consideration.
 - a. PVC suspension is the most versatile thermoplastic forming, on one extreme, highly rigid product such as pipes and profiles, and on the other, highly flexible products such as soft leather cloth and flexible footwear. It is one of the largest produced and consumed plastic resins. The basic structure of PVC suspension is $(C_2H_3Cl)_n$.
 - b. Through polymerization process, VCM monomer is converted into vinyl polymer, a fine-grained, white powder i.e. PVC resin. There are different types of polymerization processes viz. 1) Suspension polymerization, 2) Emulsion polymerization, 3) Bulk Mass polymerization and 4) Micro Suspension polymerization process. About 85% of the world's PVC production is by suspension polymerization.
 - c. The scope of the product under consideration covers Poly Vinyl Chloride (PVC) - Suspension Grade only. The product is classified under Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 3904.2110. The customs classifications are however, indicative only and are in no way binding on the scope of the investigation. The Designated Authority should recommend anti dumping duty on all imports of the product under consideration falling under classification 3904.
 - d. PVC is used in manufacturing of various products like Pipes & Fittings, Flexible Hoses, Films/Sheets, Bottles, Profiles, Wire & Cables, Footwear, etc. PVC Pipes & Fittings are used for Irrigation, Drinking water supply, Buildings construction and Sanitation for plumbing, Sewerage, Rainwater ducting, Conduits for concealing electrical wiring, etc. PVC Films/sheets are used for packaging application, rainwear, insulation tapes, table covers, stationery items, inflatable toys, photo albums, collar bands, stretch cling/stretch wrap/twist wrap films, bill board film and many more applications. PVC Profiles are used mainly in applications like -Do-ors, win-Do-ws, panels, partitions, frames, kiosks etc. PVC is used in Wire & Cables, which are used mainly in manufacturing -Do-mestic wiring, electrical cords and low voltage power cables.
 - e. PVC Suspension produced by the applicants and imported from subject countries is comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, product properties, manufacturing process & technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and should therefore be treated as like articles within the meaning of the term.
 - f. There is no known difference in the subject goods produced by the Indian industry and those imported from the subject countries. The subject goods produced by the applicants and those imported from the subject countries are comparable in terms of physical and technical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing, and tariff classifications of the goods. The two are technically and commercially substitutable. Consumers use the two interchangeably. Hence, the applicants submit that subject goods produced by the applicant companies and the subject goods imported from the subject countries are like articles within the meaning of the Anti-dumping Rules.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

7. The product under consideration is homo-polymer of vinyl chloride monomer (suspension grade), where various polymer chains are not linked to each other, falling under Customs Classification No. 3904. The product under consideration however, excludes the specialty PVC suspension resins such as cross-linked PVC, chlorinated PVC (CPVC), vinyl chloride – vinyl acetate copolymer (VC-VAc), PVC paste resin and PVC blending resin.
8. The Authority notes that the scope of the product under consideration has been examined in detail in previous case relating to the imports of the product from different sources. The scope of the product under

consideration in the present case is the same as the scope of the product under consideration in the previous investigation.

9. The evidence on record shows that imports of product under consideration has been cleared under various classifications falling under 3904. Since the investigation is in respect of product description and classification is merely indicative, the Authority has conducted investigations in respect of imports of the product under consideration, and customs classification has been specified only for the convenience of the customs authorities.
10. The Authority notes that there is no known difference in the subject goods produced by the Indian industry and those imported from the subject countries. The two are comparable in terms of physical and technical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing, and tariff classifications of the goods. The two are technically and commercially substitutable. Consumers use the two interchangeably. With regard to arguments placed by some interested parties about exclusion of certain high K value suspension resins, it is noted that this issue was duly examined in the final findings of the anti dumping investigation of PVC suspension resin which was issued vide Notification No. 14/8/2006-DGAD dated 26th December, 2007 (in the para 21 to 24 of the final findings). In addition, no substantive evidence has been placed by these importers that these higher K value PVC suspension resins are not like article to the product under consideration imported from subject countries. In fact, it is noted that none of the interested parties comprising users and importers has filed response to the importers questionnaire to the Authority. With regard to submissions by various interested parties about exclusion of off grade product as not being like product, it is noted that off-Grade material -Do-es not have different physical and technical characteristics. Manufacturing process, raw materials, functions & usage, cost of production, tariff classification are the same. In view of the above, these products have been treated as like article and these have been included for the purpose of determining the dumping margin.
11. The Authority therefore concludes that the product manufactured by the Applicants constitute like article to the product under consideration being imported into India from the subject countries.

B. SCOPE OF -DO-MESTIC INDUSTRY AND STANDING

12. Rule 2 (b) of the AD rules defines -Do-mestic industry as under:

“-Do-mestic industry” means the -Do-mestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total -Do-mestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘-Do-mestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

13. It is noted that the application has been filed by DCW, Chemplast, DSCL and Reliance on behalf of -Do-mestic industry of the subject goods. There is one other producer of the subject goods in India, namely, Finolex Industries Limited (“Finolex”), which has supported the petition.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

14. It has been submitted that DSCL -Do-es not come within the purview of the definition of ‘-Do-mestic industry’, therefore, DCSL should be excluded from the purview of -Do-mestic Industry as the said -Do-mestic producer had imported subject goods from subject country. Post disclosure, these interested parties have reiterated their earlier submissions on the status of -Do-mestic industry.

Views of the -Do-mestic Industry

15. The -Do-mestic industry has made the following submissions with regard to the issue of standing.
 - a. None of the Applicants should be excluded from the scope of -Do-mestic industry under Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules, as none of them has imported the subject goods from the subject countries during period of investigation, nor are they related to any importer or exporter of the subject goods in the subject countries.
 - b. The Applicants have exported the subject goods.
 - c. Neither Chemplast nor DCW has imported the subject goods directly or indirectly from the subject countries.
 - d. DSCL has imported the subject goods but not from the subject countries during the period of investigation. The company has a number of divisions including Shriram Vinyl & Chemical Industries and Shriram Polytech. The subject goods are produced in Shriram Vinyl & Chemical Industries and

Shriram Polytech consumes the product for making compounds out of it. Shriram Polytech imported small volume of product under consideration. The volume of imports by DSCL is quite low looking at the overall import of product under consideration in India, consumption in India and production by the company.

- e. Finolex is a regular importer of the product under consideration. However, the imports are for captive consumption. Finolex is not related either directly or indirectly to any exporter or importer of the subject product from the subject countries.
- f. Collective production of the Applicants constitutes a major proportion of the Indian production. Hence, the petition satisfies the requirement of standing under the Anti-dumping Rules and the Applicants constitute -Do-mestic industry.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

- 16. It is noted that the application has been filed by DCW, Chemplast, DSCL and Reliance on behalf of the -Do-mestic industry. Further, the petition has been supported by Finolex. The production of the applicants accounts for more than 50% of total Indian production and therefore constitutes a major proportion of the total -Do-mestic production of the like article.
- 17. It is noted that some of the petitioners companies have imported small volumes of imports during the injury period. However, during period of investigations, only DSCL has imported small volumes of the product under consideration. The Authority notes that Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules provides discretion to it to either include or exclude on reasonable and equitable grounds in certain situations, those -Do-mestic producers who are related to the exporters or importers or who are themselves importers of the allegedly dumped articles while determining the -Do-mestic industry. This has been reaffirmed by Hon'ble Division Bench of the Madras High Court in their judgment dated 27-04-2012 in Writ Appeal Nos. 193/2012, 194/2012, 189/2012 and 195/2012.
- 18. Further, the Authority notes that none of the Applicants has imported the subject goods from the subject countries during the period of investigation, nor are they related to any exporter or importer of the subject goods. In respect of imports made by DSCL, it is noted that the imports were made in small volumes for captive consumption from countries other than the subject countries. In view of the above facts of the case, the Authority considers it appropriate to treat all applicant -Do-mestic producers as eligible to constitute -Do-mestic industry.
- 19. The Authority further holds that the applicants satisfy the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules with regard to the requirement of constitution of -Do-mestic industry and standing.

Other Post Disclosure Comments By Exporters, Importers, Consumers And Other Interested Parties

- 20. It has been stated that the decision by the Authority to conclude the investigation without completing on-site verification visits at any of the premises of the INEOS entities is unjustified and unfair. It is respectfully submitted that in the absence of an on-site verification, the Authority should have accepted the data submitted by INEOS.
- 21. Two Ineos group companies have submitted that significant differences in the selling prices of the various grades of S-PVC exported to India during the POI which has been completely ignored by the Authority. Inclusion of off-grade S-PVC in the definition of the product under consideration is inappropriate.
- 22. INEOS Sverige had provided two versions of Appendix 8 (the cost of production annex) as was requested by the Authority and the first version of the same completely coincided with Appendix 7. Further, the Authority would have been able to reconcile the second version of Appendix 8 (the roll through cost basis) with Appendix 7 had it carried out an on-site verification visit.
- 23. The export sales made via ICC Handels A.G. have been rejected on the grounds that the selling price and adjustments have not been disclosed.
- 24. The dumped imports are not undercutting the prices of the -Do-mestic industry in the market.
- 25. The increase in imports from the Subject Countries during the POI has not caused price depression in the -Do-mestic market.
- 26. The Authority has been provided with evidence that the -Do-mestic industry's production economics became less efficient during the POI owing to increases in key raw material purchase prices (VCM) and processing costs.

27. The dumped imports did not have had significant adverse price effect in terms of price underselling.
28. It has been submitted that the name INEOS Newton Aycliffe Ltd has been stated in the duty table at page 46 of the Disclosure Statement together with a footnote that the business has been transferred to M/s INEOS ChlorVinyls Ltd. (U.K.). INEOS requests the Authority instead include M/s INEOS ChlorVinyls Ltd. in the duty table with a footnote that the prior to 01.05.2013 the operations of M/s INEOS ChlorVinyls Ltd. were carried out by M/s INEOS Newton Aycliffe Limited. Second, in the duty table at page 46 of the Disclosure Statement, INEOS requests the Authority to replace "INEOS Desutschland GmbH" with "INEOS Vinyls Deutschland GmbH". Third, in the duty table at page 46 of the Disclosure Statement, INEOS requests the Authority to replace "M/s INEOS ChlorVinyls Limited" with "M/s INEOS ChlorVinyls Belgium NV".
29. The Mexican exporter has stated that they are disappointed to note that the Authority has not accepted the data concerning the normal value given by MRV. In this respect, it has been submitted that it has not been given sufficient opportunity to clarify/ correct the alleged inconsistencies in the data as the Authority chose not to issue preliminary findings or even conduct verification in the present matter. It is submitted that the decision of the Authority not to issue the preliminary findings and cancelling the verification visit, have had a punitive impact on MRV and is against the principles of Natural Justice.
30. It has also been submitted that causal link is not established between the imports of the subject goods from the subject countries and alleged injury to the -Do-mestic Industry. Under Anti-Dumping Rules, to segregate the injury caused to the -Do-mestic Industry, if any, from SSR Countries and the subject countries is required.
31. It has also been submitted that higher K value is not manufactured by 3 local manufacturing companies and this results in monopoly and price fixing and shortages. It has also been submitted that K value of 80 is not manufactured by any local producer but there is anti dumping duty at present which is beyond comprehension. It has also been submitted that they as processing industry are vulnerable to vagaries of INR to US\$ and local manufacturing companies price fixing. If local companies are fixing prices based on the markets and not same price ex works for all the regions in India and offer regional subsidy, it amounts to price fixing. It has also been submitted that total imports from EU constitutes hardly 5.4 % and to consider it as inflicting injury to the -Do-mestic industry itself is bereft of any substance.
32. INEOS Chlor Vinyl is one of the most renowned companies in the world of SPVC Resin supplying to more than 25 countries around world and India is not even 10% of its market share and to state that it is dumping its material in India at lower price -Do-es not augurs well on any count.
33. It has been submitted by EU that even though a verification visit is not a legal obligation under WTO Rules, in this case it appears that such a visit would have allowed to clarify some important issues. They have requested the Indian Authorities to make sure that the arguments of the company, INEOS are duly taken into consideration. They have also raised issues concerning the calculation of the injury margin. The Commission has observed that a profit margin of 22% was used in order to reach the non-injurious price. First, the level of this margin is extremely high and unlikely to reflect a normal situation. Second, it appears that this margin corresponds to the return on capital employed (profit expressed as a percentage of fixed assets/working capital) but seems to have been applied to the cost of production for the establishment of the NIP. It would rather be expected that the calculations would have been based on a reasonable amount of profit (based on turnover) that the -Do-mestic industry could normally achieve in the absence of dumped imports. Such a level of profit would only very rarely be more than 10%. Finally, the Commission considers that the individual duty rate established for the cooperating exporting producers should be used for each export transactions, independently whether the products are exported directly or via a third party. It would indeed be illogical that if INEOS would export its product via a third entity its products would be subject to a duty different than the one established for this exporting producer.

Post Disclosure Comments of the -Do-mestic Industry

34. It has been submitted that the Authority should specify that the scope of proposed anti dumping duty is 3904. It has further been submitted that the response of the responding exporters are required to be rejected, given that the same remained grossly incomplete even after sufficient opportunities provided to them. The exporters cannot be provided indefinite opportunities, particularly when they have provided information in the form and manner prescribed and did not complete the deficiencies pointed out by the authority.
35. The responding exporters have not established the need for grade to grade comparison. Further, the -Do-mestic industry has established that grade to grade comparison is not required.
36. In view of significant variation in the price of VCM and Suspension Resin on month-to-month basis, the dumping margin is required to be determined undertaking month to month comparison.
37. The petitioners had requested the Designated Authority to consider date of order as the date of sale. None of the exporters have provided any evidence to justify that the claim of the petitioners in this regard is untenable. The Designated Authority is requested to consider date of order as the date of sale for determination of export price.

38. The -Do-mestic industry is suffering injury from present subject countries as also subject countries of sunset review investigations.
39. The injury margin metho-Do-logy -Do-es not constitute fair comparison because (i) whereas the -Do-mestic industry NIP and price have been considered at ex-factory level, the import prices include freight cost incurred by the exporter; (ii) whereas the import price includes significant credit period, the NIP of the -Do-mestic industry has been determined at cash level, (iii) whereas the -Do-mestic industry NIP and selling price of -Do-mestic industry has been considered excluded discounts & commission, the landed price of imports is inclusive of discounts & commission, (iv) whereas the NIP and selling price of -Do-mestic industry is at ex-factory level, the import price is at delivered levels.
40. The working capital for the purpose of determining capital employed should be determined by excluding interest bearing creditors from current liabilities.
41. The authority is required to consider actual raw material, utilities consumption, production and cost of production for determination of non injurious price. Capital employed should be determined considering present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets. In any case, a-Do-ption of net fixed assets is highly inappropriate and, in fact, unfair to the -Do-mestic industry. Further, the captive VCM should be valued at its market values.
42. Anti dumping duty may be imposed only as fixed quantum of anti dumping duty, expressed in terms of US\$ considering anti dumping duty imposed earlier on this product and the fact that the cost and price of the product fluctuated significantly.

Examination By The Authority

43. The Authority has examined the contention of all interested parties in the respective headings in this final finding. With regard to requests for name changes as made out in the earlier paragraphs, the same has been carried out in accordance with the Anti dumping rules and Agreement on Anti Dumping(ADA).

C. DUMPING MARGIN

D.1 NORMAL VALUE

44. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

(i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the -Do-mestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the -Do-mestic market of the exporting country or territory, such sales -Do- not permit a proper comparison, the normal value shall be either-

(a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

Views Of Exporters, Importers, Consumers And Other Interested Parties

- C. It has been submitted that the Authority ought to exclude off-Grade Products from the product under consideration.

Views Of The -Do-mestic Industry

45. The following are the submissions made by the Applicants in respect of normal value.

- a. The Applicants, for the purpose of determining the normal value of the product under consideration in the EU and Mexico, referred to the prices quoted in the *IHS Chemical Market Advisory Service: Global Vinyls* report (formerly *Harriman Chemsult Vinyl Chloride Report*). *Harriman Chemsult Vinyl Chloride Report* began to be marketed as *IHS Chemical Market Advisory Service: Global Vinyls* from January 2012.

- b. The Applicants have claimed that Harriman Chemsult is a leading source of information and insight in pivotal areas that shape today's business landscape. Harriman Chemsult Chemical Market Advisory Service: Global Vinyls (formerly Harriman Chemsult Vinyl Chloride Report, CMAI Europe PVC Stream Report and CMAI Europe PVC Price Report) covers the world's vinyl chloride markets and offers complete coverage of the vinyl value chain throughout the America, Asia and Europe.
- c. The Applicants have claimed that Harriman Chemsult regularly reports the prices of product under consideration, and such prices constitute reasonable, accurate and adequate information for determination of normal value. The applicants therefore submit that the prices reported in Harriman Chemsult may kindly be considered for determination of normal value.
- d. The Applicants submitted the prices reported in Harriman Chemsult Vinyl Chloride Report until December 2011 and IHS Chemical Market Advisory Service: Global Vinyls from January 2012 onwards to the Authority for the determination of normal value.
- e. The Applicants have for the purpose of determining normal value for EU and Mexico referred to the prices quoted in the Harriman Chemsult report. For EU, the Applicants have considered the price quoted for Benelux (Belgium, Netherland and Luxembourg), France, Germany, Italy, Spain and UK due to non availability of prices prevailing in EU as a whole. The Applicants have determined month-wise normal value by considering the average of the highest and the lowest price given in the report.
- f. The Applicants assessed the cost of production of the foreign producers by considering international price of VCM and best estimates of the conversion cost and overhead costs. The selling price of the product during the relevant month has been compared with the cost of production for the month. The Applicants claimed that the selling price in several months of the investigation period were below cost of production. In other words, the selling price during the relevant period was not in the ordinary course of trade. The Applicants have therefore claimed to have a-Do-pted cost of production (after including reasonable addition for profit) wherever the selling price was below cost of production. Wherever the selling price was above the cost of production, the applicants have a-Do-pted selling price.
- g. The -Do-mestic industry has objected to claim made by exporters for grade to grade comparison for the purpose of determination of dumping margin. In this regard, they have asked whether the exporters have provided details of cost of production of all grades sold in the -Do-mestic market, or the same has been restricted to only grades exported to India and whether the exporters have provided invoice/transaction wise details of all exports to third countries and whether the exporters have provided cost of production details of all exports to third countries – grade wise and exhaustive list of all grades produced and sold by each of the exporter and also exhaustive list of all grades sold by each of the exporter in its (i) -Do-mestic market, (ii) exports to India and (iii) exports to third countries.
- h. The Designated Authority is required to -Do- comparison on grade to grade basis only if the need for the same has been established by the exporters. In the present case, however, none of the exporters have established the need for such grade to grade comparison. On this account itself, their claims must be rejected.
- i. Large number of exporters has not even disclosed grades sold by them in the -Do-mestic market and exports to India. This is despite the fact that all exporters widely publicize the grades produced and sold by them. The reason for suppression of this information is not business sensitivity of the information. The reason for suppression of this information is to prevent the -Do-mestic industry from establishing that the claim for grade to grade comparison is without any legal and factual basis and is in fact an attempt to manipulate the dumping margin.
- j. With regard to quality of the product, it has been stated that in the production process of PVC Suspension Resin, the producers change production from one grade to other grade on-line and without completely suspending production. During the transition stage, the goods produced -Do- not strictly conform to either of the grades specification. These goods are sold as seconds/sub-standard goods. Some producers tend to report this as different grades. These are however not different grades. These are merely off-specs or sub-standards of a particular grade. These cannot be treated as different grade for the purpose of determination of dumping margin.
- k. Grade to grade comparison should not be -Do-ne for dumping margin determination – In order to qualify for a grade to grade comparison; the exporters must establish that there is significant difference in associated costs and prices of different grades. In this regard, they have stated that the responding exporters have not maintained any price list for the product which further establishes that the exporters have not declared a consistent pattern of price difference for different grades.

- l. Further, they have stated that the price difference between different grades for the -Do-mestic market is in the region of 2-4%. It would thus be seen that the difference in prices of different grades is quite insignificant. Further, while this is the extent of price difference in the price lists of the -Do-mestic industry, as far as imports are concerned, the actual price difference either -Do-es not exist or even negative.
- m. It has been submitted by the -Do-mestic industry that the product which should fetch higher price in fact has been sold at a lower price and vice-a-versa. For example, while price of S-70 should be slightly higher than price of S-65, there are several transactions reported in the same month wherein the import price of S-65 grade is in fact much higher than the import price of S-70 grade. They have also stated that there is no consistent pattern of price difference between different transactions.
- n. With regard to the cost difference, it has been stated that the cost difference between different grades is not even 1%. The -Do-mestic industry has therefore opposed any grade to grade comparison for the purpose of dumping margin determination.
- o. It has been stated that there is significant variation in the price of VCM and Suspension Resin within a short period. With regard to the legal position as per Rule 6(1) of the Anti-dumping rules, it has been stated that whereas the rule required Authority to undertake comparison in respect of sales made at as nearly as possible the same time; there is no specific legal obligation on the Designated Authority to undertake grade to grade comparison. The rules merely require the Designated Authority to make an allowance for differences in factors affecting price comparability. Thus, if exporters are able to quantify the difference in price on account of differences in physical characteristics, the Designated Authority may at best consider an allowance. However, there is no specific obligation on the Designated Authority to undertake grade to grade determination of dumping margin. At the same time, it would be seen that the rules oblige the Designated Authority to consider both normal value and export price pertaining to, as far as possible, the same time period. Thus, the rules require the Authority to consider normal value and export price for the same time period which purpose can be achieved by undertaking month to month comparison. They have requested the Authority to issue the final findings without undertaking spot verification of the information filed by the foreign producers

Examination by the Authority on the issues raised on Dumping Margin

46. The following is the examination by the Authority on the issues raised by the interested parties on the issue of determination of dumping margin.
47. The petitioners have claimed in their petition that in view of significant variation in the prices with time period, the dumping margin is required to be determined first for each of the months of the proposed investigation period and thereafter weighted average for the investigation period. The responding producers and exporters were requested to provide sufficient information to enable the Designated Authority to ensure fair comparison between normal value and export price, by considering sales made at as nearly as possible the same time. In this regard, responding producers and exporters were requested to provide sufficient information on month wise basis by providing volume and value of consumption of major raw materials and any other information that they may like to provide with regard to cost of production of the product under consideration at the time of sale.
48. After examining the response of producer and exporter in reply to deficiency letters issued to them, it is noted that the import data relating to product under consideration as per response of the responding producers and exporters -Do- not show any consistent pattern of difference in prices for different types or grades of the product imported into India. Further, all the responding producers and exporters have not claimed different cost of production under Appendices - 8A and 8B for different grades of product produced and sold by them in the -Do-mestic and export market. With regard to submissions by various interested parties about exclusion of off grade product as not being like product, it is noted that off-Grade material -Do-es not have different physical and technical characteristics. Manufacturing process, raw materials, functions & usage, cost of production, tariff classification are the same. In view of the above, these products have been treated as like article and these have been included for the purpose of determining the dumping margin.
49. Further, the response to the questionnaire and information on record shows significant variation in the price of the product under consideration with time period. Further, there is significant variation in the cost of production and sales price with time period because of variations in the input prices. Para 6(i) of Annexure-I requires that while arriving at margin of dumping, the Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value and the comparison shall be made at the same level of trade, normally at the ex-factory level, and in respect of sales made at as nearly as possible the same time. In view of the same, the Authority has considered and compared the normal value and export price by undertaking month by month comparisons. The weighted average dumping margin has been determined considering associated

import volumes. With regard to submissions made by the interested parties post disclosure about the fact that the Authority should have carried out onsite verification or the Authority should have accepted the response of the exporters, it is stated that onsite verification was conducted as was deemed necessary by the Authority taking into account factual matrix of the case. With regard to the issue of determination of dumping margin without undertaking verification visit, it may be mentioned that it is not mandatory for the authority to undertake verification visit and in any case, the Authority has considered all the data/explanations given by INEOS before coming to the conclusion. With regard to granting of separate dumping margin to those producers who have exported the subject goods through third party, it is noted that separate dumping margin is given to those producers who have exported the subject goods to India either directly or through a trader who has submitted complete response for all the exports of the subject goods of the co-operating producer, made by him and thereby providing complete chain of the subject exports from the producer to the exporter and exporter to the importers in India.

Determination of Dumping Margin : Examination by Authority

50. The Authority sent questionnaires to the known exporters/producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. In response thereto, the following exporters have filed their questionnaire response.

- a) INEOS ChlorVinyls Belgium NV, Belgium
- b) INEOS Vinyls Deutschland GmbH, Germany
- c) INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany
- d) INEOS Sverige AB, Sweden
- e) INEOS Newton Aycliffe Limited, UK
- f) M/s Mexichem Resinas Vinilicas , S.A. de C.V, Mexico

Normal Value, Export Price and Dumping Margin for European Union

51. It is noted that the response from the European Union have been filed by 5 producers and exporters from EU. These producers and exporters as follows:

- a. M/s INEOS Vinyls Deutschland GmbH, Germany (Producer)
- b. M/s INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany (Exporter)
- c. M/s INEOS Sverige AB, Sweden (Producer and exporter)
- d. M/s INEOS ChlorVinyls Belgium NV(Producer and exporter)
- e. M/s INEOS Newton Aycliffe Limited, UK.(Producer and exporter)

M/s INEOS Vinyls Deutschland GmbH (IVD) and M/s INEOS Vinyls Sales GmbH (IVS), Germany

52. From the response submitted, it is noted that M/s INEOS Vinyls Deutschland GmbH (hereinafter “**IVD**”) is incorporated under the laws of Germany. INEOS Vinyls Sales GmbH (hereinafter **IVS**) and M/s IVD have filed a joint response before the Authority. It is noted from the response that M/s IVS was incorporated under the laws of Germany on 15.06.2005. IVD was also incorporated under the laws of Germany and there has been no change in the structure of the two companies since then. INEOS Vinyls Deutschland GmbH is 90% owned by INEOS Norway SPV Ltd. and 10% owned by INEOS Vinyls GmbH & Co. KG. INEOS Vinyls GmbH & Co. KG is 100% owned by INEOS Chlor Vinyls Holdings Ltd as limited partner with 100% interest and INEOS Vinyls Deutschland (Holding) GmbH as unlimited partner with no interest. INEOS Chlor Vinyls Holdings Ltd. is 100% owned by INEOS Norway SPV Ltd. INEOS Norway SPV Ltd. is 100% owned by Kerling plc. Kerling plc is 100% owned INEOS Group Investments Ltd. INEOS Group Investments Ltd. is 100% owned by INEOS AG. Both the companies i.e. IVS and IVD have their principal place of business at Inhausersieler.

Normal value

53. It is noted from the response that IVD is the manufacturer of goods and IVS is the exporter of the goods manufactured by IVD. It is also noted that M/s INEOS ChlorVinyls Ltd. is acting as a “Principal” Company for the ChlorVinyls business in Germany. It buys the raw material and provides them to IVD for manufacture of the finished stock on behalf of the “Principal” in exchange for a “processing fee”. The raw materials, work

in progress and finished goods always remain in the ownership of the Principal. The Principal then sells the finished goods to IVS which in turn sells the subject goods to external customers.

54. It is noted that the company (IVS) sells the subject goods to end user in -Do-mestic market directly as well as to other entities in the -Do-mestic market who are distributors of the subject goods. For the -Do-mestic market sales, the IVS has claimed adjustment of account of Inland Freight, Credit expenses and packing expense. A deficiency letter was earlier issued to the company seeking further information in regard to the response filed by them in response to exporter's questionnaire. Amongst major deficiencies pointed out to the company, was that the principal has not filed the questionnaire response and in order to examine the arrangements between the principal and other related companies, the Authority needed an English version of the agreement between the principal and other related companies. It was also communicated that the various appendices enclosed with the questionnaire response appears to have been mixed up with the data of Principal, IVD and IVS. Further, it was also pointed out that the data of INEOS Wilhelmshaven has not been furnished. Further, it was pointed out that the basis of allocation of expenses of the company between subject goods and other products has not been furnished. In addition it is noted that the company has exported the subject goods to India via a trader in Middle East but that company has not submitted their response to the Authority.
55. In their response, it has been submitted by the company that the major raw materials required for manufacture of the subject goods are Chlorine, Ethylene, Ethylene Dichloride and Vinyl Chloride. It has also been submitted that some raw materials are purchased from related entities at arm's length basis. The Company has submitted that the prices for all the related party transactions are derived from the data published by HIS Chemicals in their monthly market reports.
56. The company has made adjustments of *** EUR in the cost of production of the subject goods during the period April-June 2011. It has been further stated that expenditure reported in Appendix-7 of the Exporter's Questionnaire response (EQR) is consolidated from companies INEOS Vinyls Deutschland GmbH, INEOS Vinyls Sales GmbH and INEOS Chlor Vinyls Ltd., (Principal) and no consolidated audited accounts are being produced covering these three entities. In view of the above position, the Authority has not been able to determine the cost of production/sales of the PUC and therefore it was not possible for the Authority to conduct ordinary course of trade test to determine normal value based on -Do-mestic sales. In this regard, it is noted that the application filed by the -Do-mestic industry contains estimates of sales price in countries in the European Union on the basis of published price of the subject goods in Harriman Chemsult and the same has been considered for the purpose of determination of normal value.

Export Price

57. It is noted that the Company had made all the exports to India directly with the exception of *** transactions where the exports to India were made through a unrelated trader in Middle East. It is noted that the aforesaid trader has not filed any response. The Authority has, therefore, taken into account only direct exports to India (***% of total exports) for the purpose of determining export price for the responding exporter. The company has claimed a single adjustment on account of inland freight, load expenses, ocean freight and ocean insurance collectively. Further, it has also claimed adjustments on account of commission charges. The exporter has stated that the adjustments for these expenses have been claimed on the basis of actuals. The company has also claimed adjustment on account of credit expenses and packing expense. The Authority has accepted the export price along with all adjustments claimed by them in their response. The export price so determined on a monthly basis has been used to determine dumping margin for that month.

INEOS SVERIGE AB

58. INEOS SVERIGE AB is a private limited company incorporated under the laws of Sweden. The company was initially incorporated as AKTIEBOLAGAT International Casein Company and subsequently the name was changed to INEOS SVERIGE AB. The Company is a 100% subsidiary of M/s INEOS Norway SPV limited which in turn is a 100% subsidiary of Kerling Plc. Kerling Plc is 100% owned by INEOS Group Investment Limited which in turn is a 100% subsidiary of INEOS AG.

Normal value

59. It is noted from the response filed by the producer and exporter that the entire production of the subject goods takes place at the Company's plant itself. The production process starts from the stage of Chlorine. All the raw materials with the exception of Ethylene are purchased from unrelated suppliers. Ethylene is purchased from unrelated entities as well as from a related entity being INEOS NORGE AS. The company sells the subject goods in -Do-mestic market to end users as well as distributors of the subject goods. The company has claimed adjustment of account of Inland Freight, Credit expenses and packing expense.

60. It is noted that a deficiency letter was issued to the company during investigation proceedings seeking further data/ information with regard to response submitted by them. One of the major deficiencies pointed out to the company was that a significant amount of export sales to India were made through the trading company ICC Handels AG, who had not filed the response. In response to the deficiency letter issued by the Authority, a limited and grossly deficient response was filed by ICC Handels. Thus, for a significant part of sales to India, they had not provided the sales price to India. The exporter was also asked to explain along with back up evidence about the purchase price of ethylene from its related party to demonstrate that the transactions were at arm's length basis. The producer/exporter was further requested to furnish details and explain their submission that the purchase of raw materials from the affiliated companies is based on transfer pricing which is based on discount to the monthly price published by the industry body market report.
61. The company has in response to the deficiency letter issued by the Authority provided a comparison of price of Ethylene when procured from unrelated entities and when procured from INEOS NORGE AS to show that procurement of raw materials from the related entity is at an arm's length basis. Further, the company has informed the Authority that the internal transfer price of Ethylene is calculated by giving a discount to the monthly contract price for Ethylene published by the Industry Body IHS Chemicals in their monthly market report. The responding producer/exporter has submitted the response to the deficiencies. The company has stated that the per unit expenses for the product under consideration and the other products (Paste-PVC and caustic) are the same and therefore total expenses were allocated pro-rata to sales volume since there is no difference in the expenses associated with the sale of PUC and non PUC. It has been further stated that two versions of Appendix-8 of EQR were provided to the Designated Authority and while the first version reflected the true roll through cost of manufacturing the product concerned and the second version was prepared in line with the cost reporting in INEOS Sverige's accounts. It has been further stated that the Designated Authority should use the second version for the purpose of reconciliation with Appendix-7 of EQR and the first version should be used for the purposes of the ordinary course of trade analysis. The true roll through cost of manufacturing reflects the fact that other sites within our group manufacture the inputs into INEOS Sverige's production process and roll through cost removes any internally generated profit created by transfer price used to sell between companies within the same group and transfer pricing between products made on the same site and therefore reconciliation of figures furnished in Appendix-7 of EQR with the figures furnished in Appendix-8 of EQR is not possible. In view of the above position, the Authority has not been able to determine the cost of production/sales of the PUC and therefore it was not possible for the Authority to conduct ordinary course of trade test and determine normal value based on -Do-mestic sales.
62. In this regard, it is noted that the application filed by the -Do-mestic industry contains estimates of sales price in countries in the European Union on the basis of published price of the subject goods in Harriman Chemsult and the same has been considered for the purpose of determination of normal value.

Export price

63. It is noted that the Company follows two trade channels for its sales to India i.e. direct sales to importers in India and sales through ICC Handels AG A.G., an independent, non-related trader of the subject goods based in Switzerland. The Company has provided some details of onwards sale of goods by ICC Handels AG. It is noted that M/s ICC Handels AG has sold subject goods to the importers in India. The company has claimed a single adjustment on account of Inland Freight, load expenses, ocean freight and ocean insurance collectively. Further, it has also claimed adjustments on account of commission and -Do-cumentation charges. It has been stated that the same have been claimed on the basis of actuals. The company has also claimed adjustment on account of credit expenses and packing expense. In view of the fact that response filed by M/s ICC Handels AG is grossly deficient and it -Do-es not give information on the export price of the subject goods sold to Indian customers which have been produced by the responding producers along with its adjustments, the exports made to India through ICC Handels AG have not been considered for the purpose of determination of export price. The Authority has determined the export price of the subject goods by taking into account only the direct exports (****% of total exports) made by them to India. The Authority has accepted the export price along with all adjustments claimed by them in their response. The export price so determined on a monthly basis has been used to determine dumping margin for that month.

M/s INEOS Chlor Vinyls Belgium NV

64. M/s INEOS Chlor Vinyls Belgium NV is a company incorporated under the laws of Belgium. The company is a 100% owned subsidiary of M/s INEOS Norway SPV Limited which in turn is a subsidiary of M/s INEOS A Gand forms a part of the INEOS group of companies.

Normal value

65. It has been submitted that the company sells the subject goods to end user in -Do-mestic market as well as distributors of the subject goods. The responding producer has sold the subject goods to unrelated customers as well as to related entities. The company has claimed adjustment of account of Inland Freight (on actual basis), Load Expenses, Credit expenses and packing expense.
66. A deficiency letter was earlier issued to the company asking for information. Amongst the major deficiencies pointed out to the company was the basis for the adjustments claimed by them and the -Do-cuments in support of the claim. It was also informed to them that almost all of their sales to were made through the trading company IIC Handels who have not filed the response. In addition, the exporter was requested to provide sufficient information on month wise basis by providing volume and value of consumption of major raw materials and any other information that they may like to provide with regard to cost of production of the product under consideration at the time of sale. It was also noted that the most of the VCM required for manufacture of PVC are captively produced and they were asked to state the basis of pricing the captively produced VCM for working out the cost of PVC. In their response, it has been submitted that the company procures all its major raw materials from non-related external suppliers. It has also been submitted that the company has a fully integrated production chain. The principal raw materials are Ethylene, Sodium Chloride, Potassium Chloride, Electricity and VCM. The company manufactures VCM at site and thereafter transports the same to INEOS Chlor Vinyls France SAS by train and to INEOS Chlor Vinyls Limburg BV by Pipeline. At the aforementioned production sites VCM is transformed to PVC. The two production sites manufacture the product under consideration on behalf of the company in exchange of a tolling fee and the company supplies the necessary raw materials to the above named tolling manufacturers. ICV Belgium in their reply to deficiency letter has inter alia stated that a complete reconciliation of the figures given in Appendix-7 of EQR with the figures furnished in Appendix-8 of EQR is not possible. It has been further mentioned that while the figures given in Appendix-7 are based on the sales quantities whereas the figures furnished in Appendix-8 are based on production quantities and therefore there may be discrepancies in the stock reconciliation figures in Appendices 7 and 8 of EQR. It has also been mentioned that while Appendix-7 of EQR has been prepared based on the integrated price of Chlorine and the SG&A expenses, the figures furnished in Appendix-8 of EQR were based on the fixed rate for Chlorine and -Do-es not include SG&A expenses. It has been further stated that it is not always possible to provide a full reconciliation as the cost break-Do-wn requested at Appendix-8 -Do-es not reflect the way which ICV Belgium reports its costs. In view of the above position, the Authority has not been able to determine the cost of production/sales of the PUC and therefore it was not possible for the Authority to conduct ordinary course of trade test and determine normal value based on -Do-mestic sales.
67. In this regard, it is noted that the application filed by the -Do-mestic industry contains estimates of sales price in countries in the European Union on the basis of published price of the subject goods in Harriman Chemsult report the same have been considered for the purpose of determination of normal value.

Export Price to India

68. It is noted that the Company follows different trade channels for its sales to India i.e. direct sales to importers in India well as sales through ICC Handels AG, an independent, non-related trader of the subject goods based in Switzerland who sold the subject goods to traders based in India. The company has claimed a single adjustment on account of Inland Freight, ocean freight and ocean insurance collectively. Further, it has also claimed adjustments on account of load expenses & commission. The same have been stated to have been claimed on the basis of actuals. The company has also claimed adjustment on account of credit expenses and packing expense. In view of the fact that response filed by M/s ICC Handels AG is grossly deficient and it -Do-es not give information on the export price of the subject goods sold to Indian customers which have been produced by the responding producers along with its adjustments, the exports made to India through ICC Handels AG have not been considered for the purpose of determination of export price. The Authority has determined the export price of the subject goods by taking into account the direct exports (***% of the total exports) made by them to India. The Authority has accepted the export price along with all adjustments claimed by them in their response. The export price so determined on a monthly basis has been used to determine dumping margin for that month.

M/S Ineos Newton Aycliffe Ltd. UK

69. INEOS Newton Aycliffe Ltd. is a private limited company incorporated under the laws of England and Wales. The company was initially named as NORSE Hydro Polymers Limited. Later, the company changed its name to INEOS Newton Aycliffe Limited. It has been submitted that subsequently, on 01.05.2013, INEOS Newton Aycliffe Ltd. transferred its S-PVC business to INEOS Chlor Vinyls Ltd. The S-PVC activities

formerly carried out by INEOS Newton Aycliffe Ltd. will be continued in the name of INEOS Chlor Vinyls Ltd. The Company has provided the Authority with a copy of the instrument bringing out the restructuring in its letter dated 10.06.2013. M/s INEOS Newton Aycliffe Limited is a 100% subsidiary of M/s INEOS Norway SPV limited which in turn is a 100% subsidiary of Kerling Plc. Kerling Plc is 100% owned by INEOS Group Investment Limited which in turn is a 100% subsidiary of INEOS AG.

Normal value

70. The company sells the subject goods to end user as well as the distributors. The company has claimed adjustment of account of Inland Freight (on actual basis), Credit expenses and packing expense. A deficiency letter was earlier issued to the company asking for information. Amongst the major deficiencies pointed out to the company, it was specifically asked to submit evidence for the adjustments claimed by them including its basis. It was also intimated that almost all of their sales are made through the trading company ICC Handels for which there is no response filed by the trader. It was also stated in the deficiency letter that the purchase of raw materials from the affiliated companies is based on transfer pricing which is based on discount to the monthly price published by the industry body market report. They were asked to explain the basis for providing discount and details of calculation in this regard. They were also asked to provide details of related party transactions and to reconcile the information submitted by them in the different appendices of the exporter's questionnaire.
71. In their reply to the deficiency, it has been stated that the company produces the product at its own site and the production starts from the stage of VCM. It has further been submitted that the company procures all the raw materials from third parties except VCM which is procured from its sister concerns in Norway and Runcorn. The company has claimed that the transaction of VCM with its sister concerns is at arm's length basis and is based on cost plus mechanism calculated on a FOB basis with reference to a discount to the SPVC and caustic soda liquor selling prices published by the Industry Body IHS chemicals in their monthly market reports. Further, it has been claimed by the company that the discounts used in the formula are reflective of the average discounts to the HIS published prices achieved by INEOS in selling caustic soda and SPVC in Europe.
72. It has been stated by INEOS Newton Aycliffe Ltd that two versions of Appendix-8 of EQR were provided to the Designated Authority. While the first version reflected the true roll through cost of manufacturing the product concerned and the second version was prepared in line with the cost reporting in INEOS Newton Aycliffe's accounts. The second version is the version which the Designated Authority should use for the purpose of reconciliation with Appendix-7 of EQR. The first version should be used for the purposes of the ordinary course of trade analysis. The true roll through cost of manufacturing reflects the fact that other sites within our group manufacture the inputs into INEOS Newton Aycliffe's production process. Roll through cost removes any internally generated profit created by transfer price used to sell between companies within the same group and transfer pricing between products made on the same site.
73. In view of the above position, the Authority has not been able to determine the cost of production/sales of the PUC and therefore it was not possible for the Authority to conduct ordinary course of trade test and determine normal value based on -Do-mestic sales.
74. In this regard, it is noted that the application filed by the -Do-mestic industry contains estimates of sales price in countries in the European Union on the basis of published price of the subject goods in Harriman Chemsult report and the same have been considered for the purpose of determination of normal value.

Export Price to India

75. The Company follows two trade channels for its sales to India i.e. direct sales to importers in India and sales through ICC Handels AG A.G., an independent, non-related trader of the subject goods based in Switzerland. The Company has provided some details of onwards sale of goods by ICC Handels AG. ICC Handels AG has sold the goods to Importer in India through two invoices, copies of which were provided by INEOS Newton Aycliffe Limited. The company has claimed adjustments on account of inland freight, load expenses, ocean freight, ocean insurance, and commission and bank charges. The same have been claimed on the basis of actual. The company has also claimed adjustment on account of credit expenses and packing expenses. In view of the fact that response filed by M/s ICC Handels AG is grossly deficient and it -Do-es not give information on the export price of the subject goods sold to Indian customers which have been produced by

the responding producers along with its adjustments, the exports made to India through ICC Handels AG have not been considered for the purpose of determination of export price. The Authority has determined the export price of the subject goods by taking into account the direct exports (***) of total exports) made by them to India. The Authority has accepted the export price along with all adjustments claimed by them in their. The export price so determined on a monthly basis has been used to determine dumping margin for that month.

Dumping margin determination for Ineos group of companies

76. Based on analysis as mentioned above, the normal value and export price of the subject goods have been determined for each company for every month of the POI. Thereafter, the dumping margin and dumping margin in percentage term has been determined for each company for the POI as a whole and thereafter one weighted average dumping margin and dumping margin in percentage term has been determined for the subject goods for the INEOS Group of companies.

Normal Value for Mexico

77. From the response, it is noted that M/s Mexichem Resinas Vinilicas , S.A. de C.V. is a company incorporated pursuant to the General Law of Commercial Companies (“Ley General de Sociedades Mercantiles”) and has claimed to be the only producer of suspension grade PVC from Mexico. It has been submitted that they are a wholly owned subsidiary of Mexichem S.A.B. de C.V., which is one of the largest chemical products producers in Latin America. Further, Mexichem S.A.B. de C.V., owns 100% of Mexichem America Inc., which is a U.S. trading company that sells/buys the subject product, mainly in the North American and South American markets. Mexichem S.A.B. De C.V is also a 100% owner of Mexichem Resinas Colombia, S.A.S., which is a producer of the suspension PVC located in Colombia. It has been submitted that none of these companies except Mexichem Resinas Vinilicas, S.A. de C.V. are concerned with selling and exporting the subject goods to India. From the response, it is noted that the Company produces the subject product in the following factories in México:
- a) Planta Altamira I in Tamaulipas México
 - b) Planta Altamira II in Tamaulipas México
 - c) Planta Tlaxcala in Tlaxcala México
 - d) Planta La Presa in Esta-Do- de México
78. In their response to the Authority, it has been submitted that none of the materials are purchased from related suppliers or captively produced. Mexichem Resinas Vinilicas -Do-es not receive either directly or indirectly any grants, subsidies or any other consideration on manufacturing, export or transportation of goods. There are no financial or contractual links or joint ventures with any other company concerning research and development, production, sales, licensing, technical and patent agreements for the product concerned. The product involved in this investigation exported to India and sold by Mexichem Resinas Vinilicas in its home market (Mexico), Polyvinyl Chloride (Suspension type), commonly known as PVC (S-PVC) is a Chloro-ethylene polymer (C₂H₃Cl)_n, having molecular mass between 60,000 – 150,000, values which are intimately linked with a K-Value that defines the resin and its use. It has also been submitted that all facilities around the world producing PVC generate small quantities of off-grade resin, which are traded and used in applications which -Do- not strictly comply with full specifications; consequently, with this, price of this resin is cheaper than the prime material but the quantity is so small that it -Do-esn’t have any effect on the market. It has been submitted that this off-grade resin should not be considered for purposes of the calculation of the dumping margins, since it is product that -Do-es not meet the quality and specifications of the prime product, and -Do-es not compete in the market with the prime material.
79. It has been submitted that the subject goods are produced in the above said plants and stored at a common warehouse. A deficiency letter was earlier issued to responding producer requesting them to provide sufficient information to enable the Designated Authority to ensure fair comparison between normal value and export price, by considering sales made at as nearly as possible the same time. In this regard, exporter was requested to provide sufficient information on month wise basis by providing volume and value of consumption of major raw materials and any other information that they may like to provide with regard to cost of production of the product under consideration at the time of sale. The producer cum exporter was also asked to submit the response to the exporter’s questionnaire strictly in the form and manner of exporter’s

questionnaire. Though, replies to the deficiency letter have been received, it is noted that the response with respect to few appendices was still deficient. In particular, it is noted that there is no reconciliation of the information/data given in Appendix-5 to 8 of the response to the exporter's questionnaire. In view of the above, the information/data with respect to cost of production furnished by the producer/exporter has not been considered by the Authority. In view of the above, the Authority has determined the normal value of the subject goods in Mexico on the basis of facts available. In this regard, it is noted that the application filed by the -Do-mestic industry contains estimates of sales price in Mexico on the basis of published price of the subject goods in Harriman Chemsult in Mexico and the same has been considered for the purpose of determination of normal value.

Export price

80. It is noted that the responding producer and exporter has exported the subject goods to India directly. The company has claimed adjustments on account of freight, insurance, and credit expense. In response to the deficiency letter, it has been submitted that for freight, the logistic department of the company has a rate that is negotiated with the transportation companies. From that rate, a factor is obtained which is then applied per ton on any given sale that requires freight. For insurance, the company acquires general insurance coverage which is then allocated per ton of product, based on a factor. The Authority has accepted the export price along with all adjustments claimed by them in their response. The export price so determined on a monthly basis has been used to determine dumping margin for that month.

Dumping Margin for responding producer and exporter from subject countries

81. It is noted that information submitted by responding producers and exporters have been examined by the Authority and it is noted that there is no consistent difference in the prices of the subject goods in terms of various grades which are primarily in terms of different K values. However, there is a marked variation in the prices of the subject goods based on the month to month comparison. For the reasons mentioned above, the Authority has considered appropriate to compare all subject goods on a month wise basis.
82. The export sales to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and accepted by the Authority), were compared with the normal values to determine the dumping margin. In the case of exports of Ineos group, the Authority has considered only the direct exports made by them to Indian customers which constituted 76% of the total exports made by them. The Authority has not considered the remaining exports made by Ineos group through unrelated traders as the responses received from them were grossly deficient. The dumping margin has been determined for responding producers and exporters from subject countries by comparing normal values and export prices determined as mentioned above on a monthly basis. The dumping margin for the responding producers and exporters so determined is mentioned in the dumping margin table.
83. It is noted that in the subject investigations many cooperating producers and exporters from European Union are related to each other and form a group of related companies. It has been the consistent practice of the Authority to consider related exporting producers or exporting producers belonging to the same group as one single entity for determination of a dumping margin and thus to establish one single dumping margin for them. The Authority holds that granting of individual dumping margins might enable related exporting producers to channel their exports to India through the company with the lowest individual dumping margin enabling them to circumvent the anti-dumping measures and thus rendering them ineffective. In view of the above, the related exporting producers belonging to the same group from EU have been regarded as one single entity and accordingly granted one single dumping margin. This margin was calculated on the basis of the weighted average of the dumping margins of the cooperating producers/exporters in the respective groups.
84. The dumping margins during the POI for all co-operating exporters/producers from subject countries thus determined have been shown in the table below.

Dumping Margin for other producers and exporters from Subject countries

85. The export price to India in respect other producers and exporters from subject countries have been determined on the basis of best available information. Information provided by the responding exporters, the applicants and DGCI&S have been relied upon for the purpose. Price adjustments have been made on account of adjustments like freight, insurance, etc. The export sales to India were compared to the corresponding constructed normal value to determine the dumping margin. After the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as mentioned in the table below. It is seen that the dumping margins are quite significant.

Determination of Dumping margin for Ineos group of companies (EU) and Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V (Mexico) and residual producers and exporters from EU and Mexico.							
Country/ Territory	Producer	Exporter	Dumping margin US\$/MT	Dumping margin %	Group DM US\$/MT	Group DM %	Dumping Margin range (%)
EU	M/s INEOS Vinyls Deutschland GmbH, Germany	M/s INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany	***	***	***	***	65-75
	M/s INEOS Sverige AB, Sweden	M/s INEOS Sverige AB, Sweden	***	***			
	M/s INEOS ChlorVinyls Belgium NV	M/s INEOS ChlorVinyls Belgium NV	***	***			
	* M/s INEOS ChlorVinyls Ltd, UK	* M/s INEOS ChlorVinyls Ltd, UK	***	***			
	Others	Others	***	***	Not Applicable	Not Applicable	75-85
Mexico	Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V.	Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V.	***	***	Not Applicable	Not Applicable	15-25
	Others	Others	***	***	Not Applicable	Not Applicable	35-45

* Prior to 01.05.2013 the operations of M/s INEOS ChlorVinyls Ltd. were carried out by M/s INEOS Newton Aycliffe Limited which transferred its business to M/s INEOS ChlorVinyls Ltd (U.K.) with effect from 01.05.2013.

INJURY

Submissions made by importers, exporters, users and user associations

The following are the submissions of the exporters in the subject investigation

- The Annual Report of Indian producers -Do-es not show injury. On the contrary, it shows increase in prices and revenues. Reliance report shows increase in sales revenue and net income in third quarter of 2012-13. Finolex Annual Report shows growth in production and sales revenue in 2011-12.
- Imports from subject countries did not have a negative impact on the -Do-mestic industry prices. Published Reports shows the -Do-mestic industry has been able to increase its prices. Reference has been made to published information with regard to Reliance, HIS Chemical Market Services and ICIS which have reported increase in prices.
- There is a significant demand supply gap in the country. About 44% of the demand for the product is being met through imports. Imports are thus necessary to meet the demand of the product in the country.
- Increased imports were necessary due to unplanned suspension of production by Finolex in the month of July 2011.
- European Union is not a principal supplier of the product in the country. Imports from European Union constituted only 5.4% of total imports and could not have caused injury to the -Do-mestic industry.
- Do-mestic industry is already operating at high capacities and still there is significant demand supply gap. Imports have to be made to meet the demand for the product in the country.
- The Indian industry has not expanded capacities in line with increase in the demand for the product in the country.
- Injury to the -Do-mestic industry is primarily from other countries in respect of which sunset review investigation are being undertaken at present.

- i. Prices in the Indian market are driven by the prices offered by imports under sunset review. Sales negotiations between INEOS and Indian customers establish that prices are governed by the prices offered by suppliers from sunset review countries.
- j. Injury to the industry is self-inflicted, as the industry has not expanded capacity to capitalize on the rising demand. Further, -Do-mestic industry has cost disadvantage, as they are incurring high cost on account of VCM as compared to vertically integrated producers who have captive production of VCM. Further, Finolex imports have caused injury to the industry.
- k. Cost of production of the Indian producers has increased which is the cause for injury. Finolex reported significant increase in respect of electricity, furnace oil, LPG and HSD/SKO, Naphthalite during 2011-12, whereas HIS reported that -Do-mestic market has been driven by increasing raw material costs which -Do-mestic producers were seeking to offset through sale price increase.
- l. HIS has reported that costs are higher due to limited availability of Vinyl Feedstock which shall continue to restrict investments in new Vinyl plant.
- m. -Do-mestic industry is impacted by endemic structural problems.
- n. Imposition of anti dumping duty will not be in the interest of the consumers' interests, as it will negatively impact -Do-mestic consumers. The country is facing demand supply gap. The -Do-mestic industry has not committed to enhance its capacities. Capacities are lagging behind the consumption in India. Imports from European Union are vital to the Indian consumers to ensure Indian customers have uninterrupted access to a key chemical building block. Imposition of duty shall enhance cost for the PVC converters. Imposition of duty shall provide SSR countries increased market access vis-à-vis European suppliers.
- o. Both Finolex and Reliance Industries Limited has reported growth in demand. Further, Finolex reported growth in terms of production, sale revenue in 2011-12, Reliance posted 24% year on year increase in net income in the third quarter of the 2012-13.
- p. Any increase in imports from subject countries has not had a negative impact upon -Do-mestic sales prices. Reliance, HIS Chemical Market Service and ICIS have reported increase in PVC suspension prices by the suppliers in India.
- q. Dumping by third country exporters. Prices are driven by the availability of product originating from SSR subject countries. This is supported by evidence of sales negotiations between INEOS and Indian customers during POI.
- r. This is a case of self inflicted injury as the -Do-mestic industry failed to make necessary investments to capitalize and cost of production disadvantage of -Do-mestic industry as they import VCM whereas the producers in subject countries benefit from vertically integrated supply chains which reduces cost of production. It has also been stated that whereas Finolex imports product under consideration from EU, Taiwan and other countries and as such influence imports of PVC and its prices
- s. Finolex reported material increases in respect of electricity, furnace oil, LPG and HSD/SKO, Naphthalite during 2011-12, HIS reported that -Do-mestic market has been driven by increasing raw material cost which -Do-mestic producers were seeking to offset through sale price increase.
- t. It will negatively impact important -Do-mestic industry in India and isolate India from global demand supply gap.
- u. Anti-dumping duty will increase the cost of PVC converters.
- v. It has been stated by Government of Mexico that free flow of trade is essential between the two countries in the present global economic recession. Further, it has been stated that the evidence of normal value is not based on price in Mexico. There is no evidence of imports of product under consideration from Mexico in 17 different tariff items. There is no analysis of the grades of PVC resin imported from Mexico and comparability of those with grades supplied by the -Do-mestic industry. Imports even at highest level represent only 2.7% of demand for the product in the Country. Imports from other SSR countries are higher and are cause of injury to the -Do-mestic industry. Imports from present countries being much lower, the same could not have impacted the prices of the -Do-mestic industry. Import price from Mexico showed increasing trend. Both sales price and cost of production shows increasing trend and increase in cost of production is higher than increase in selling price. It has also been stated that Govt. of Mexico was not notified before initiation of investigations.

Submissions made by -Do-mestic Industry

86. The -Do-mestic industry has argued that:

- a) A cumulative assessment of the effects of imports from the subject countries is appropriate since margin of dumping from each of the subject countries is more than the minimum prescribed, the volume of exports from each of the subject countries is more than the minimum prescribed, and the exports from the subject countries directly compete with the like goods offered by the -Do-mestic industry in the Indian market.

- b) The -Do-mestic industry is suffering injury from dumped imports from the present subject countries and other countries for which the Designated Authority is conducting sunset review.
- c) The demand/apparent consumption in the country have risen continuously throughout the injury period.
- d) The volume of imports from the subject countries has increased significantly in the POI when compared with the base year and previous year.
- e) The market share of the -Do-mestic industry and also of other Indian producers has decreased in the POI, while that of imports from the subject countries has increased.
- f) The production of the -Do-mestic industry has also increased over the injury period. The capacity utilization of the -Do-mestic industry has reduced in the POI when compared with the base year, though it has been increasing from 2009-10 to the POI.
- g) The volume of sales has increased over the injury period.
- h) The volume injury parameters such as production and sales may not show injury taken separately. This is because the nature of the product and the production process is such that the -Do-mestic producers cannot afford to run the plant at low utility rates. Plants have to be run continuously and at high utility rates. Further, the -Do-mestic producers cannot keep high inventories of the product. The product must be sold at whatever price the -Do-mestic producers can get.
- i) Profit per unit, return on investment (ROI) and cash profits have deteriorated substantially over the injury period to the extent that all these parameters are negative in the POI.
- j) Wages have increased. But this was expected given the facts & circumstances. Employment has increased in the POI when compared with the base year, but has declined when compared with the previous year.
- k) The -Do-mestic producers are largely selling the goods in the -Do-mestic market offering payment terms as “cash against delivery”. In fact, in a large number of cases, payments are received first and material is delivered thereafter. As opposed to this, the foreign producers have been offering interest free credit upto 90 days. This can be verified from the questionnaire responses that have been filed by the responding exporters. Since the credit offered by the -Do-mestic industry and foreign producers are different, the non injurious price is required to be compared with landed price of imports after appropriately adjusting any one of the two for the difference in the credit period.
- l) The -Do-mestic producers have been incurring significant freight cost in transporting the product from their factory warehouses to depot warehouses within the Country. The goods are sold to the customers from these depot warehouses.
- m) With regard to working capital, it has been stated that in the past, Designated Authority has treated negative working capital as zero for the purpose of determination of capital employed. In any case, it would be inappropriate and against accounting principles to deduct negative working capital from net fixed assets.
- n) Petitioners submit that the questionnaire responses being incomplete, the same are required to be rejected for determination of dumping margin.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

87. The Authority has taken note of submissions made by the -Do-mestic industry and other interested parties. The Authority has examined the injury to the -Do-mestic industry in accordance with the Anti-dumping Rules.
88. The Authority has considered the data of the -Do-mestic industry pertaining to the product under consideration for the purpose of injury analysis. Therefore, the contention of interested parties regarding the profitability of Reliance and Finolex has no relevance in the analysis made by the Authority. The Authority further notes that one of the -Do-mestic producers had commenced commercial production of its green field plant at Cuddalore in 2009-10 for manufacture of the PUC. The Authority notes that this -Do-mestic producer had incurred losses since inception in spite of operating at a fairly reasonable capacity due to the price pressure imposed on them by the dumped imports. One of the interested parties has submitted that there is a short fall in the -Do-mestic supply of the PUC and therefore import is inevitable. The Authority holds that there is nothing wrong in imports making up the shortfall in -Do-mestic supply but such imports should be at un-dumped and fair prices without causing injury to the -Do-mestic industry. The Authority further notes that the selling price of the -Do-mestic industry has increased throughout the injury period but the increase was not sufficient to

absorb the increase in cost of production particularly the cost of major raw material. The Authority notes that the price suppression caused by the dumped imports had adversely affected the financial performance of the -Do-mestic industry. With regard to the submission of EU that the profit margin of 22% allowed to -Do-mestic industry is very high and the same appears to have been applied on cost of production instead of capital employed, it is noted that return on capital employed @ 22% has been allowed only on capital employed and not on cost of production as per Anti dumping rules and as per its consistent practice.

89. Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the -Do-mestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on -Do-mestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.

90. As regards the consequent impact of dumped imports on the -Do-mestic industry, Para (iv) of Annexure-II of Anti-dumping Rules states as under:

“The examination of the impact of the dumped imports on the -Do-mestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting -Do-mestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

91. It is clearly understood that all parameters of injury need not show deterioration. The Designated Authority must consider all injury parameters and thereafter conclude whether the -Do-mestic industry has suffered injury.

92. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments in the submissions.

93. Annexure II para (iii) of the Anti-dumping Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports only when the Authority determines that: -

- a. The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively accounts for more than seven percent of the import of like article and
- b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like -Do-mestic articles.

94. In this regard, the Authority observes that:

- a. The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed above;
- b. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the -Do-mestic industry in the Indian market. This is evident from the following:
 - i. The subject goods manufactured by the producers from the subject countries *inter se* and in comparison to the product manufactured by the -Do-mestic industry has comparable properties. In other words, the subject goods supplied from various subject countries and by the -Do-mestic industry are *inter se* like articles.
 - ii. The information furnished to the Authority gives a reasonable indication that imported and -Do-mestic materials are being used interchangeably and there is direct competition between the -Do-mestic product and the imported product and imported product *inter se*.
 - iii. Volume of imports from each of the subject countries is significant.
 - iv. Consumers make purchase decision on the basis of prices offered by various suppliers.

95. In view of the above, the Authority considers that it is appropriate to cumulatively assess the effect of imports of the subject goods from EU and Mexico on the -Do-mestically produced like article, in the light of conditions of competition between the imported products and the like -Do-mestic product.
96. Interested parties have contended that annual reports of the petitioner companies or Finolex -Do-es not show injury. The Authority notes that reference in this regard has been made either to increase in volumes reported in the annual reports or increase in sales revenues or selling price referred in the annual reports. With regard to the arguments that Annual report of the petitioners show increase in incomes, it is noted that the Authority has examined the costs and prices of the subject goods produced and sold by the petitioners and has worked out the profitability of the -Do-mestic industry in respect of subject goods sold and produced by them which is mentioned in the appropriate headings.
97. With regard to the argument that European Union is not a principal supplier of the product in the market, it is noted that subject investigation has been carried out in terms of Anti-dumping rules and these rules -Do- not require Authority to distinguish between different dumped sources. The Authority is not required to segregate injury caused by dumped imports from different sources which are subject matter of separate investigations. Further, rules require Authority to examine whether dumped imports have caused injury to the -Do-mestic industry.
98. With regard to the contention that despite significant demand supply gap, the -Do-mestic industry has not expanded capacities, the Authority notes that the -Do-mestic industry has contended that continuous adverse market conditions with regard to product under consideration have prevented the -Do-mestic industry from further enhancing the capacities.
99. With regard to the contention that prices in the market has been set by the countries under separate investigations through sunset review, the Authority notes that comparison of month by month prices from Europe and imports from sunset countries shows that import prices from European Union were also at dumped prices and the dumping margin has been found significant in the present case in respect of EU and Mexico.
100. Annexure-II of the Anti-dumping Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the -Do-mestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on -Do-mestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

Volume Effect of Dumped Imports and Impact on -Do-mestic Industry

Import Volumes and Share of Subject Countries

101. It is noted that the imports from subject countries have recorded a significant increase in absolute terms during injury period including POI i.e. from 38415 MT in 2008-09 to 137638 MT in 2011-12 (POI).

Volume of Imports	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Subject Countries	MT	38,415	71,650	50,386	1,37,638
EU	MT	34,294	59,697	39,454	1,02,970
Mexico	MT	4,121	11,953	10,933	34,667
Countries attracting anti dumping duties	MT	1,84,282	4,10,357	4,47,600	5,63,008
Trend		100	223	243	306
Other Countries	MT	12,615	63,729	52,482	50,382
Trend		100	505	416	399
Total Imports	MT	2,35,312	5,45,736	5,50,468	7,51,027
Trend		100	232	234	319

-Do-mestic Production	MT	10,25,900	10,75,652	12,37,987	12,40,352
Imports from subject countries relative to -Do-mestic production	%	4	7	4	11
Demand	MT	12,08,513	15,30,783	17,30,485	18,80,092
Imports from subject countries relative to consumption	%	3	5	3	7
Share of imports from subject countries in total imports	%	16	13	9	18

102. The Authority is currently conducting a sunset review in respect of imports from China PR, Taiwan, In-Do-nesia, Japan, Malaysia, Thailand, Korea RP and USA. It is noted that imports from these countries have also increased in the POI when compared with the base year, though they have decreased when compared with the previous year. Imports from other countries have been decreasing in absolute terms from 2009-10 to the POI.

103. It is noted that imports from the subject countries in relation to -Do-mestic production have increased from 4% in 2008-09 to 11% in the POI. Imports from the subject countries in relation to total demand or apparent consumption in India increased from 3% in 2008-09 to 7% in the POI. Similarly, the imports from the subject countries in relation to total imports have increased from 16% in 2008-09 to 18% in the POI. The Authority, therefore, holds that imports from the subject countries have increased both in absolute and relative terms.

Assessment of Demand and Market Share

104. The demand of subject goods has been determined by adding -Do-mestic sales of -Do-mestic like product with imports of subject goods from all countries. The Authority notes that demand of subject goods increased during the injury period.

Particulars	Units	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Total -Do-mestic sales	MT	7,87,181	8,17,655	9,77,281	9,78,779
<i>Trend</i>	Index	100	104	124	124
Total Imports	MT	2,35,312	5,45,736	5,50,468	7,51,027
<i>Trend</i>	Index	100	232	234	319
Demand	MT	12,08,513	15,30,783	17,30,485	18,80,092
<i>Trend</i>	Index	100	127	143	156
Imports from subject Countries	MT	38,415	71,650	50,386	1,37,638
<i>Trend</i>	Index	100	187	131	358
Share of -Do-mestic Industry in demand	%	65	53	56	52
<i>Trend</i>	Index	100	82	87	80
Share of imports from Subject Countries in demand	%	3	5	3	7
<i>Trend</i>	Index	100	147	92	230
Share of imports from Countries attracting anti dumping duties in demand	%	15	27	26	30
<i>Trend</i>	Index	100	176	170	196
Share of imports from Other Countries in demand	%	1	4	3	3
<i>Trend</i>	Index	100	399	291	257

105. It is noted that the market share in demand of the imports from the subject countries has increased in the POI when compared with the base year and the previous year. Meanwhile, the share of the -Do-mestic industry has declined in the POI when compared with the base year and previous year.

Price Effect of the Dumped Imports on the -Do-mestic Industry

Price Undercutting

106. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports of the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In this regard, a comparison was made between the landed values of the product concerned and the average selling price of the -Do-mestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the -Do-mestic industry were determined at the ex-factory level. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in subject countries were imported in the Indian market at prices which were lower than the -Do-mestic industry selling prices. It is thus noted that imports of subject goods were undercutting the -Do-mestic prices and margin of undercutting is considered significant.
107. The impact on the prices of the -Do-mestic industry on account of the dumped imports from the subject countries has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, and price suppression or price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the -Do-mestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
-Do-mestic Net Sales Realisation	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	104	110	118
Landed price of imports					
Subject Countries	Rs./MT	35,518	45,153	45,906	51,893
Trend	Index	100	127	129	146
EU	Rs./MT	35,565	46,049	45,583	51,980
Trend	Index	100	129	128	146
Mexico	Rs./MT	35,127	40,679	47,071	51,635
Trend	Index	100	116	134	147
Price Undercutting					
Subject countries	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	36	54	34
EU	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	29	57	34
Mexico	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	72	42	35
Price Undercutting					
Subject countries	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	28	41	24
EU	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	22	44	23

Mexico	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	62	32	24
Price Undercutting range					
Subject countries	%	30-40	5-15	10-20	5-15
EU	%	30-40	5-15	10-20	5-15
Mexico	%	30-40	20-30	10-20	5-15

108. It is noted from above that the imports of subject goods from the subject countries are undercutting the prices of the -Do-mestic industry during the injury period. Further it is noted that the subject countries individually are undercutting the prices of the -Do-mestic industry.

Price Under selling

109. The Authority has also examined price underselling suffered by the -Do-mestic industry on account of dumped imports from subject countries. After due examination, it is seen that the Landed price of the subject goods into India from subject countries has been lower than the NIP determined for the -Do-mestic industry resulting in price underselling. The price underselling margin has been determined by taking NIP and landed value on a monthly basis.

Particulars	POI
Price Under selling US\$/MT	
EU	***
Mexico	***
Price Under selling %	
EU	***
Mexico	***
Price Under selling (% Range)	
EU	0-10
Mexico	0-10

Price Depression and Suppression

110. It is noted that the -Do-mestic Industry is not adversely affected by the reason of price depression as -Do-mestic selling price has increased during the injury period.
111. However, it is noted that the -Do-mestic Industry is adversely affected by the reason of price suppression. It is noted that the cost to make and sell the -Do-mestic like product by the -Do-mestic industry has increased during 2010-11 and POI after a fall in 2009-10. The Selling price of the -Do-mestic industry has increased during the injury period. However, the increase in selling price was not in proportion to the increase in cost to make and sell the subject goods. The price suppression is considered significant.

(Rs. per MT)

Particulars	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Cost to make and sell	***	***	***	***
Index	100	91	103	126
Increase (Decrease) from base year (%)	-	(***)	***	***
-Do-mestic Selling Price	***	***	***	***
Index	100	105	109	116
Increase (Decrease) from base year (%)	-	***	***	***

Economic parameters of the -Do-mestic industry

112. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on -Do-mestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the -Do-mestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting -Do-mestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the -Do-mestic industry reveals that the -Do-mestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the -Do-mestic industry are discussed below.

Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

113. It is submitted by the -Do-mestic industry that they had enhanced the capacities which started commercial production in 2009-10, and became fully operational in 2010-11 which lead to increase in the volume of production. It is noted that there is an increase in the volume of production as well as -Do-mestic sales. However, the capacity utilisation of the -Do-mestic industry has decreased in the injury period as compared to the base year.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Capacity	MT	808,320	897745	1,029,320	1,029,320
Production	MT	784,884	833,651	977,797	985,559
Capacity Utilization	%	97.10	92.86	94.99	95.75
-Do-mestic Sales	MT	769,326	800,227	951,324	951,941

114. It is thus concluded that volume of production and -Do-mestic sales of the -Do-mestic industry improved over the period. However, the capacity utilisation has declined during the entire injury period.
115. With regard to the contention that despite significant demand supply gap, the -Do-mestic industry has not expanded capacities, the authority notes that while it may be true that the -Do-mestic industry may not be able to meet the demand, the same -Do-es not justify existence of dumping of the product and adverse price effect on the -Do-mestic industry. It is also noted that the -Do-mestic industry has contended that continuous adverse market conditions with regard to product under consideration has prevented the -Do-mestic producers from further enhancing the capacities.

Profitability, return on investment and cash profits

116. The data on Profitability and return on investment of the -Do-mestic industry are furnished in the table given below:

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Profit/loss before tax	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	238	169	17
Profit/loss before tax	Rs./lakhs	***	***	***	***
Trend	Index	100	248	208	21
Profit/loss before interest and tax	Rs./lakhs	***	***	***	***
Trend	Index	100	210	177	28
Cash profit	Rs./lakhs	***	***	***	***
Trend	Index	100	231	196	27
ROCE	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	156	167	26

117. Profitability of the -Do-mestic industry has been determined by considering the cost to make & sell and the selling price. It is noted that profitability of the -Do-mestic industry has increased in 2009-10 and thereafter declined. The profitability during POI has steeply declined. Further, as a result of steep decline in profitability, the profit before interest, cash profits and return on investment in POI also steeply declined.

Market Share

118. It is noted that the market share of the -Do-mestic industry declined in the POI, whereas that of imports from the subject countries increased over the injury period.

Market Share	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Demand	MT	12,08,513	15,30,783	17,30,485	18,80,092
Share of -Do-mestic Industry	%	65	53	56	52
Share of Subject Countries	%	3	5	3	7

119. As regards the argument that European Union is not a principal supplier of the product in the market, the authority notes that the rules -Do- not require authority to distinguish between different dumped sources. The authority is not required to segregate injury caused by dumped imports from different sources which are subject matter of separate investigations. Further, rules require authority to examine whether dumped imports have caused injury to the -Do-mestic industry. In a situation where dumped imports from different sources have caused injury to the -Do-mestic industry and where such different sources are under investigation through different investigations, the rules -Do- not require authority to determine the extent of causal link from different sources.

Employment, Productivity and Wages

120. It is noted from the Table given below that the employment with the -Do-mestic industry increased from 2008-09 to 2009-10 but declined thereafter. Wages paid increased over the injury period. Productivity per day, as well as productivity per employee, also showed an increase. The -Do-mestic industry has claimed that trends with respect to employment and wages are determined by a number of factors, and may not be indicative of dumping.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Employment	Nos.	***	***	***	***
Trend	Index	100	116	115	115
Productivity per day	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	106	125	126
Productivity per	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	91	108	109
Wages	Rs Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	105	144	161

Inventories

121. It is noted from the data furnished in the Table given below that the average inventory levels of the -Do-mestic industry increased till 2010-11 but declined during the period of investigation. However, the levels of inventories with the -Do-mestic industry have steeply increased over the injury period.

Particulars	Unit	2008-09	2009-10	2010-11	POI
Average Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	299	395	283

Factors affecting prices

122. It is noted that market conditions are favourably disposed towards using the product produced by the -Do-mestic industry and yet the market is forcing the -Do-mestic industry to sell the product at injurious prices. It is noted that decline in operating performance of -Do-mestic industry is because of dumped imports coming into the country. The capacities for the product under consideration are lower than demand for the product in the Country and therefore it cannot be said that the -Do-mestic industry is selling at low prices in distress. Given significant presence of imports in the market, and as contended by the -Do-mestic industry, the -Do-mestic industry is forced to set its prices in line with the import prices, even when the -Do-mestic industry wishes to set its prices considering the movements in VCM. The -Do-mestic industry specifically contended that it should set its prices upward or -Do-mestic industry depending on the increase or reduction in costs due to changes in VCM. However, since imported goods are -Do-mestic industry in the market, the -Do-mestic industry is forced to set its prices considering the prices offered by the foreign producers. It is thus noted that the major factor affecting the level of -Do-mestic prices is the price at which the imported goods enter into the country.

Growth

123. Though the -Do-mestic industry has recorded a positive growth in volume terms it has recorded significantly negative growth in financial terms as could be observed from the following Table. It is also noted that during POI, the growth in volume terms was very minimal and there was significant negative growth in financial parameters during POI.

		2008-09	2009-10	2010-11	POI
Growth in					
Production	%	-	6.21	17.29	0.79
-Do-mestic Sales	%	-	4.02	18.88	0.06
Profit	%	-	***	(***)	(***)
Cash Profit	%	-	***	(***)	(***)
ROCE	%	-	***	***	(***)

Ability to raise capital investments

124. The Authority notes that despite the increase in demand for the product under consideration in the Country, only one -Do-mestic producer has made capacity addition in 2009-10. The Authority notes that given the profitability of the -Do-mestic industry in POI, it is unlikely that the -Do-mestic industry would be in a position to raise funds for investment in capacity addition for PUC.

Level of dumping & dumping margin

125. It is noted that the imports coming into India from the subject countries are above the de minimis level of dumping margin.

Conclusion on injury

126. There has been a significant increase in the volume of dumped imports from subject countries in absolute terms. The share of dumped imports in relation to the consumption of subject goods in India has also increased significantly. Imports have thus increased both in absolute terms and in relation to production and consumption in India. The dumped imports are undercutting the prices of the -Do-mestic industry in the market. It is also determined that the dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price suppression and price underselling. Imports have prevented the -Do-mestic industry from raising its prices in proportion to the cost increases. Further, the dumping margins from responding producers and exporters from the subject countries have been determined and are considered significant. With regard to consequent impact, it is noted that dumped imports of subject goods from subject countries have adversely impacted the performance of the -Do-mestic industry in respect of profits, cash flow and return on investment. Therefore, the Authority concludes that the -Do-mestic industry has suffered material injury and such injury has been caused by price and volume effects of dumped imports from the subject countries.
127. It is noted that the demand/consumption of the product in the Country is significantly higher than the capacities with the Indian producers. Thus, imports of the product were inevitable. However, it is not the contention of the -Do-mestic industry also that imports have had adverse volume effect on the -Do-mestic

industry. Even the -Do-mestic industry has contended that despite significant demand supply gap in the country and despite the fact that significant share of demand in the country is required to be met by imports, performance of the -Do-mestic industry deteriorated materially with regard to profits, return on investment and cash flow. Imports are undercutting the -Do-mestic prices. Price undercutting has led to significant suppressing effect on the prices of the product in the market. Further, the imports are resulting in significant price underselling.

D. Causal Link

128. The Authority has examined whether other factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the -Do-mestic industry. The examination of causal link has been -Do-ne as follows:

Imports from third countries

129. The Authority has examined the transaction-wise imports data of the subject goods from DGCIS. It is noted that, besides imports from the subject countries and the countries being examined by the Authority in the concurrent sunset review investigation, imports. As regards imports from countries in respect of which sunset review investigation is being conducted, the Authority notes that these imports are at marginally higher prices even though they have been alleged to have been made at dumped prices.

Contraction in demand

130. The Authority notes that the demand for the subject goods has shown significant improvement during the injury period. Possible contraction in demand could not have caused injury to the -Do-mestic industry.

Changes in the pattern of consumption

131. It is noted that the pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any material change. The investigation has not shown existence of alternate competing products and possible injury being caused by such alternate products.

Trade Restrictive practices of and competition between foreign and -Do-mestic producers

132. The Authority notes that the subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the -Do-mestic market. There is no restriction on fair trade in the country and imports of the subject goods take place from several countries and compete with the -Do-mestic producers. There are several producers of the subject goods in the -Do-mestic market and there is healthy growth in demand, which outstrip the supply. Therefore, demand not being a constraint, unhealthy competition in the -Do-mestic market or any unfair trade restrictive practices have not contributed to the claimed injury of the -Do-mestic industry.

Developments in Technology

133. The Authority notes that there is no contention of significant developments in technology. Therefore, development of technology is not a possible cause of injury to the -Do-mestic industry.

Export performance

134. The injury analysis has been -Do-ne on the -Do-mestic operation of the -Do-mestic industry to the extent separate information is available. Further, export volumes of the -Do-mestic industry have not materially declined. Nor the injury to the -Do-mestic industry has been found in respect of volume parameters. The price parameters (profits, return on investment and cash profits) are based only on -Do-mestic operations and therefore, injury if any due to export performance of the -Do-mestic industry has not been attributed to the injury suffered by the -Do-mestic industry.

Productivity of the -Do-mestic Industry

135. The productivity of the -Do-mestic industry has improved over the period and therefore decline in productivity cannot be the reason for the established injury to the -Do-mestic industry.

Other factors and Factors establishing causal link

136. It has been contended that injury to the -Do-mestic industry is self-inflicted. The Authority, however, notes that the factors listed by the interested parties in this regard -Do- not establish that the claimed injury to the -Do-mestic industry is self-inflicted. It is noted in this regard that there is significant deterioration in the performance of the -Do-mestic industry in respect of profits, return on investment and cash flow. Imports are undercutting the -Do-mestic prices and the margin of dumping and injury margin are quite significant.
137. With regard to the contention that the increase in the cost of production of the -Do-mestic industry is causing injury to the -Do-mestic industry, the Authority notes that the petitioners have contended that the increase in

the cost of production is due to global increase in input prices. The interested parties have not established that such increase in the costs were peculiar only to -Do-mestic producers and were not universal. If costs have universally increased, it is legitimate expectation of the -Do-mestic industry to increase its prices in line with cost increases.

138. Analysis of the performance of the -Do-mestic industry over the injury period shows that the performance of the -Do-mestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from subject countries. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the -Do-mestic industry is established on the following grounds.
- a. The volume of dumped imports from subject countries has significantly increased over the injury period. Resultantly, the market share of the dumped imports from the subject countries in the total imports of subject goods has increased.
 - b. Dumped imports from the subject countries are undercutting the prices of the -Do-mestic industry. As the -Do-mestic industry set its prices considering the import prices, its selling price has remained low in view of price undercutting by the imports.
 - c. The -Do-mestic industry has suffered price suppression. Since the -Do-mestic industry sets its prices in line with the import price, the price suppression suffered by the -Do-mestic industry is because of dumped imports present in the market.
 - d. The -Do-mestic industry suffered price suppression. Consequently, performance of the -Do-mestic industry deteriorated in terms of profitability, cash profits and ROCE as a result of dumped imports in the market.
139. With regard to the contention that prices in the market has been set by the countries under separate investigations through sunset review, the authority notes that comparison of month by month prices from Europe and sunset countries imports shows that import prices from European Union were also at dumped prices and were undercutting the prices of the -Do-mestic industry in the market. The dumping margin, injury margin have been found significant in the present case in respect of EU and Mexico as well.
140. It has been contended that injury to the -Do-mestic industry is self-inflicted. The Authority, however, notes that the factors listed by the interested parties in this regard -Do-es not establish that the claimed injury to the -Do-mestic industry is self-inflicted. It is noted in this regard that there is material deterioration in the performance of the -Do-mestic industry in respect of profits, return on investment and cash flow. Imports are undercutting the -Do-mestic prices and the margin of dumping as well as injury margin are quite significant.
141. With regard to the contention that the increase in the cost of production of the -Do-mestic industry is causing injury to the -Do-mestic industry, the authority notes that the petitioners have contended that the increase in the cost of production is due to global increase in input prices. The interested parties have not established that such increase in the costs were peculiar only to -Do-mestic producers and were not universal.
142. As regards limited availability of Vinyl Feedstock, the authority notes that the same -Do-es not break causal link between dumped imports and injury to the -Do-mestic industry. Such limited availability of Vinyl Feedstock was not restricted to Indian producers alone.
143. The Authority has determined non-injurious price for the -Do-mestic industry taking into consideration the cost of production of the -Do-mestic industry in terms of the principles outlined in Annexure III to the Antidumping rules. This non-injurious price of the -Do-mestic industry has been compared with the landed values of the subject imports to determine injury margin. In line with the determination of dumping margins, the injury margin has also been determined for the related companies together taking them as one entity. Further, separate NIP has been determined for each of the months of the POI. With regard to the submissions made by the -Do-mestic industry regarding determination of injury margin, landed price and NIP, the Authority notes that the landed value has been determined as per its consistent practice i.e. the landed price has been determined as the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975. Therefore, the request of the -Do-mestic industry in this regard is not agreed to.
144. The -Do-mestic industry has stated that while the exporters extend credit for periods ranging from 2 to 6 months, the -Do-mestic industry is selling the goods mostly on cash and carry basis and therefore, in order to have fair comparison, the NIP should include the cost of credit on a notional basis for the difference in the credit period extended to the customers by the exporters and the -Do-mestic industry. In this connection, the Authority notes that NIP has been determined in terms of the principles outlined in Annexure III to the AD Rules which mandates the Authority to provide reasonable return on Capital employed. The working capital which is one of the components of capital employed has been determined on the basis of the audited accounts of the -Do-mestic producers. The -Do-mestic industry has further stated that working capital should be determined without considering the suppliers credit availed by them for purchase of raw materials since the same is nothing but a loan. In this connection, the Authority holds that the suppliers credit availed by the -

Do-mestic producers has been shown as 'current liabilities' in their audited accounts and accordingly the same has been considered as current liabilities for determination of working capital and capital employed. Further, the interest cost if any charged by the supplier of raw materials and the exchange loss if any have been considered as part of raw-material cost as claimed by the -Do-mestic industry. The Authority, therefore, has not accepted the request of -Do-mestic industry to rework the injury margin.

145. With regard to arguments made by interested parties about determination of landed price taking into account credit costs incurred by the exporters, it is stated that as per consistent practice followed by the Authority, the landed price has been determined as the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

146. The injury margins have been worked out as follows:

Table showing Injury Margin

Determination of Injury Margin (IM) for Ineos group of companies (EU) and Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V (Mexico) and residual producers and exporters from EU and Mexico.							
Country/ Territory	Producer	Exporter	IM US\$/MT	IM (%)	Group IM US\$/MT	Group IM (%)	Injury Margin range (%)
EU	M/s. INEOS Vinyls Desutschland GmbH, Germany	M/s. INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany	***	***	***	***	0-10
	M/s. INEOS Sverige AB, Sweden	M/s. INEOS Sverige AB, Sweden	***	***			
	M/s. INEOS Chlor Vinyls Limited, Belgium	M/s. INEOS Chlor Vinyls Limited, Belgium	***	***			
	*INEOS Newton Aycliffe Ltd, UK	*INEOS Newton Aycliffe Ltd, UK	***	***			
	Others	Others	***	***	Not Applicable	Not Applicable	15-25
Mexico	Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V.	Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V.	***	***	Not Applicable	Not Applicable	5-15
	Others	Others	***	***	Not Applicable	Not Applicable	10-20

*Prior to 01.05.2013 the operations of M/s. INEOS ChlorVinyls Ltd. were carried out by M/s. INEOS Newton Aycliffe Limited which transferred its business to M/s. INEOS ChlorVinyls Ltd (U.K.) with effect from 01.05.2013.

147. The level of injury margins as determined is considered significant.

E. Conclusion on Injury and causation

148. The Authority notes that the -Do-mestic industry has suffered material injury as a result of dumping from the subject countries. There has been an increase in the volume of dumped imports from subject countries throughout the injury period in absolute terms and in relation to consumption in India. The dumped imports were undercutting the prices of the -Do-mestic industry in the market. It is also determined that the dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price suppression. Further, the dumping margins for the subject countries have been determined and are considered significant.
149. It is noted that dumped imports of subject goods from subject countries have adversely impacted profitability, cash profits and return on investments. Therefore, the Authority concludes that the -Do-mestic industry has suffered material injury as a result of dumped imports from the subject countries.
150. The Authority, therefore, holds that material injury to the -Do-mestic industry has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject countries.

F. Indian Industry's Interest & Other Issues

151. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the -Do-mestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way; and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
152. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the -Do-mestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the -Do-mestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

G. Conclusions and Recommendations

153. After examining the submissions made and issues raised, and considering the facts available on record, the Authority concludes that:
- The product under consideration has been exported to India from the subject countries below its associated normal values.
 - The -Do-mestic industry has suffered material injury on account of subject imports from subject countries.
 - The material injury has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject countries.
154. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all interested parties. Adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Anti-dumping Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the -Do-mestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti dumping duty is necessary to offset dumping and injury. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the -Do-mestic industry. For the purpose of determining injury margin, the landed value of imports of product under consideration has been compared with the non-injurious price of the -Do-mestic like product produced by -Do-mestic industry determined for the period of investigation.
155. Accordingly, anti-dumping duty equal to amount indicated in the column 8 of the table below, is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central government on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries.

Duty Table

S. No.	Sub-heading or Tariff Item	Description of goods	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Amount	Currency	Unit
--------	----------------------------	----------------------	-------------------	-------------------	----------	----------	--------	----------	------

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	3904	Homo-polymer of vinyl chloride monomer (suspension grade)**	European Union	European Union	M/s. INEOS Vinyls Desutsch land GmbH, Germany	M/s. INEOS Vinyls Sales GmbH, Germany	39.65	US\$	MT
2.	3904	--Do--	European Union	European Union	M/s. INEOS Sverige AB, Sweden	M/s. INEOS Sverige AB, Sweden	39.65	US\$	MT
3.	3904	-Do-	European Union	European Union	M/s INEOS Chlor Vinyls Belgium NV	M/s INEOS Chlor Vinyls Belgium NV	39.65	US\$	MT
4.	3904	-Do-	European Union	European Union	* M/s INEOS Chlor Vinyls Ltd, UK	* M/s INEOS Chlor Vinyls Ltd, UK	39.65	US\$	MT
5.	3904	-Do-	European Union	European Union	Any other combination except S.N. 1 to 4	Any other combination except S.N. 1 to 4	189.99	US\$	MT
6.	3904	-Do-	European Union	Any country other than European Union	Any	Any	189.99	US\$	MT
7.	3904	-Do-	Any country other than Mexico and European Union	European Union	Any	Any	189.99	US\$	MT
8.	3904	-Do-	Mexico	Mexico	Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V.	Mexichem Resinas Vinílicas, S.A. de C.V.	88.10	US\$	MT

9.	3904	-Do-	Mexico	Mexico	Any other combination except SN 8	Any other combination except SN 8	163.05	US\$	MT
10.	3904	-Do-	Mexico	Any country other than Mexico	Any	Any	163.05	US\$	MT
11.	3904	-Do-	Any country other than Mexico and European Union	Mexico	Any	Any	163.05	US\$	MT

**Prior to 01.05.2013 the operations of M/s. INEOS ChlorVinyls Ltd. were carried out by M/s INEOS Newton Aycliffe Limited which transferred its business to M/s INEOS ChlorVinyls Ltd (U.K.) with effect from 01.05.2013.*

*** The product under consideration is homopolymer of vinyl chloride monomer (suspension grade) where various polymer chains are not linked to each other. It, however, excludes the specialty PVC suspension resins such as cross-linked PVC, chlorinated PVC (CPVC), vinyl chloride – vinyl acetate copolymer (VC-VAc), PVC paste resin and PVC blending resin.*

156. An appeal against the order of the Central Government arising out of this finding shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the Act.

J. S. DEEPAK, Designated Authority